हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय की पी-एच०डी० उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

१९८४
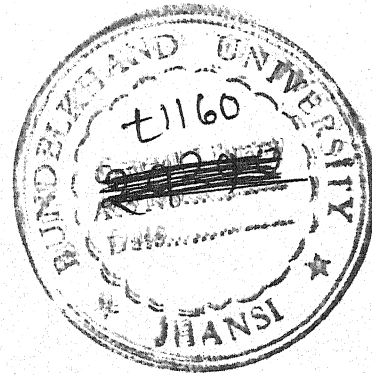
निर्देशिका :-

डा० (श्रीमती) यामिनी

एम०ए०; पी-एच०डी

हिन्दी विभाग-दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
उरई (जालौन)

प्रस्तुतकर्ता :-

फूलसिंह

एम०ए० (हिन्दी, समाज०)

अग्रसारित
=========

यामिनी

डा० ॥श्रीमती॥ यामिनी

हिन्दी विभाग-दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
उरई ॥जालौन॥

प्रमाण - पत्र
============

प्रमाणित किया जाता है, कि श्री फूलसिंह शोध छात्र ने "हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों का भाषा शास्त्रीय अध्ययन" विषय पर मेरे पूर्ण निर्देशन में रहकर कार्य किया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध श्री-सिंह के शोध प्रयास का प्रतिफल है, जिसमें पूर्णतया मौलिकता है ।

यामिनी

डा० ﴾श्रीमती﴿ यामिनी

हिन्दी विभाग-दयानन्द वैदिक स्नात० महाविद्यालय,
उरई ﴾जालौन﴿

o स्थान-नामों का अध्ययन भाषा शास्त्र का अभिन्न अंग है । स्थान-नामों की उत्पत्ति में अनेक राजनीतिक, सामाजिक और वैयक्तिक कारण होते हैं ।

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल
{ पाणिनि कालीन भारतवर्ष, पृष्ठ -37 }

o नाम वह सांकेतिक एवं सार्थक समूह है, जिसमें किसी सत्य की सत्ता का बोध होता है ।

लक्ष्मीनारायण शर्मा
{आगरा नगर के मुहल्ला-नामों का भाषा वैज्ञानिक - अध्ययन , पृष्ठ - 1 }

o नामों के अध्ययन में एक तरफ तो भाषा विज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्र, संस्कृति, भूगोल आदि की जानकारी अपेक्षित होती है और दूसरी ओर शब्दों का अध्ययन भाषा, इतिहास, समाजशास्त्र, संस्कृति तथा प्राचीन भूगोल आदि के अध्ययन के लिए बड़ी उपयोगी सामग्री प्रस्तुत करता है ।

डा० भोला नाथ तिवारी
{ शब्दों का अध्ययन, पृष्ठ-101 }

o नाम, नामों के सम्पर्क से सजीव हो उठता है और उसमें चेतना प्रविष्ट हो जाती है ।

डा० विद्याभूषण विभू
{ अभिधान अनुशीलन, पृष्ठ-12 }

o किसी नये भू-प्रदेश को अपनाकर जातीय जीवन के साथ उसका तार पिरो देना एक बड़ी कला है ।

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल
{पृथ्वी पुत्र , पृष्ठ-36 }

:-: प्रबन्ध परिचय :-:

=x=x=x=x=x=

पाश्चात्य देशों में स्थान-नामों पर अनेक उल्लेखनीय कार्य हुये हैं । हमारे देश में कोई भी प्राचीन ग्रन्थ स्थान-नामों पर समग्र अध्ययन प्रस्तुत करने वाला उपलब्ध नहीं हैं । यत्र-तत्र जो सामग्री मिलती है, वह महत्वपूर्ण होते हुये भी बिखरी हुई है । इस दिशा में वैज्ञानिक रीति से कार्य बीसवीं शताब्दी के मध्यकाल से ही प्रारम्भ माना - जायेगा । हिन्दी में डा० सुनीतिकुमार चटर्जी, डा० धीरेन्द्र वर्मा, डा० कृष्ण पाद गोस्वामी,डा० बानीकान्त, महापंडित राहुल सांकृत्यायन एंव डा० सरयूप्रसाद अग्रवाल आदि विद्वानों ने इस दिशा में मार्ग प्रशस्त किया है ।

व्यक्ति-नामों एंव स्थान-नामों को संस्कृति के बीज कहा जाय, तो अत्युक्ति न होगी । इन नामों के अध्ययन / विश्लेषण से इनमें अन्तर्निहित सांस्कृतिक तथ्यों को प्रकाश में लाया जा सकता है । नामों के अध्ययन से क्षेत्रीय भाषा के विकास एंव उसके भाषा वैज्ञानिक अध्ययन के लिये उपयोगी पृष्ठ भूमि तैयार होती हैं । स्थान-नामों से भाषा का अभिन्न सम्बन्ध है । इतिहास एंव संस्कृति की भी बहुमूल्य धरोहर स्थान-नामों में सुरक्षित मिल जाती हैं । उसके राजनीतिक, सामाजिक और वैयक्तिक तथ्य भी इनके अध्ययन से अभिव्यक्ति होते हैं । यह अध्ययन हमारी जिज्ञासा की तृप्ति के साथ ही लोक विश्वास, विभिन्न जातियों के संगम तथा मनोविज्ञान आदि पर भी प्रकाश डालता है । इस प्रकार यह अध्ययन भाषा, इतिहास, समाजशास्त्र, संस्कृति, लोकवार्ता तथा भौगोलिक एंव राजनैतिक तत्वों के अध्ययन के लिये उपयोगी सामग्री प्रस्तुत करता है ।

हमारा देश जनपदों का देश है । ये जनपद प्रकृति की गोद में पले हैं। पृथ्वी पर जन का आगमन सर्व प्रथम जनपदों में ही हुआ । जनपदों से ही नगर विकसित हुये । सभ्यता और संस्कृति की जो अभिन्न परम्परा हमारे राष्ट्रीय जीवन को स्थायित्व प्रदान

करती है, उसके रक्षक ये जनपद ही हैं, किन्तु दुर्भाग्यवश पराधीनता के युग में हमारे जनपदों का विकास होना तो दूर रहा, प्रत्युत उनकी उपेक्षा ही होती रही। राजनीतिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के साथ अपने देश, समाज और भाषा के प्रति ध्यान आकृष्ट हुआ है और अब महत्त्वपूर्ण शोधकार्य विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे हैं । इस श्रृंखला में स्थान-नामों के अध्ययन का भी बड़ा महत्त्व है । सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक और भाषा वैज्ञानिक आदि सभी दृष्टियों से यह महत्त्वपूर्ण एंव शोध सापेक्ष है ।

कार्य की महत्ता को देखते हुये "मुरादाबाद जिले के स्थान-नाम: एक भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन" डा० (श्रीमती) उषा चौधरी तथा "स्थान-नामों का व्युत्पत्तिगत, ऐतिहासिक एंव सांस्कृतिक अनुशीलन" डा०(श्रीमती) यामिनी द्वारा सम्पन्न किया गया है । इन्हीं उत्कृष्ट कार्यों को देखकर ही मुझे "हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन" विषय पर कार्य करने की प्रेरणा मिली और कार्य सम्पन्न किया हमीरपुर जनपद का स्यावरी गांव मेरी जन्म-भूमि है और बुंदेली लोक भाषा तथा जनपदीय संस्कृति से मुझे बचपन से ही अत्यधिक लगाव रहा है । स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के उपरान्त मैं यही चाहता था, कि मेरे शोध प्रयास से स्थान-नामों के रूप में छिपी हुई महत्वपूर्ण, सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एंव भाषाई निधि प्रकाश में आ सकें और मैं पितृऋण एंव ऋषि-ऋण का एक अंग चुकाने में समर्थ हो सकूं । मुझे बुन्देलखण्ड मण्डल के इस भू-भाग की गरिमा के प्रति निष्ठा तथा अपने अध्यवसाय के प्रति पूर्ण विश्वास है । मेरे इस शोधकार्य द्वारा बुन्देलखण्ड की जनपदीय संस्कृति, बुन्देली लोक भाषा की क्षेत्रीय विशेषताओं, भाषा के सीमा निर्धारण, भौगोलिक वितरण तथा भाषा विकास की दिशाओं और भाषा कालक्रम विज्ञान के लिये उपयोगी योगदान होगा

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध सात अध्यायों में पूर्ण किया गया है, जिसमें हमीरपुर जनपद के 1,079 स्थान-नामों का भाषा-वैज्ञानिक आधार पर अध्ययन किया गया है। भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक एंव ऐतिहासिक आदि विविध क्षेत्र स्थान-नामों को प्रभावित करते हैं। अतः क्षेत्र विशेष के स्थान-नामों का अध्ययन करने के लिये

उपरोक्त विषयों का ज्ञान आवश्यक हो जाता है । इस दृष्टि से प्रबन्धके प्रथम अध्याय में "हमीरपुर जनपद का सामान्य परिचय" दिया गया हैं । इसके अन्तर्गत सर्वप्रथम जनपद का मानचित्र अंकित है, जिसमें जनपद के तहसील एंव विकास खण्ड मुख्यालय दिखाये गये हैं । इसके अतिरिक्त इसमें जनपद के इतिहास, क्षेत्रफल तथा सीमा, भौगोलिक स्थिति, कृषि तथा उद्योग, जातियाँ तथा व्यवसाय एंव प्रमुख भाषा एंव बोलियाँ का संक्षिप्त परिचय दिया गया है ।

दूसरे अध्याय में "स्थान-नामों का वर्गीकरण" है । इसमें स्थान-नामों के विभिन्नआधारों का विवेचन है, जिसके अन्तर्गत स्थान-नामों को वर्गीकृत किया गया है । स्थान-नामों के वर्गीकरण के लिये इसमें बीस प्रमुख आधारों का अतिसूक्ष्म एंव रोचक - विवरण दिया गया है, जिनके द्वारा जनपद के सम्पूर्ण स्थान-नामों का वर्गीकरण हुआ है।

तीसरे अध्याय में, "स्थान-नामों के नामकरण की प्रक्रिया व प्रकृति" का उल्लेख किया गया है । इसके एक भाग में स्थान-नामों के नामरण की सामान्य प्रकृति एंव दूसरे भाग में व्युत्पत्तिगत प्रकृति का विवरण दिया गया है । इसमें स्थान-नामों का अध्ययन निष्कर्षत: जिन प्रवृत्तियों को बद्धमूल कर सका, प्राय: उन सबका संक्षिप्त विवरण अंकित है ।

शोध-प्रबन्ध के चतुर्थ एंव महत्त्वपूर्ण अध्याय में "स्थान-नामों के पद, पदांश व ध्वनिपरख तथा आर्थिक स्वरूप" का अध्ययन है । इसके अन्तर्गत स्थान-नामों में प्रयुक्त प्रत्यय एंव उपसर्गों का व्युत्पत्ति एंव विकासपरक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में 32 प्रत्यय प्रयुक्त हुए हैं, जिनके अध्ययन की यह दशा रही है कि स्थान-नामों में प्रयुक्त प्रत्ययों या उपसर्गों का मूल प्राय: निवास वाचक पद या - पदांश में खोजा गया है । साथ ही इसमें स्थान-नामों में प्रयुक्त परिपद एंव पूर्व पदों का भी उल्लेख है । स्थान-नामों में प्रत्यय, उपसर्ग, परपद एंव पूर्वपदों का अत्यधिक महत्त्व है, जिनकी पाणिनिकाल से ही प्रतिष्ठा होती चली आई है । इसी अध्याय में

स्थान-नामों में प्रयुक्त स्वर, व्यंजन, अनुनासिक एवं संयुक्त ध्वनियोंतथा ध्वनि-संयोग आदि का विवरण प्रस्तुत किया गया है और स्थान-नामों के आक्षरिक स्वरूप पर भी प्रकाश डाला गया है । नामों के आक्षरिक स्वरूप का निर्धारण कर निष्कर्षत: उनकी संख्या दी गई है । सम्पूर्ण जनपद में एक अक्षरीय 7, द्विअक्षरीय 251, तीन अक्षरीय - 447, चार अक्षरीय 175, पाँच अक्षरीय 124, छह अक्षरीय 45, सात अक्षरीय 17 एवं आठ अक्षरीय 13 स्थान-नाम हैं । इससे स्पष्ट है, कि जनपद के स्थान-नामों में द्वि-अक्षरीय, तीन अक्षरीय, चार अक्षरीय एवं पाँच अक्षरीय स्थान-नामों का ही बाहुल्य है, अन्य अपेक्षाकृत अल्प मात्रा में हैं ।

पाँचवा अध्याय "स्थान-नाम व स्थानीय भाषा" से सम्बन्धित है । स्थान-नाम स्थानीय भाषा बुन्देली से प्रभावित है । स्थान-नामों में प्राप्त बुन्देली भाषा की विविध प्रवृत्तियों का विश्लेषण इस प्रकरण का अभीष्ट है । स्थान-नामों में विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग है, जिनका विवेचन इस अध्याय में किया गया है।

छठवें अध्याय में "हमीरपुर जनपद की विभिन्न तहसीलों में भाषागत वितरण"का उल्लेख किया गया है। सम्पूर्ण जनपद में कुल छह तहसीलें-राठ, कुलपहाड़, चरखारी, महोबा, मौदहा एवं हमीरपुर हैं। हमीरपुर जनपद बुन्देलखण्ड का एक अति-प्राचीन, ऐतिहासिक जनपद है । प्रमुख भू-भाग होने के कारण मुख्यतया यहाँ की बोली बुन्देली है । हमीरपुर जनपद की सभी तहसीलों की बोलियों में कुछ न कुछ अन्तर अवश्य है , जो "कोस-कोस पै पानी बदले, चार कोस पै बानी" की सार्थकता सिद्ध करती है । भाषागत अध्ययन के लिए प्रस्तुत अध्याय में मैनें प्रत्येक तहसील से एक गाँव चुना है, जहाँ जाकर कुल 15 मानक हिन्दी वाक्यों का अनुवाद वहाँ की मूल बोली में किया गया है । इस प्रकार यह अध्याय बहुत ही रोचक एवं मौलिकता पूर्ण है । इसके लिए डा० - रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल के शोध-ग्रन्थ "बुन्देली का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन" को आधार बनाया गया है ।

शोध-प्रबन्ध का सातवां एवं अन्तिम अध्याय " उपसंहार" है । पूरे शोध-प्रबन्ध का निष्कर्ष संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है । स्थान-नामों के अध्ययन की महत्ता,क्षेत्रीय बोली की विशेषताओं,भाषा विकास की प्रवृत्ति तथा स्थान-नामों के परिवर्तित होते हुए स्वरूपों का उल्लेख इसमें किया गया है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध श्रद्धास्पद डा०(श्रीमती)यामिनी,हिन्दी विभाग-दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय,उरई(जालौन) के कृपापूर्ण निर्देशन में पूर्ण किया गया है । एक गृहस्थ महिला होते हुए भी अध्यापन एवं गृहस्थी का गुरुतर भार वहन करते हुए उन्होंने जो अमूल्य समय मुझे दिया तथा इस अवधि में मुझे उनसे जो प्रेरणा,प्रोत्साहन,स्नेह एवं पांडित्य पूर्ण निर्देशन प्राप्त हुआ, इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ और आजीवन ऋणी रहूँगा । आदरणीय गुरुवर डा० हरगोविन्दसिंह, हिन्दी विभागाध्यक्ष-ब्रम्हानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय , राठ(हमीरपुर) से मैं उऋण नहीं हो सकता, जिन्होंने मेरे शोध कार्य के दौरान हर क्षण में अपना कुशल निर्देशन,अमूल्य समय,कार्यकरने हेतु प्रोत्साहन एवं क्षेत्रीय कार्य में पूर्ण सहयोग प्रदान किया । उनकी इस कृपा के लिए मैं सदैव आभारी रहूँगा ।

डा० शिवादत्त द्विवेदी,अध्यक्ष-शोध समिति,बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय,झांसी के कृपापूर्ण निर्देशन के लिए मैं उनका आभारी हूँ । डा० सियारामशरण शर्मा,हिन्दी-विभाग,बुन्देलखण्ड महाविद्यालय,झांसी को भी मैं कभी नहीं भूल सकता,जिन्होंने इस कार्य हेतु प्रोत्साहित एवं पथप्रशस्त किया । आदरणीय बाबा कन्हैयालाल कुशवाहा, मऊरानीपुर(झांसी)का मैं हृदय से आभारी हूँ जो मुझे इस कार्य हेतु सदैव प्रोत्साहित करते रहे एवं आर्थिक सहयोग देने हेतु हर समय तत्पर रहे । पारिवारिक जनों में विशेषकर पूज्य भाईसाहब श्री धनपतसिंह ,उपकृषि निर्देशक (भूमि संरक्षण),झांसी मण्डल,झांसी का मैं आजीवन ऋणी रहूँगा,जिन्होंने शोध कार्य के लिए हर सम्भव सहयोग प्रदान किया ।

अन्त में अपने विभागीय अधिकारी,कर्मचारी,तत्कालीन जिलाधिकारी, जनपद हमीरपुर, जिला विकास अधिकारी, समस्त खण्ड विकास अधिकारी जनपद - हमीरपुर , ग्राम सेवक,अध्यापक,विद्यार्थीगण एवं समस्त आत्मीय जनों के प्रति मैं अपनी

कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिन्होने मेरे इस शोध कार्य में अपना अमूल्य सहयोग दिया एवं क्षेत्रीय कार्य से सम्बन्धित प्रश्नावली पूर्ण कराने में सहायता की । इसके अतिरिक्त मुझे शोध अवधि में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से जिस किसी से भी जो न्यूनाधिक सहायता मिली, उनका मैं हृदय से आभारी हूँ ।

स्थान : राठ - लेखक

दिनांक : गाँधी जयन्ती, अक्टूबर 2, 1984

---------o---------

शोध-प्रबन्ध की रूप रेखा

अध्याय 1 : हमीरपुर जनपद का सामान्य परिचय

मानचित्र

1-1 इतिहास

1-2 क्षेत्रफल तथा सीमा

1-3 भौगोलिक दृष्टि से जनपद की सामान्य स्थिति

1-4 कृषि तथा उद्योग

1-5 जातियां तथा व्यवसाय

1-6 भाषा

अध्याय 2 : स्थान-नामों का वर्गीकरण

2-1 व्यक्तिपरक स्थान-नाम

2-2 देवी-देवताओं के आधार पर स्थान-नाम

2-3 ऋषियों एंव तपस्वियों के नाम पर आधारित स्थान-नाम

2-4 नवी, पैगम्बर एंव रसूल पर आधारित स्थान-नाम

2-5 पैराणिक व ऐतिहासिक पात्रों के नाम पर आधारित स्थान-नाम

2-6 प्रकृति परक स्थान-नाम

2-7 भूमि की विशिष्ट प्रकृतियों पर आधारित स्थान-नाम

2-8 भौगोलिक स्थिति पर आधारित स्थान-नाम

2-9 बनस्पतियों पर आधारित स्थान-नाम

2-10 जल के विशिष्ट साधनों पर आधारित स्थान-नाम

2-11 पशु-पक्षियों पर आधारित स्थान-नाम

2-12 विशिष्ट जाति या गोत्र पर आधारित स्थान-नाम

2-13 प्रवृत्ति पर आधारित स्थान-नाम

------ 0 ------

अध्याय १ : हमीरपुर जनपद का सामान्य परिचय

जनपद हमीरपुर
जालौन
जनपद
जनपद कानपुर
जनपद फतेहपुर
कुरारा
हमीरपुर
सुमेरपुर
सरीला
गोहाण्ड
राठ
मुस्करा
मौदहा
पनवाड़ी
चरखारी
कबरई
महोबा
जैतपुर
कुलपहाड़
मध्य
प्रदेश
जनपद
संकेत तालिका :-
तहसील मुख्यालय
विकासखण्ड मुख्यालय
जनपद सीमा
नदी

अध्याय 1 : हमीरपुर जनपद का सामान्य परिचय

1-1 इतिहास:- जनपद की क्रमिक एंव सुनिश्चित ऐतिहासिक सामग्री सहज उपलब्ध नहीं है, किन्तु प्रचलित रीति-रिवाजों एंव प्राचीन अभिलेखों आदि के आधार पर ही कुछ ऐतिहासिक तत्व प्राप्त होते हैं । प्राचीन काल में इस जिले में अधिकांश जंगल थे तथा यहां कोल, भील और गौंड निवास करते थे ।[1] ईसा की प्रथम तीन शताब्दियों में यहां गुप्त वंश का शासन रहा । यहां का प्रथम ऐतिहासिक उल्लेख चीनी यात्री ह्वेनसांग का है,जो यहां सातवीं शताब्दी में आया था । उसने यहां सन् 641 या 642 में यात्रा की थी । उस समय बुन्देलखण्ड का नाम जेजाक भुक्ति था । ह्वेनसांग ने अपनी यात्रा के दौरान लिखा है कि यहां की भूमि उपजाऊ है, फसल अच्छी होती है, मुख्य उपज गेहूं तथा दालें हैं,बुद्ध-धर्म के मानने वाले कम हैं । यहां का राजा एक ब्राम्हण है, जो कि बौद्ध धर्म पर विश्वास रखता है । यहां का ब्राम्हण शासक सम्भवत: हर्षवर्धन के अधीन थे, जिसकी राजधानी - थानेश्वर थी । चन्देलों के पूर्व महोबा गहरवार राजपूतों के अधिकार में बताया जाता है। ऐसा लगता है कि यह क्षेत्र हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद गहरवारों के हाथ लगा । गहरवारों ने यहां बड़े-बड़े तालाब बनवाये । बीजानगर, कण्डौराताल, जो थाना-पसवारा के पास है, कण्डौर सिंह के द्वारा बनवाया हुआ है, जो कि गहरवार राजाओं का एक अधिकारी था । इसके अतिरिक्त आठ-नौ तालाब इस जिले में गहरवारों के बनवाये हुए हैं । गहरवारों के बाद यहां पर परिहारों का राज्य रहा है,जिन्हें सम्वत् 677 में प्रथम चन्देल सरदार चन्द्रवर्मा ने परास्त किया । बिलहरी में लक्ष्मण सागर नामक ताल लक्ष्मणसेन - परिहार द्वारा बनवाया हुआ बताया जाता है ।पनवाड़ी का पुराना नाम परिहारपुर

1- डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृष्ठ - 123

था, जिसे सन्न 903 में परिहार राजपूतों ने बसाया था । इसी तरह जैतपुर के निकट ग्राम मुढारी सन 1080 में राजा उदयकरन परिहार द्वारा बसाया गया था ।

"इब्नबतूता" तथा "अलबेरूनी" जिसने अपना लेखन कार्य सन्न 1031 में पूरा किया था, के समय भी बुन्देलखण्ड जिझौती कहलाता था और इसकी राजधानी उस समय खजुराहो थी । इस समय तक चन्देल शासन-सत्ता सशक्त हो गई थी । चन्देलों का वंश चन्द्रब्रम्ह से प्रारम्भ हुआ, जिसने काशी को जीता तथा महोबा और कालिंजर नगर बसाये । महोबा में चन्द्रब्रम्ह के उत्तराधिकारियों ने 20 पीढ़ियों तक राज्य किया । अन्तिम शासक परमाल को पृथ्वीराज ने पराजित किया । सन 648 में हर्ष-वर्धन की मृत्यु के उपरान्त 9वीं शताब्दी में यहां के सर्वाधिक सशक्त, शासक के रूप में छा गये । महोबा के दक्षिण में तीन मील की दूरी पर रहेलिया ग्राम में एक तालाब है, जो राहिल नाम के एक चन्देल राजा द्वारा बनवाया हुआ है । राहिल का अभि-षेक काल सन्न 900 ई० के लगभग था । महमूद गजनवी ने भारत पर अनेक बार आक्रमण किये । उसने सन 1008 या 9 में जो आक्रमण भारत पर किया था, उसके विरोध में कालिंजर का राजा भी लड़ा था । उस समय कालिंजर का राजा "गैंडा" था, जो बाद में महमूद गजनवी द्वारा पराजित हुआ । महोबा में कीरत सागर, कीर्तिवर्मा चन्देल का बनवाया हुआ है तथा मदनसागर मदनवर्मा का बनवाया हुआ बताया जाता है । ऐसी जनश्रुति है कि चन्देलों के अधिकार में आठ किले थे - कालिंजर, अजयगढ़, मनियागढ़, मड़फा, बारीगढ़, मौदहा, गढ़ा और मैहर । कुछ लोग मैहर के बदले कालपी मानते हैं । मदनवर्मा का उत्तराधिकारी परमर्दि या परमाल हुआ । आल्हा-ऊदल इसी के सेनापति थे । परमाल की पराजय सन्न 1182 में हुई । इस पराजय के बाद चन्देल महोबा से -

कालिंजर चले गये और उसी को अपनी राजधानी बनाया । सन् 1202 ई0 में हथ-भाग्य परमाल पर शहाबुद्दीन गौरी के सेनापति कुतुबुद्दीन ऐवक ने आक्रमण किया । उसके आगे परमाल को समर्पण करना पड़ा । यह घटना सन् 1203 ई0 में हुई और इसी समय से उत्तर भारत के सर्वाधिक सशक्त चन्देल शासन की समाप्ति हुई ।चन्देल वंश में अन्तिम स्मृति वीरांगना के रूप में रानी दुर्गावती की है, जो "अकबर नामा" के लेखक अबुलफजल के अनुसार राठ के चन्देल राजा शालिवाहन् की बेटी थी ।दुर्गावती अकबर के सरदार आशफ खॉ से लड़ती हुई सन् 1564 में मारी गई ।

तेरहवीं शताब्दी से सोलहवीं शताब्दी तक इस जिले का इतिहास लगभग शून्य ही रहा । तेरहवीं और चौदहवीं शताब्दी में महोबा और गढ़ कुण्डार के बीच के क्षेत्र में खंगारों का राज्य रहा है । यह राज्य 1340 ई0 के लगभग सोहनपाल - बुन्देला द्वारा समाप्त किया गया । चौदहवीं शताब्दी के मध्यकाल में ही इस जिले में मौहार, बैस तथा गौर राजपूतों और लोधियों का प्रवेश हुआ । हमीरपुर और सुमेरपुर परगने में चन्देलों के कोई चिन्ह नहीं मिलते हैं, जो इस बात के सूचक हैं कि यह क्षेत्र सम्भवतः चन्देलकाल में जंगलों से आच्छादित रहा होगा ।

अकबर के शासन काल में यह जिला दो सूबों में बँटा हुआ था । उस समय आज के महोबा, मुस्करा, मौदहा, सुमेरपुर और चरखारी सम्भवतः तीन महालों में बँटे हुए थे - मौदहा, खण्डेला{खण्डेह} तथा महोबा । ये कालिंजर तथा इलाहाबाद सूबा के अन्तर्गत थे । जिले का शेष भाग राठ , खण्डौत, खरेला तथा हमीरपुर महालों में बँटा हुआ था । ये महाल कालपी सरकार तथा सूबा आगरा से सम्बन्धित थे । कालपी तथा कालिंजर सरकार के बीच की सीमा इस जिले में मोटे तौर पर वर्मा नदी थी । मुगलकाल में सबसे बड़ा महाल {सबडिवीजन} राठ था । इस महाल में कुलपहाड़

तहसील का भी बड़ा हिस्सा सम्मिलित था । इसका क्षेत्र 5,10,910 बीघा तथा माल-गुजारी 92,70,894 दाम थी । यह महाल शाही फौज के लिए 3000 पैदल,70 घोड़े तथा 9 हाथी देता था । उस समय यह अच्छी उपज और जनसंख्या का क्षेत्र रहा होगा।[1] राठ के बाद हमीरपुर महाल आता था । उन दिनों बाँदा एक साधारण गांव था ।

इसके पश्चात इस जिले में छत्रसाल का राज्य(शासन) हुआ । छत्रसाल बड़ा ही पराक्रमी और कुशल शासक तथा वीर पुरूष था । "छत्रसाल सों लरन की, रही न काहू हौंस" वाली पंक्तियों में वास्तव में उनकी वीरता का अद्वितीय प्रमाण मिलता है । 13 मई, 1781 को मौदहा के निकट दलेर खाँ और छत्रसाल का युद्ध हुआ, जिसमें छत्रसाल विजयी हुए और दलेर खाँ मारा गया । इसके बाद जैतपुर के आस-पास मुहम्मद खाँ बंगश से भयंकर युद्ध हुआ जिसमें हताश होकर छत्रसाल ने बाजीराव पेशवा को सहायता के लिये लिखा था। पेशवा की सहायता से छत्रसाल की विजय हुई ।[2] इस सहायता के उपलक्ष्य में छत्रसाल ने बाजीराव पेशवा को अपने राज्य का एक तिहाई दिया था । पेशवा को दिये गये क्षेत्र में कालपी, हाटा, सागर, झांसी, सीरौंज, गुना, गढ़ाकोटा, हरदीनगर तथा महोबा सम्मिलित थे । इनकी वार्षिक आय लगभग 31 लाख रूपये थी । शेष राज्य दो भागों में बाँटकर छत्रसाल के पुत्र हृदयशाह तथा जगतराज को दिया गया । हमीरपुर जिले का अधि-कांश भाग जगतराज के अधिकार में रहा और यह सम्पूर्ण भाग जैतपुर राज्य कहलाता था । जैतपुर राज्य में बाँदा, अजयगढ़ तथा चरखारी के हिस्से भी सम्मिलित थे । जगतराज की मृत्यु 27 वर्ष राज्य करने के उपरान्त सन् 1758 में हुई । जगतराज के बाद उनके वंश में संघर्ष प्रारम्भ हुआ जगतराज के सबसे बड़े पुत्र का नाम कीरतसिंह था । कीरतसिंह के दो पुत्र थे - खुमानसिंह तथा गुमानसिंह । जगतराज के दूसरे पुत्र का नाम पहाड़सिंह था ।

1- डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृष्ठ - 139

2- डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृष्ठ - 145

तहसील का भी बड़ा हिस्सा सम्मिलित था । इसका क्षेत्र 5,10,910 बीघा तथा माल-गुजारी 92,70,894 दाम थी । यह महाल शाही फौज के लिए 3000 पैदल,70 घोड़े तथा 9 हाथी देता था । उस समय यह अच्छी उपज और जनसंख्या का क्षेत्र रहा होगा।[1] राठ के बाद हमीरपुर महाल आता था । उन दिनों बाँदा एक साधारण गांव था ।

इसके पश्चात इस जिले में छत्रसाल का राज्य(शासन) हुआ । छत्रसाल बड़ा ही पराक्रमी और कुशल शासक तथा वीर पुरुष था । "छत्रसाल सों लरन की,रही न काहू हौंस" वाली पंक्तियों में वास्तव में उनकी वीरता का अद्वितीय प्रमाण मिलता है । 13 मई, 1781 को मौदहा के निकट दलेर खाँ और छत्रसाल का युद्ध हुआ, जिसमें छत्रसाल विजयी हुए और दलेर खाँ मारा गया । इसके बाद जैतपुर के आस-पास मुहम्मद खाँ बंगश से भयंकर युद्ध हुआ जिसमें हताश होकर छत्रसाल ने बाजीराव पेशवा को सहायता के लिये लिखा था। पेशवा की सहायता से छत्रसाल की विजय हुई ।[2] इस सहायता के उपलक्ष्य में छत्रसाल ने बाजीराव पेशवा को अपने राज्य का एक तिहाई दिया था । पेशवा को दिये गये क्षेत्र में कालपी, हाटा, सागर, झांसी, सीरौंज, गुना, गढ़ाकोटा,हरदीनगर तथा महोबा सम्मिलित थे । इनकी वार्षिक आय लगभग 31 लाख रूपये थी । शेष राज्य दो भागों में बाँटकर छत्रसाल के पुत्र हृदयशाह तथा जगतराज को दिया गया । हमीरपुर जिले का अधि-कांश भाग जगतराज के अधिकार में रहा और यह सम्पूर्ण भाग जैतपुर राज्य कहलाता था । जैतपुर राज्य में बाँदा,अजयगढ़ तथा चरखारी के हिस्से भी सम्मिलित थे । जगतराज की मृत्यु 27 वर्ष राज्य करने के उपरान्त सन् 1758 में हुई ।जगतराज के बाद उनके वंश में संघर्ष प्रारम्भ हुआ जगतराज के सबसे बड़े पुत्र का नाम कीरतसिंह था । कीरतसिंह के दो पुत्र थे - खुमानसिंह तथा गुमानसिंह । जगतराज के दूसरे पुत्र का नाम पहाड़सिंह था ।

1- डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृष्ठ - 139

2- डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृष्ठ - 145

राज्य के लिये पहाड़सिंह तथा उनके भतीजों में युद्ध हुआ । कीरतसिंह जगतराज के सामने ही मर चुके थे । अन्त में समझौता होने पर गुमानसिंह को बाँदा का राज्य दिया गया और खुमानसिंह को चरखारी का । पहाड़सिंह की मृत्यु के बाद उनका पुत्र गजसिंह जैतपुर का राजा बना । पहाड़सिंह के दूसरे पुत्र मानसिंह को सरीला की जागीर मिली । इस प्रकार परगना महोबा को छोड़कर पूरा हमीरपुर जिला बुन्देलों के अधिकार में रहा । बुन्देलों के जमाने में पूरा राज्य छोटे-छोटे परगनों में बँटा हुआ था । इस जिले में ये परगने पनवाड़ी, जैतपुर, जलालपुर, खरका, मुस्करा, मटौंध तथा सुमेरपुर थे । प्रत्येक परगने के मुख्यावास पर किले थे ।

31 दिसम्बर, 1802 को बसीन की सन्धि हुई, जिसमें पेशवा अपने राज्य की व्यवस्था के लिए अँग्रेजी फौज रखने को तैयार हो गया । इस जिले में हिम्मत बहादुर - {अनूपगिर गुसाँई}को अँग्रेजों का साथ देने के उपलक्ष्य में एक जागीर मिली, जिसमें पनवाड़ी, राठ, मौदहा और सुमेरपुर के परगने सम्मिलित थे । सन 1842 में जब अँग्रेजों का अफगानों से युद्ध हुआ था, जैतपुर में राजा पारीक्षत ने अँग्रेजों से विद्रोह किया , किन्तु चरखारी नरेश रत्नसिंह के विश्वास घात के कारण वे पराजित हुए और अँग्रेजों ने उन्हें जोरन के जंगल में गिरफ्तार कर लिया । इसके बाद उन्हें कानपुर ले जाकर हातासवाईसिंह पर रक्खा गया । जैतपुर राज्य वहाँ के दीवान खेतसिंह को दिया गया ।पारीक्षत की मृत्यु कानपुर में ही हुई । उनकी विधवा रानी को अँग्रेजी शासन की ओर से 1200 रूपये - मासिक पेंशन मिलती थी । सन 1857 में रानी ने भी विद्रोह किया । रानी के साथ जैतपुर के पड़ोस के कुछ जमींदार तथा देशपत नाम का एक साहसी व्यक्ति था । अँग्रेजों ने उन्हें दबाने के लिए चरखारी की सेना भेजी । आठ दिन के छुट-पुट युद्ध के बाद रानी को पराजित होना पड़ा और उन्होनें टिहरी में जाकर शरण ली ।

"सब्दल दउवा" नाम के एक सरदार ने सन् 1857 में क्रान्तिकारियों का साथ दिया था, जो कि चरखारी का था । इसे चरखारी नरेश ने अंग्रेजों के प्रति अपनी स्वामिभक्ति दिखाने के लिए प्राणदण्ड दे दिया था । हमीरपुर और रमेड़ी में भी कुछ जमीदारों तथा देशी सिपाहियों ने अंग्रेजों का विरोध किया और उनको मार डाला था । सन् 1858 में जनवरी के अन्त में तात्या टोपे ने 900 सैनिक, 200 घुड़सवार तथा 4 तोपें लेकर चरखारी पर आक्रमण किया, जहाँ उसकी सहायता देशपत दौलतसिंह तथा बानपुर और शाहगढ़ के राजाओं ने की थी । ठीक 11 दिन के घोर युद्ध के बाद चरखारी पर तात्या टोपे का अधिकार हो गया, जहाँ उसे चौबीस तोपें और तीन लाख रुपये मिले थे ।

1-2 : क्षेत्रफल तथा सीमा :- हमीरपुर जनपद झांसी मण्डल के मध्य में 25° और 26° अक्षांश तथा 79•5′ और 80•5′ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। जनपद का कुल क्षेत्रफल 7192 किलो मीटर है, जिसमें कुल छह तहसीलें -राठ, कुलपहाड़, चरखारी, महोबा, मौदहा तथा हमीरपुर हैं ।

जनपद के पूर्व में जिला बाँदा, पश्चिम में जिला झांसी, उत्तर में जिला कानपुर, जालौन और फतेहपुर तथा दक्षिण में मध्य प्रदेश है । जन संख्या की दृष्टि से सन् 1971 की जनगणना के अनुसार जनपद का प्रदेश में 43वाँ स्थान है । सम्पूर्ण जनपद में वनों का क्षेत्रफल 37,290 हेक्टर है, जिसमें अधिकतर ईंधन वाली लकड़ी जैसे - बबूल, खैर आदि पायी जाती हैं ।[1]

1-3 : भौगोलिक दृष्टि से जनपद की सामान्य स्थिति:- पश्चिम में धसान नदी तथा उत्तरी पूर्वी सीमा पर बेतवा और यमुना नदियों से आवृत हमीरपुर जनपद की स्थिति अत्यन्त सौन्दर्य पूर्ण है । यहाँ की भूमि उपजाऊ है । भौगोलिक दृष्टि से जनपद की जलवायु अत्यधिक गर्म है । सर्दियों में अधिक ठन्डक रहती है ।

1- मानचित्र (हमीरपुर जनपद का संक्षिप्त विवरण)

वर्षा का सामान्य औसत 79.5 सेमी0 है ।[1] जनपद में मुख्यतया तीन ऋतुयें पायी जाती हैं-गर्मी, वर्षा और शीत ऋतु । इनके अतिरिक्त जनपद में एक तीसरी अन्य ऋतु भी होती है, जिसे बसन्त के नाम से जाना जाता है । यह ऋतु फरवरी के अन्त से अप्रैल {माघ से चैत} तक रहती है । इस ऋतु में मौसम दिन में अच्छा और रात प्रायः अधिक ठण्डी रहती है । यह समय शीत के अन्त और गर्मी के प्रारम्भ का अन्तराल है ।

हमीरपुर जनपद में से निम्नलिखित प्रमुख एंव सहायक नदियां बहती हैं :-

बेतवा नदी- जालौन जनपद से पश्चिम सीमा को अलग करती हुई विकास खण्ड कुरारा की पूर्वी ,सुमेरपुर की पश्चिमी एंव सरीला की उत्तरी सीमा बनाती हुई हमीरपुर में यमुना नदी में गिरती है ।

यमुना नदी:- जनपद कानपुर व फतेहपुर से , उत्तरी सीमा पर विकास खण्ड कुरारा तथा सुमेरपुर को मिलाती है ।

केन नदी :-विकास खण्ड मौदहा की पूर्वी सीमा बनाती हुई जनपद बाँदा से अलग करती है ।

धसान नदी :- जनपद झांसी की पश्चिमी सीमा को अलग करती हुई विकास खण्ड पनवाड़ी , राठ और गोहाण्ड को अलग करती है ।

उर्मिल नदी:- मध्य प्रदेश से आकर जनपद के दक्षिण भाग में विकास खण्ड कबरई की दक्षिणी सीमा पर मिलती है ।

वर्मा नदी :- यह जनपद की सहायक नदी है, जो जनपद में विकास खण्ड पनवाड़ी से होकर सरीला की पूर्वी व मुस्करा की पश्चिमी सीमा बनाती हुई कुपरा के पास बेतवा नदी में गिरती है ।

चन्द्रावल नदी :-बम्हरौली,नराइच {विकास खण्ड मौदहा} गांवों से होती हुई सुमेरपुर विकास खण्ड के पूर्वी भाग से बहती हुई जनपद बाँदा में पैलानी के पास केन नदी में गिरती है ।

1-मानचित्र {हमीरपुर जनपद का संक्षिप्त विवरण}

पड़वाहर नदी :- विकास खण्ड गोहाण्ड के जराखर गांव के पास से निकलकर ग्राम चुरहा और इटैलिया होकर बहती हुई सरीला विकास खण्ड में प्रवेश करती है और आगे जाकर इसी विकास खण्ड की उत्तरी सीमा पर ग्राम रिरूवा बुजुर्ग के पास बेतवा नदी में मिलती है ।

क्योलारी नदी :- यह भी जनपद की एक छोटी सहायक नदी है , जो विकास खण्ड पनवाड़ी में तेइयां बॉध से निकल कर उल्दन, सिमरिया और जखा ग्रामों से होती हुई नकरा ग्राम के पास वर्मा नदी में गिरती है ।

तालाब व झीलें :- बेलाताल , मदनसागर, कीरतसागर, विजयसागर (बीजानगर), कबरई-जलाशय, अर्जुनसागर व मझगवां झील जनपद के मुख्य तालाब व झीलें हैं, जिनसे जनपद के कुछ भाग में सिंचाई होती है । इनमें से केवल अर्जुनसागर आधुनिक जलाशय है, शेष सभी चन्देल कालीन हैं ।

1-4 : कृषि तथा उद्योग:- हमीरपुर जनपद में मुख्य रूप से 4 प्रकार की मिट्टी-मार, काबर, पड़ुवा तथा राँकर पाई जाती है, जिनका प्रतिशत क्रमशः 21, 19, 35 और 25 है। जनपद में कृषि के अन्तर्गत प्रमुख रूप से दो फसलें ली जाती है-रबी तथा खरीफ । रबी के अन्तर्गत गेहूँ, चना, जौ, मटर, मसूर, राई, सरसों एवं अलसी पैदा की जाती है तथा खरीफ में ज्वार, बाजरा, धान, मूँग, अरहर, कोदों तथा तिल उगाई जाती हैं । जनपद में कृषि मूलतः वर्षा पर निर्भर है, अतः नहरों एवं अन्य लघु सिंचाई साधनों से सिंचाई की जाती है ।[1] रबी में यहां की प्रमुख फसल पहले चना रही हैं,क्योंकि सिंचाई केसाधनों का अभाव था । इसे गेहूँ और जौ के साथ मिलाकर भी बोया जाता रहा है ।अलसी और अण्डी भी बोई जाती थी तथा थोड़ी बहुत मात्रा में धनिया,मटर,मसूर और सरसों भी बोई जाती रही है । सन 1909 के लगभग कुलपहाड तहसील में अफीम की खेती और मुस्करा

1- मानचित्र (हमीरपुर जनपद का संक्षिप्त परिचय)

राठ एंव महोबा परगनों में तम्बाकू की खेती का उल्लेख मिलता है । गन्ने की खेती राठ, कुलपहाड़ तहसील एंव मुस्करा के आस-पास अधिक होती रही है ।

जनपद में पहले कपास की खेती भी होती थी । महोबा में शताब्दियों से पान की खेती होने का उल्लेख मिलता है, जिसे सन् 1909 के लगभग राठ में भी उगाया जाता था । इसकी खेती तमोली लोग ही करते आये हैं । पुराने समय में जनपद में नील की खेती होती थी,[1] परन्तु इसका क्षेत्र दिन प्रतिदिन घटता गया और अब बिल्कुल समाप्त है । सन 1901-2 में इसका क्षेत्र 448 एकड़ था, जिसका अधिकांश राठ तथा कुलपहाड़ तहसील में था । नील से रंग निकालकर व्यापारियों को बेचा जाता था । इसकी खेती केवल लोधी, काछी और कुर्मी लोग ही करते थे । ब्राम्हण अपवित्र समझकर इसकी खेती से परहेज करते थे । बीसवीं शताब्दी के पूर्व इस जनपद में एक मूल्यवान फसल आल की भी खेती होती थी ।[2] इसकी खेती अच्छे किस्म की मार और कॉबर में ही होती थी तथा इसके खेत की जुताई, गुड़ाई , निराई और खुदाई में काफी श्रम और लागत लगानी पड़ती थी । खेत में से आल की जड़ों को खोदकर रंग तैयार किया जाता था । राठ तहसील के परा गांव में नील की खेती: के चिन्ह अब भी मिलते हैं । वहां के बूढ़े लोगों से आल की चर्चायें भी सुनने को मिलती हैं ।

जनपद में सिंचाई के साधन चरस, ढेकुली औररंहट पुराने समय से ही चलते रहे हैं । सन् 1909 के लगभग तक बेतवा नहर से हमीरपुर परगने में तथा तालाबों की नहरों से - महोबा और कुलपहाड़ के परगनों में सिंचाई होती थी ।[3] नहरों वाले प्रमुख बड़े तालाब आठ थे - बीजानगर,दसरापुर,थाना,पसवारा,टीकामऊ,कीरतसागर,मदनसागर,कल्याण-सागर और बेलाताल । लहचूरा बॉध से भी जनपद के अधिकांश भाग में सिंचाई की जातीहैं।

1- डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृष्ठ - 33

2- वही पृष्ठ - 33

3- वही पृष्ठ - 38

इसके अतिरिक्त जनपद में सिंचाई वाले अन्य छोटे तालाब निम्नलिखित हैं-नैगवाँ, रहेलिया, किड़ारी, छिकहरा, कबरई, पहरा, बिलखी-पवा, पसनहाबाद, तैली पहाड़ी, मझगवांताल, कुलपहाड़, मिरतला तथा नरेरी ।

वैसे उद्योग की दृष्टि से जनपद बहुत पिछड़ा हुआ है, परन्तु फिर भी प्राचीन - काल से ही यहां की कुछ वस्तुयें प्रसिद्ध रही हैं । गौरहरी में गौरा पत्थर {सोपस्टोन} से बर्तन बनते रहे हैं, जिन्हें दूर-दूर तक भेजा जाता है । मोटा कपड़ा बुनने का काम पूरे जिले में जहाँ-तहाँ चलता है ; जिसे कोरी, और जुलाहे करते थे । कुम्हार लोग मिट्टी के बर्तन बनाते हैं एवं पीतल की मूर्तियाँ श्रीनगर में बनती हैं । ये मूर्तियाँ दो तरह की बनायी जाती हैं - ठोस तथा पोली । सन् 1909 के लगभग शुद्ध पीतल की मूर्तियों का दाम 2-3 रूपये प्रति सेर था और जिनमें शीशा भरा रहता था ,उनका दाम डेढ़ रूपये प्रति सेर था । मौदहा में सुनार लोग चाँदी की मछलियां बनाते रहे हैं । सन् 1909 में कुलपहाड़ में एक कपास ओटाई की मिल थी ,जिसे एक पारसी फर्म ने लगाया था । इसी कार्य की एक छोटी मिल महोबा में एक ब्राम्हण जमींदार ने लगाई थी । चरखारी में लकड़ी और पीतल के मॉडल बनते रहे हैं , और बुनाई का काम सिखाया जाता रहा है । प्रथम गजेटियर में यहां शिल्प-कला विद्यालय होने का उल्लेख मिलता है ।[1] रंगाई-छपाई का काम राठ में होता रहा है । वर्तमान समय में बुन्देलखण्ड विकास निगम द्वारा राठ में सुगर मिल की स्थापना की गई है । इसके अतिरिक्त खादी ग्रामोद्योग से सहायता प्राप्त बहुत सी इकाइयाँ जैसे-चर्मशोधन, तेल, साबुन, कुम्हारगीरी, हथकरघा इत्यादि में कार्यरत हैं ।

जिले का उत्पादन खरीदने हेतु दूर-दूर से व्यापारी लोग आते रहे हैं। सन् 1909 के लगभग रेलवे की आउट एजेन्सियां राठ तथा चरखारी में थीं, जहाँ से माल बैल-गाड़ियों द्वारा कुलपहाड़ तथा महोबा स्टेशनों को ले जाया जाता था ।[2] जिले से चना,

---

1- डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृष्ठ - 39

2- वही पृष्ठ - 58

दालें, घी, कपास, पान, ज्वार, तिल, अलसी तथा गुली निर्यात की जाती रही हैं। शक्कर, चावल, गेहूँ, नमक, मिट्टी का तेल एवं सूती कपड़ों का आयात होता रहा है। जिले से निकलने वाली प्रथम रेलवे लाइन जी0आई0पी0 की झाँसी-मानिकपुर शाखा सन् 1889 में चालू हुई थी। उस समय इसके रेलवे स्टेशन छटई, बेलाताल, कुलपहाड़ तथा महोबा, सूपा, काली पहाड़ी और कबरई थे। सन् 1909 में बाँदा-कानपुर लाइन की योजना विचाराधीन थी।[1] जिले में व्यापार का मार्ग दक्षिण से उत्तर की ओर रहा है। प्राचीनकाल में मुख्य केन्द्र कालपी था, बाद में कानपुर हो गया। यहाँ के लिए मार्ग चण्डौत और जलालपुर होकर थे, किन्तु धीरे-धीरे रास्ता पक्का होने पर यात्रा-पथ हमीरपुर होकर बन गया। अब रेलवे के कारण दक्षिणी भाग की स्थिति काफी बदल गई है और उसका सम्बन्ध रेलवे लाइन से हो गया है। प्रारम्भ में रेल की ढुलाई व्यवस्था इतनी शिथिल थी, कि किसान अपने माल को लेकर बैलगाड़ी से कानपुर चलते समय जिनका माल स्टेशन पर पड़ा देखते थे वह कानपुर से बाजार करके वापस आने पर भी जहाँ का तहाँ पड़ा मिलता था।[2] उस समय जिले के दक्षिणी भाग से कानपुर की यात्रा आने जाने की पूरी करने में दो-तीन हफ्ते लगते थे।[3]

1-5 : जातियाँ तथा व्यवसाय :- हमीरपुर जनपद में प्राचीन काल से ही विभिन्न जातियों के लोग रहे हैं, जिनके अलग अलग व्यवसाय हैं। जनपद में सर्वाधिक जनसंख्या चमारों की है, इसके बाद लोधियों की, जो यहां के सबसे प्राचीन निवासी जान पड़ते हैं। बहुत से गांव ऐसे हैं, जहां लोधियों के बाहर से आकर बसने के नहीं, बल्कि उन गांवों से बाहर जाकर बसने के प्रमाण मिलते हैं। जहां तक खोज हो सकी है, यह पता चलता है कि लोधियों के प्रवजन की गति पश्चिम से पूरब की ओर रही है और इसी

1- डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृष्ठ - 59

2- वही पृष्ठ - 61

3- वही पृष्ठ - 58

प्रकार वे बुन्देलखण्ड में आगे की ओर बढ़ते गये हैं । कहीं - कहीं वे शान्तिपूर्वक आबाद हुए और कहीं-कहीं उन्होंने शस्त्र-बल से भर, गौण तथा खंगारों को खदेड़कर बाहर किया। परम्पराओं के सूत्र यह व्यक्त करते हैं कि धसान और वेतवा के पश्चिम के गांव से लोधियों के समूह इस जनपद में आये । इस प्रकार तहसील उरई के जैसारी ग्राम से निकले हुये लोधी राठ तथा कुलपहाड़ तहसील के 12 गाँवों में आबाद हुये । इनमें सर्वाधिक संख्या कैथा और नवारा में आबाद हुई । झांसी जिले की मउ तहसील के देवरी , सिकरी गाँवों से चले हुए लोधियों ने राठ तहसील में 12 गांव बसाये, जिनमें इटैलिया और इस्लामपुर बड़े गांव हैं । कुसमिलिया, गदा, बन्धौली कलाँ, खरका और कुइया ग्रामों में (जालौन जनपद से आये हुए) कुछ ऐसे चिन्ह मिलते हैं, जिनसे पता चलता है कि यह प्रवजन पिछले 200-500 वर्षों के बीच हुए ।[1] वर्तमान समय में लोधी शान्ति पूर्वक कृषि कार्य में लगे हुए हैं, किन्तु परम्परायें सूचित करती हैं कि पूर्व में यह लड़ाकू जाति रही है और इससे ब्राम्हण और ठाकुर भी भयभीत रहते थे । कहा जाता है कि करहरा के लोधियों ने महोबा तहसील में नथूपुरा से सेंगर राजपूतों को निकाल बाहर किया था और गोहाण्ड के लोधियों ने पवाँरों को खदेड़कर ग्राम रावतपुर भगा दिया था । राठ तहसील के चिल्ली ग्राम में ब्राम्हणों के आमन्त्रण पर लोधियों ने पहुँचकर वहां के खंगारों को नष्ट कर दिया । छत्रसाल के समय में चरखारी के समीप घुटवई के लोधी चौरासी गाँवों के चौधरी बनाये गये थे और उन्हें ठाकुर का खिताब दिया गया था (यह वंश ठकुरिहा-कहलाता है) । इन्हें यह सम्मान युद्ध में की गई सेवा के बदले प्रदान किया गया था।[2] परगना जैतपुर में लोधियों के बहुत से गांव छत्रसाल के राज्यकाल में आबाद हुये ।

1- डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृष्ठ - 68

2- वही पृष्ठ - 69

छत्रसाल के उत्तराधिकारियों के शासनकाल में केसरीसिंह के समय तक यह क्रम चलता रहा । केसरीसिंह सन् 1870 में दिवंगत हुए थे ।[1]

लोधियों के बाद तीसरे स्थान पर जन संख्या ब्राम्हणों की आती है । चौथे स्थान पर अहीर हैं । क्षत्रियों में यहाँ सबसे बड़ा स्थान बैस ठाकुरों का है । इनका सबसे बड़ा गांव खरेला है । बैस ठाकुर अवध के डौंड़िया खेरा नामक स्थान से आये हुए बताते हैं । जनश्रुति है कि उदत बैस चन्देल शासनकाल में अवध से आये और उन्हें बावन गाँवों की जागीर (बावनी) प्राप्त हुई, जो बरवान नाला से दक्षिण में महोबा के गुगौरा तक फैली हुयी थी , लेकिन बुन्देला शासन काल में यह जागीर छिन्न-भिन्न हो गई । उदत के उत्तराधिकारियों में मान्धातासिंह को 5 गांव मिले, जिनमें सिंघनपुर - बघारी भी सम्मिलित था । यह ग्राम गुमानसिंह के समय तक माफी बना रहा । बैस ठाकुरों के ग्राम प्रायः समूहों में मिलते हैं और प्रत्येक समूह के भू-स्वामी अपना वंशानुक्रम किसी एक मुखिया से जोड़ते हैं, जिसका नाम सर्वप्रथम अधिकृत किये गये ग्राम-नाम में सुरक्षित मिलता है । इस प्रकार परगना सुमेरपुर के 24 गांव के समूह में, जिनमें बिदोखर और छानी गांव प्रमुख हैं । बैस ठाकुर अपना वंशानुक्रम खाँडेराय से जोड़ते हैं ,जिसने - खड़ेहजार बसाया था ।[*] जिन गांवों के अन्त में जार जुड़ा है, वह यह सूचित करते हैं, कि वहाँ पहले जंगल था । जंगल के झाड़ - झंखाड़ (जार) साफ करके गांव बसाया गया। बिदोखर में बैस ठाकुरों से पहले बागड़ी रहते थे तथा सुमेरपुर पहले खँगारों का था ।अब सुमेरपुर बैसों के 12 ग्राम-समूहों का केन्द्र है और मौदहा में सायर ग्राम उनके चौबीस ग्रामों के समूह में प्रमुख ग्राम है । महोबा तहसील के गोइण्डी ग्राम में जनश्रुति है, कि

1- डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृष्ठ - 69

* सम्भवतः यह खड़ेहीजार (हमीरपुर तहसील) है ।

लाखन राव बैस ने डौंडिया खेरा से आकर एक चन्देल राजकुमारी से विवाह किया और उसे सोहास तथा कैलास नाम के ग्राम मिले । कैलास में उसने एक किला बनवाया था, जहां वह महोबा पर आक्रमण के समय पृथ्वीराज चौहान की सेवा द्वारा मारा गया था । कबरई और मकरवई नाम के समृद्ध ग्राम, जो परगना महोबा में हैं, बैस ठाकुरों के आठ गांवों के समूह में से प्रमुख है । कहा जाता है कि मकरवई में उन्होंने दीपावली के समय वहां के पूर्व निवासी अहीरों को मार डाला था और कबरई से उन्होंने बागड़ी तथा मौहार राजपूतों को खदेड़ दिया था । मकरवई के भू-स्वामी बैस ठाकुर बताते हैं कि उनके पूर्वज , मुहम्मद खां बंगश द्वारा चौरासी गांव के चौधरी नियुक्त किये गये थे और इन गांवों का लगान वसूल करने की सेवा के बदले में उन्हें आठ गांव {मकरवई के आस-पास के} माफी में दिये गये । यह छूट उन्हें अंग्रेजों के आने के पूर्व तक सुलभ रही ।[1]

राठ तहसील में ठाकुरों में परिहार वंशीय ठाकुर ही अधिक हैं । वे अपना वंश-वृक्ष राजा नाहर राव से घोषित करते हैं, जो मूलतः आबू पर्वत से आया था और जिगनी में बसा था । राजा नाहर राव के तीन पुत्र थे, जिनमें से एक धसान नदी के पश्चिम में झांसी की ओर 12 गांवों का स्वामी बना । दूसरा पुत्र धसान के पूर्व में हमीरपुर की ओर 12 गांवों का स्वामी बना । तीसरे पुत्र को झांसी की ओर डुमरई नाम का केवल एक गांव मिला । सन 1246 {सम्वत 1306} में राजाराम परिहार के पुत्र बाउसिंह ने रामगढ़ का किला बनवाया, जिसके भग्नावशेष मझगवां तथा धसान के बीच में अब भी मिलते हैं । इसके वंश ने आस-पास के गांवों से लोधियों, जुझौतियों, ब्राम्हणों तथा अन्य भू-स्वामियों को निकाल बाहर किया । यह भी कहा जाता है, कि

1- डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृष्ठ - 70 , 71 ।

इन्हीं परिहार वंशीय लोगों ने रामगढ़,पनवाड़ी ,राठ,कालपी, मगरौठ, चण्डौत और बाँदा में किले बनवाये । बाँदा का किला बड़ाकोट या बूढ़ा कोट कहलाता है । रहँक, उरवारा तथा बौरा (परगना जैतपुर) के परिहार निम्न स्तर के माने जाते हैं,क्योंकि ऐसा विश्वास है कि राजा नाहर की रखैलों की सन्तान हैं । स्थानीय जनश्रुतियों के अनुसार जैतपुर के समीप मुढ़ारी गांव सन् 1080 (संवत 1137) में राजा उदयकरन परिहार द्वारा बसाया गया था । उसने गोवरधन पहाड़ी पर एक किला बनवाया, जिसके ध्वंशावशेष अभी तक मौजूद हैं ।[1] दीखित ठाकुर हमीरपुर के संस्थापक हम्मीरदेव करचुली की पुत्री की सन्तान बताये जाते हैं , जो कोइल ग्राम के एक राजपूत को ब्याही थी । इस विवाह से रामसिंह नाम का एक पुत्र हुआ, जिसे हम्मीरदेव ने पाला और उसका विवाह अमलोर के एक राजपूत की बेटी से कर दिया । अमलोर ग्राम बाँदा जिले की पैलानी तहसील में है । इस विवाह में दहेज के रूप में मौदहा तहसील का पूर्वी भाग प्राप्त हुआ था । तहसील पैलानी में दीखित ठाकुरों के बहुत से ग्राम है, जो अपना वंश-वृक्ष अवध के कोट हलोखर से निकला बताते हैं ।[2]

गौर ठाकुरों में एक वंश राजगौर है । कहा जाता है कि बीजाराय नामक राजगौर अपने वंश की एक सैनिक टुकड़ी लेकर अजमेर से चला और सन् 1348 में (संवत - 1405) 12 गांव के एक समूह पर उसने अधिकार किया । इनमें से पहला गांव पारा तथा दूसरा हरेटा था, जिसे उसने जंगल साफ करके पुनः आबाद किया । बीजाराय के तीन पुत्र थे -बीरसिंह ,सुभटसिंह और जलसिंह । जलसिंह के नाम पर जल्ला ग्राम आबाद हुआ, जो परगना हमीरपुर में है । बीजाराय गम्मीरदेव करचुली की सेवा में रहा।[3] इनके अतिरिक्त जिले में चौहान,कछवाहा,सैंगर,बुन्देला तथा चन्देल ठाकुर भी थोड़ी संख्या में पाये जाते हैं ।

1- डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृष्ठ - 73
2- वही पृष्ठ - 73
3- वही पृष्ठ - 74

काछी लोग भी जनपद की प्रत्येक तहसील में पाये जाते हैं । काछी लोगों में कछवाहा नाम का एक वर्ग है, जिनकी उत्पत्ति नरवर के कछवाहा राजपूतों तथा निम्न वर्ग की स्त्री के संयोग से बताई जाती है । काछियों का मुख्य व्यवसाय आज कल कृषि एवं साग-भाजी का उत्पादन करना है । जनपद में कोरी जाति के लोग भी पाये जाते हैं, जो कि प्रत्येक तहसील में छुट-फुट रूप से हैं । कोरियों का मुख्य धन्धा कताई-बुनाई रहा है । कृष्ठा भी यही धन्धा करने वाली जाति है । इनका धन्धा अब इतना अच्छा नहीं रहा , जितना की बीसवीं शताब्दी पूर्व चलता था । कोरी और कृष्ठा राठ क्षेत्र में सर्वाधिक संख्या में पाये जाते हैं , जिसका कारण सम्भवत: यह है कि यह तहसील मउरानीपुर तथा गुरसराँय के पास पड़ती है और यह दोनों स्थान देशी वस्त्र निर्माण के महत्त्वपूर्ण केन्द्र रहे हैं ।

खँगार और आरख दोनों इस जिले में पाये जाते हैं । चन्देलों के पतन के बाद ऐसा कहा जाता है, कि महोबा एक खँगार के अधिकार में पहुँच गया था, जो एक मुसल-मान शासक के सहायक के रूप में कार्य करता था । महोबा से लेकर झाँसी में बेतवा के पश्चिम तक अनेक वर्षों तक खँगार सम्मान पूर्वक शासन करते रहे । इसके बाद उन्हें बुन्देलों ने परास्त किया । अंग्रेजी शासन काल में इस जिले के अधिकांश चौकीदार इसी जाति से भरती किये जाते थे और उनकी सेवायें प्रशंसनीय रहीं । कुछ गाँव में खँगारों की जमींदारी भी रही है । इन्हीं से मिलते-जुलते आरख भी हैं ; जो केवल हमीरपुर तथा मौदहा में अधिक मिलते हैं । आरख तथा खँगार सामान्यतया एक ही जाति की शाखायें मानी जाती हैं, किन्तु वे एक दूसरे का छुआ नहीं खाते रहे हैं । महोबा के निकट रैपुरा कलाँ के जमीं-दार खँगार जिले में अपने को सर्वश्रेष्ठ खँगार मानते हुए बताते हैं, कि उनके पूर्वज गढ़कुण्डार से आये थे । यह अन्य जिलों के खँगारों को केवल आरख मानते हैं । कुलपहाड़ तहसील में खँगारों के स्थान पर बसोर भी चौकीदारी का काम करते हैं ।[1]

1- डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृष्ठ - 75

मुसलमानों की संख्या राठ, मौदहा, महोबा और पनवाड़ी कस्वों में अधिक रही है । सम्भवत: यह चारों स्थान मुगलकाल में परगनों के सदर मुकाम थे । इनमें से दो का निकट सम्बन्ध मुहम्मद खाँ बंगश से है । वस्तुत: इनकी सर्वाधिक संख्या मौदहा में है, ।मुसलमानों की अधिक संख्या बाहर से नहीं आई, बल्कि धर्मान्तरण के कारण ही बढ़ी है । इनमें से अधिकांश ठाकुर थे तथा दूसरी अन्य जातियों से धर्मान्तरण हुए । उदाहरण के लिए राठ के समीप उमन्नियां के मुसलमानों के पूर्वज लोधी थे । मौदहा के समीप फतेहपुर ग्राम का नामकरण शेख फतेहमुहम्मद के नाम पर हुआ है । कहा जाता है, कि एक फकीर के मजार के रख रखाव के लिए मौदहा तथा आस-पास के छह गांव औरंगजेब से माफी में प्राप्त किये थे ।[1] महोबा का काजी परिवार हुमाँयूँ के राज्य काल में दिल्ली से आया । मुसलमानों के विभिन्न वर्ग, जो अधिक संख्या में इस जिले में रहते हैं, शेख , पठान, बेहना और सैयद हैं । बेहनों की अधिक संख्या राठ और कुलपहाड़ तहसील में निवास करती है । बुन्देलखण्ड के कई प्राचीन स्थानों का सम्बन्ध जनश्रुतियों में बेहनों से बताया जाता है और बहुत से उदाहरणों में उनके घरों की संख्या 989 कही जाती है। तहसील राठ में चन्दोली के पास भड़रौरा खेरा में बताया जाता है,कि वहां पर कभी 989 घर बेहनों के थे , जिनके औजार आज भी वहां यदा-कदा मिलते रहते हैं । पड़ोस के रोरो गांव में ऐसी कथा है, कि भारेश्वर खेरा के एक गड्ढे में मुसलमानों द्वारा - प्रयुक्त सनकियां गड़ी हुई हैं । जालौन जिले की तहसील कालपी के खरका,करमेर और खदरी में भी बेहनों के 989 घर होने की जनश्रुतियां मिलती हैं । परगना जलालपुर के सिवनी गांव में खण्डहरों का एक बड़ा टीला है । ऐसा कहा जाता है, कि महोबा के राजा परमाल को स्वप्न में महादेव की एक मूर्ति खोजने का निर्देश मिला था,जिसके - अनुपालन में उसने वह मूर्ति सिवनी में प्राप्त की और वहां उसके लिए एक मन्दिर का

1- डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृष्ठ - 75

निर्माण कराया । वहां उसने और भी मन्दिर बनवाये जिसमें से एक ब्रम्हा का था, जिसकी चतुर्भुजी मूर्ति अब भी मौजूद है । उस समय यह कस्वा चार वर्ग मील में बसा था और इसमें दस हजार घर थे, जिनमें 989 बैहनों के थे । डेढ़ सौ वर्षों के बाद दिल्ली के सुल्तान तिमूरशाह के राज्यकाल में बैहना लोग जमींदार बन गये और दो-सौ वर्षों तक इसी स्थिति में रहे । दिल्ली के बादशाह द्वारा नियुक्त एक सूबा सिवनी में था, परन्तु औरंगजेब के शासन काल में उसने विद्रोह किया और सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में अपने नाम का सिक्का चलाने का दुस्साहस किया । इस पर कुछ समय बाद औरंगजेब ने आकर उसे परास्त किया और सिवनी कस्वे को ध्वस्त कर दिया। यह उस समय तक ध्वस्त पड़ा रहा, जब तक कि वीरसिंह ने अधिकार किया ।कपड़िया नाम की एक घुमन्तू जाति, जो चक्की के पत्थर काटती थी, यहां बस गयी और सौ वर्षों तक यहां की जमींदारी रही । इसके बाद उस पर लोधियों ने अधिकार किया । कहा जाता है कि परगना सुमेरपुर के खड़ेहीजार में, जिसके आस-पास बैस ठाकुरों की चौबीसी है, मूलतः बैहनों का निवास रहा है । राठ तहसील के खरेहटा बुर्जुग गांव में एक बैहना खेरा है ।[1] इसी तरह राठ के पास स्यावरी गांव में भी बैहना बाबा नाम का एक स्थान है, जिससे प्रतीत होता है कि सम्भवतः वहां बैहनों का निवास रहा होगा ।

महोबा में कुछ मजार आज भी विद्यमान हैं । जैसे -पीरमुबारक शाह का मजार, जो हिन्दू, बुद्ध तथा जैन इमारतों के अवशेषों से बना है। इस मजार के लिए काफी भूमि माफी लगी रही है । कालिंजर के राजा कीरतपाल ने पीर के लिए रिचेरा - पहाड़ी और महोबा में 700 बीघा जमीन सदैव के लिए माफी लगा दी थी । इसके अतिरिक्त महोबा में एक मजार मलिक हुसैन का भी है । कहा जाता है कि यह अरब

1- डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृष्ठ - 76,77 ।

से आये थे और इन्होंने यहां के राजा भर को पराजित किया, जिनकी 14 रानियां बिना अग्नि की सहायता के सती हो गयीं । उनके सती होने का स्थान मौजा भटीपुरा में बड़ोखर ताल के समीप है और "चौदह रानी की सती" कहलाता है । मौदहा में भी एक मकबरा दलेर खाँ का बना हुआ है ।[1]

जनपद के कुछ स्थानों पर ईसाई लोग भी निवास करते हैं । महोबा में ईसाई मिसन की स्थापना मार्च,1895 में हुई थी । यह एक अमेरिकन सोसाइटी,जिसका नाम क्रिश्चियन डिसाइपिल्स है, से सम्बन्धित है । महोबा के इस मिशन की शाखायें-राठ, मौदहा और कुलपहाड़ में हैं । इनके द्वारा स्कूल , अस्पताल तथा अनाथालय - संचालित हैं ।[2]

इनके अतिरिक्त जनपद में अनेक पेशेवर जातियां छुट-फुट रूप में पाई जाती हैं, जिनके अलग-अलग व्यवसाय हैं । इन जातियों में ढीमर,माली,कायस्थ,कहार,कुम्हार, सुनार,बढ़ई, लुहार, नाई, धोबी, बसोर ,भड़भूजा, दर्जी एंव रंगरेज इत्यादि अपना विशेष स्थान रखते हैं । कुम्हार जाति के लोग वर्तन बनाने का कार्य करते हैं। सुनारों का कार्य सोने-चाँदी के आभूषण बनाना है तथा बढ़ई लोग लकड़ी का कार्य करते हैं । लुहार लोहे का कार्य एंव दर्जी जाति के लोग कपड़े सिलने का कार्य करते है। धोबी और बसोर जातियां समाज में निम्न स्तर की मानी जाती हैं,जिनका कार्य सफाई करना है। जिले में बैश्य और तैली जाति के लोग भी पाये जाते हैं, जिनका प्रमुख कार्य व्यापार है। जनपद में नाई जाति के लोगों को खवास नाम से भी जाना जाता है, जिनका मुख्य कार्य उच्चवर्ग के लोगों की सेवा करना है । गड़रिया एंव खटीक जाति के लोग जनपद में जहां -तहां बिखरे हुए हैं,जिनका कार्य भेड़-बकरी पालना और उनका माँस बेचकर अपना जीवन निर्वाह करना है ।

1- डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृष्ठ-77,78

2- वही पृष्ठ - 78

1-6 : भाषा :- हमीरपुर जनपद बुन्देलखण्ड का एक प्रमुख भू-भाग होने के कारण यहां की मुख्य भाषा "बुन्देली" है । जिले के पूर्वी भाग में यमुना के किनारे के क्षेत्रों में "तिरहारी"बोली का प्रयोग होता है । तिरहारी शब्द तीर से बना है,जिसका अर्थ है, किनारे की । हमीरपुर के आस-पास बुन्देली मिश्रित बघेली का छुट-फुट प्रयोग देखने को मिलता है , जो बुन्देली से अधिक प्रभावित है । जनपद के दक्षिणी पूर्वी भाग में , जहां बनाफर राजपूत रहते हैं , "बनाफरी" या बनपरी बोली का प्रयोग किया जाता है । यह पूर्वी हिन्दी का रूप है, जो बाँदा की बोली से मिलती-जुलती है तथा इसमें अधिकांश बुन्देली की छाप है ।[1] जगनिक का प्रसिद्ध वीर काव्य "आल्ह-खण्ड" इसी में लिखा गया है । जनपद में"कुण्ड्री" नामक बोली का प्रयोग भी होता है, जो हमीरपुर तथा बाँदा जनपद को पृथक करने वाली केन नदी के दोनों तटों पर बोली जाती है । बाँदा की ओर की"कुन्द्री" में बघेली का अधिक सम्मिश्रण है, परन्तु हमीरपुर की"कुन्द्री" में बुन्देली की ही प्रधानता है ।[2]

जनपद की राठ तहसील में लोधी राजपूतों की आबादी अधिक है, अतः यहां की बोली "लुधियाँती" अथवा "राठौरी" कहलाती है, जो बुन्देली का ही रूप है ।[3] राठ तहसील से सटी हुई चरखारी तथा कुलपहाड़ तहसीलों में भी"लुधियाँती" अथवा "राठौरी" बोली का प्रयोग देखने को मिलता है ।

-------o-------

1- डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृष्ठ - 80

2- डा० श्यामसुन्दर बादल-बुन्देली का फाग-साहित्य, पृष्ठ-417

3- ग्रियर्सन - लिंगुइस्टिक सर्वे आफ इण्डिया,वाल्यूम-9, पृष्ठ-86

अध्याय २ : स्थान-नामों का वर्गीकरण

अध्याय 2 : स्थान - नामों का वर्गीकरण

स्थान-नामों की व्युत्पत्ति में अनेक राजनीतिक,सामाजिक,भौगोलिक,सांस्कृतिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक तत्वों की भूमिका निहित रहती है । इस नाम रूपात्मक जगत में यदि अस्तित्व की सत्ता को ही नाम का दूसरा रूप कहें, तो कदाचित् अप्रासंगिक न होगा । इस संसार में अगर कोई वस्तु अस्तित्व धारण किये है, तो उसके परिचय के लिए उस वस्तु में किसी न किसी नाम की कल्पना अवश्य कर ली गई है ।[1] अस्तित्व के अभाव में नाम या नाम के अभाव में अस्तित्व, इन दोनों की कल्पना पृथक रूप में नहीं की जा सकती है । इससे प्रतीत होता है कि जब से भाषा या शब्द-संकेतों का प्रचार हुआ,तभी से नाम - विधान की प्रथा भी प्रचलित रही है । अपने निवास-स्थान को किसी नाम विशेष से अभिहित करने की प्रथा भी अत्यन्त पुरातन है ।

आधुनिक काल का परिवर्तित युग नामों की परम्परा में नये आयाम प्रस्तुत करता है । फ्रायड, युंग और एडलर ने जिस प्रकार जीवन की समस्त स्वाभाविक प्रक्रियाओं को अचेतन मन की दमित वासना का विस्फोट कहा है, नामकरण की प्रक्रिया भी उससे अछूती नहीं रही है । शूद्रवाद और उच्च वाद भी नामों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। व्यक्ति-वाचक नाम प्राय: अन्तर्मन की अनुभूतियों का आधार ग्रहण करते हैं, जिसका व्यक्ति के व्यक्तित्व से सर्वथा सम्पृक्त होना कभी-कभी स्वाभाविक सा हो जाता है, किन्तु स्थान-नामों का जन्म अपने सन्दर्भों व परिवेशों से ही होता है । इन्हीं - सन्दर्भों की पीठिका पर हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों को निम्नलिखित आधारों पर वर्गीकृत किया जा रहा है -

---

1-डा0 (श्रीमती) यामिनी-स्थान-नामों का व्युत्पत्तिगत,ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक - अनुशीलन , पृष्ठ - 7।

1- व्यक्तिपरक स्थान-नाम :- सुयश प्राप्ति मानव की आदि नैसर्गिक प्रवृत्ति है। इसी प्रवृत्ति से प्रेरित होकर मानव सदा अपने नाम को अमरत्व प्रदान करने के आयास में संलग्न रहा है । भूमि एक अचल और अक्षय सम्पत्ति है । अतः किसी भू-खण्ड के साथ अपने नाम को सम्बद्ध करने की प्रथा भी अत्यन्त प्राचीन काल से चली आ रही है । आधुनिक काल में विशेषकर पाश्चात्य देशों में वैयक्तिकता का उद्दाम विस्फोट हुआ है, किन्तु भारतीयता की मूल चेतना अहम् का विसर्जन रही है, जिसके अनुकूल कहीं वीरपूजा की भावना से प्रेरित, कहीं ऋषियों-तपस्वियों या देवी-देवताओं के सम्मान हेतु, कहीं सत्ताधारियों के नाम पर या किसी शासक द्वारा किसी सामान्य व्यक्ति को प्रदान की गई । इस प्रकार व्यक्तियों के नाम आदि के आधार पर व्यक्तिपरक नाम रक्खे गये हैं । स्वयं भारतवर्ष का नाम - ऋषभदेव के पुत्र जड़भरत के नाम पर पड़ा है । हमीरपुर जनपद में भी स्थान-नामों का नाम-करण व्यक्तियों के नाम पर मिलता है, जिनका अपना विशेष महत्त्व रहा है ।

यथा - कीरतपुरा, जलालपुर, भीकमपुर, हल्ला, पंचमपुरा इत्यादि ।

2- देवी-देवताओं के आधार पर स्थान-नाम :- विभिन्न देवी-देवताओं को पूजने की प्रथा भारतवर्ष की अति प्राचीन प्रथा है । बहुदेववाद यहां आरम्भ से ही प्रचलित रहा है । इसी प्रवृत्ति के कारण हमीरपुर जनपद में विभिन्न देवी-देवताओं के नाम पर आधारित स्थान-नामों का नामकरण हुआ है ।

यथा- मनियाँपुर, देवगांव , अछरैला, गौरा, शंकरपुर, सिवनी इत्यादि ।

3- ऋषियों एवं तपस्वियों के नाम पर आधारित स्थान-नाम:- ऋषि या तपस्वी लोग साधारण तया लोक से दूर अपना तपोवन अथवा आश्रम बनाते थे, और वहीं एकान्तवास करते हुये अपनी साधना में लीन रहते थे । इन स्थानों पर जब जनपद का विस्तार हुआ, तो इन स्थानों के नाम ऋषि या तपस्वियों के नाम पर रक्खे गये । बुन्देलखण्ड क्षेत्र विशेष-कर ऋषियों की तपोभूमि रही है । जनपद हमीरपुर की तहसील राठ में चण्डौत गांव का

नाम "च्यवन ऋषि" एवं जमौड़ी "जमदग्नि" ऋषि के नाम पर रक्खा हुआ बताया जाता है । "वशिष्ठ मुनि" के नाम पर बसरिया नाम रक्खा गया है और कुलपहाड़ तहसील में जैतपुर भी इसी प्रकार का स्थान-नाम कहा जाता है ।

4- नवी, पैगम्बर एवं रसूल पर आधारित स्थान-नाम:- हमीरपुर जनपद पर मुस्लिम - शासकों के आक्रमण होते रहने एवं उनके शासन के कारण स्थान-नामों पर मुसलमानी प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है । जनपद में मुसलमानों व्दारा उनके नवीं , पैगम्बर, रसूल इत्यादि के नामों के आधार पर स्थानों के नाम रक्खे गये हैं ।

यथा - अलीपुरा, कादीपुरा, सैदपुर, मुहम्मदपुर इत्यादि ।

5- पौराणिक एवं ऐतिहासिक पात्रों के नाम पर आधारित स्थान-नाम:- जनपद में विभिन्न स्थानों के नाम पौराणिक व्यक्तियों के नामों पर रक्खे गये हैं । कुछ स्थानों का नामकरण ऐतिहासिक घटना-चक्रों के प्रति सजग प्रहरियों द्वारा ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम पर किया गया है ।

यथा - पिरथीपुरा, सिकन्दरपुरा, सुदामापुरी, मिस्टेनगंज, करियापुर इत्यादि ।

6- प्रकृतिपरक स्थान-नाम:- जब से मानव के अन्तस्थल में चेतना का संचार हुआ, तभी से प्रकृति उसकी अनुगामिनी रही है । प्रकृति और पुरूष का साहचर्य अनादि है । भूमि के एक विस्तृत प्रांगण में जब कोई अपना निवास-गृह निर्मित करता है, उस समय प्रकृति का उन्मुक्त विस्तार ही उसके दृष्टिपटल में समाया रहता है । अतः प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से स्थान-नाम उससे अवश्य प्रभावित होते हैं और स्थानों का नामकरण इसी पर आधारित हो जाता है । हमीरपुर जनपद में इसी तरह कुछ स्थानों का नामकरण हुआ है।

यथा - कुँजौली, रूपनौल, सोहेला इत्यादि ।

7- भूमि की विशिष्ट प्रवृत्तियों पर आधारित स्थान-नाम:- कृषि हमीरपुर जनपद का मुख्य व्यवसाय है और इसी कारण भूमि की विशिष्ट प्रकृतियां यहां की आर्थिक रूप-रेखा

के निर्माण एवं स्थानों के नामकरण का प्रधान उपकरण रही है । भूमि की इन्हीं विशिष्ट प्रकृतियों के आधार पर जनपद में स्थान-नामों का नामकरण हुआ है ।
यथा - कुर्रा, इटौरा, ककरा, मारकुई, मुंनी इत्यादि ।

8- भौगोलिक स्थिति पर आधारित स्थान-नाम:- सम्पूर्ण जनपद में भूमितल एक सा नहीं है । कुछ स्थान ऊँचाई पर एवं कुछ अत्यधिक नीचे के तल पर विद्यमान है । अतः इन्हीं स्थितियों से प्रभावित हमीरपुर जनपद में स्थानों के नाम मिलते हैं ।
यथा-किसी ऊँचे टीले या भीटे पर बसे होने के कारण स्थान का नाम टिकरिया, टौरी पड़ा । किसी बस्ती के निकट पहाड़ आदि होने के कारण उसका नाम पहाड़ी, आदि गिरवर, गिरौला, पहाड़िया एवं पहाड़पुरा इत्यादि पड़ा । बस्ती किसी जंगल के पास होने के कारण उसका नाम बीहट, नगारा डाँग आदि पड़ गया । इसी प्रकार अत्यन्त निचले तल पर बसे होने के कारण कोटरा, गहवरा एवं गहरौली पड़ा । इसके अतिरिक्त खदरा, खण्डौत, थलौरा, दूँका, टगरिया, माँचा इत्यादि भी इसी प्रकारके स्थान-नाम हैं ।

9- वनस्पतियों पर आधारित स्थान-नाम:- हमीरपुर जनपद में विभिन्न प्रकार के वृक्ष, वनस्पतियाँ, झाड़ी एवं घासें पाई जाती हैं । इन्हीं वृक्षों, वनस्पतियों आदि की - अधिकता या उपस्थिति के आधार पर स्थान-नामों का नामकरण हुआ है ।
यथा- अकौना, झाँई, कैथा, करौंदी, अमगाँव, महुआबाँध, पिपरी, इमिलिया, सिरसा इत्यादि ।

10- जल के विशिष्ट साधनों पर आधारित स्थान-नाम:- सरिताओं का सरस, सजल प्रवाह मानव के शुष्क जीवन की नीरसता को धो डालने की ही चेष्टा है ।[1] इस रूप में आदिम युग का मानव अपनी सहयात्रा में भ्रमण करता हुआ बीहड़ कान्तारों से जब गुजरा

1- डा० (श्रीमती) यामिनी - स्थान-नामों का व्युत्पत्तिगत, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन, पृष्ठ - 74 ।

होगा, तो कल-कल निनादनी की अत्यन्त मधुर ध्वनि मौन संकेतों द्वारा उसे अपनी ओर आकर्षित करती होगी । यही कारण है कि जनपद में प्रायः नदियों के अथवा जल के विशिष्ट साधनों के आधार पर रक्खे गये स्थान-नामों की बहुलता है । बुन्देलखण्ड जैसे शुष्क प्रदेश में नदियों,कुओं,तालाबों एंव पोखरों का विशेष महत्त्व हैं, जिनके आधार पर हमीरपुर जनपद में स्थानों के नाम रक्खे गये हैं ।

यथा- कुआँ खेरा, झिन्नावीरा, गुण्ड, नरवारा एंव बेहरका इत्यादि ।

11- पशु-पक्षियों पर आधारित स्थान-नाम:- प्राचीन काल में जनपद में सघन जंगल होने के कारण विभिन्न प्रकार के जंगली जानवरों की प्रधानता रही है, जिनके नाम पर स्थानों के नाम पड़ गये हैं । इसके अतिरिक्त कुछ स्थान-नामों का नामकरण विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षियों, कीट पतिंगों इत्यादि के आधार पर हुआ है । जनपद में गोहाण्ड एंव भैंसाय, भेड़ी, बघौरा, रिछारा, शेरगढ़, तिलसारस, मगरेड़ी, भौंरा डाँडा इत्यादि इसी प्रकार के स्थान-नाम हैं ।

12- विशिष्ट जाति या गोत्र पर आधारित स्थान-नाम :- प्राचीन युग जातीयता का युग था । जातीयता की प्रबल भावना से ग्रसित प्रत्येक जाति अपनी महत्ता व गौरव प्रतिपादित करने में संघर्षरत थी । ऐसे समय में ही जनपद में बहुत से स्थान-नामों का नामकरण जाति या गोत्र विशेष के आधार पर किया गया ।

यथा- टौला खंगारन, लोधीपुरा, अहरौरा, चमर्रा, नट्र्रा, मोचीपुरा, बसोरा, बम्हनपुरा, चमरखाना, गड़रिया खेरा इत्यादि ।

13- प्रवृत्ति पर आधारित स्थान-नाम:- हमीरपुर जनपद में अनेक स्थानों का नामकरण किसी विशेष प्रवृत्ति पर आधारित है, जिनसे वहां के स्थान विशेष की विशिष्ट प्रवृत्ति का परिचय प्राप्त होता है ।

यथा - बझेरा, बरगढ़ एंव बड़ा गांव इत्यादि ।

14- स्थान परक स्थान-नाम:- हमीरपुर जनपद में कईस्थानों का नामकरण स्थान विशेष की स्थिति के कारण हुआ है । कालान्तर में इन स्थानों पर लोग बसते गये तथा उस स्थान को अत्यधिक महत्त्व प्राप्त हो गया ।

यथा - कोठा, पारा,[x] टोला, परा, गंज, पुरवा, खरका, पुरा, खेरा[@], श्रीनगर इत्यादि।

15- प्रचलित-अन्ध-विश्वास पर आधारित स्थान-नाम:- कुछ स्थान-नाम जनपद में प्रचलित अन्ध-विश्वासों के आधार पर रक्खे गयेहैं, जिनकी अपनी विशेष महत्ता है । इनमें हसनपुर-सेसा, आराजी धनपुरा, आराजी मुतनजिया, पधरी, आराजी सागर इत्यादि प्रमुख स्थान-नाम हैं ।

16- विशिष्ट तिथि या राशि पर आधारित स्थान-नाम:- भारतवर्ष जैसे धर्म प्रधान देश में विभिन्न तिथियों की अपनी विशिष्ट भूमिका है । हमीरपुर जनपद में इन तिथियों एंव राशियों पर आधारित स्थान-नामों का नामकरण हुआ है ।

यथा - बुधौरा, सौरा, बुधवारा, इत्यादि ।

17- संख्या पर आधारित स्थान-नाम:- जनपद में कई स्थानों के नाम विभिन्न संख्याओं के आधार पर रक्खे गये हैं । संख्या पर आधारित स्थान-नाम जिले की प्रत्येक तहसील में विद्यमान हैं ।

यथा - नौरंगा, अठगांव, नौहाई, पचखुरा, पचपहरा, छिकहरा, नौगवाँ, सतावाँ इत्यादि

18- व्यवसाय पर आधारित स्थान-नाम:- सम्पूर्ण जनपद में अति प्राचीन काल से ही - विभिन्न जातियों के लोगों के अपने अलग-अलग उद्योग-धन्धे रहे हैं, जिनके आधार पर - उनकी जीविकोपार्जन की व्यवस्था रहती थी एंव लाभ प्राप्त होता था । इन्हीं प्रमुख व्यवसायों के आधार पर जिले में स्थान-नामों का नामकरण हुआ है ।
यथा-लोहारी, ग्वालीबुर्जा, गौरहरी, मोचीपुरा इत्यादि ।

---

x- "पारा" फारसी शब्द "पार-ए" का विकसित रूप माना गया है ।

@ -"खेरा" शब्द संस्कृत "खेट" का विकसित रूप है, जिसका अर्थ है-छोटा गांव ।

डा० सरयू प्रसाद अग्रवाल-अवध के स्थान-नामों का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन, पृष्ठ-236, 336 ।

19-जनश्रुति पर आधारित स्थान-नाम:- जनपद के विभिन्न क्षेत्रों के अध्ययन व अनुशीलन में जनश्रुतियों की चर्चा एक महत्व पूर्ण प्रसंग है । कुछ जनश्रुतियां बड़ी रोचक और तथ्यपूर्ण हैं ।

यथा-कनकुआ (कुलपहाड़ तह0) के बारे में जनश्रुति है कि इस स्थान पर सबसे पहले एक ब्राम्हण को कनक* की दक्षिणा दी गई थी और इसी कारण उसका नाम कनकुआ पड़ा । इसी प्रकार चुरारी (कुलपहाड़ तह0) के विषय में जनश्रुति है, कि इस स्थान के लोगों द्वारा एक बार चोरों का जमकर मुकाबिला करते हुए उनको बुरी तरह खदेड़ा था, जिसके आधार पर ही स्थान का नामकरण कर लिया गया ।

20- अनुकरण के आधार पर स्थान-नाम:- अनुकरण प्राणि मात्र की एक नैसर्गिक प्रवृत्ति है । हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में भी अनुकृत नामों का अभाव नहीं हैं । अनुकरण की प्रवृत्ति के आधार पर विभिन्न स्थानों के नाम पड़े हैं ।

यथा - अकौना-अकौनी, खेरा-खेरी, कैथा-कैथी नामक स्थान-नामों में क्रमशः अकौना के अनुकरण पर स्त्री लिंग वाची अकौनी, खेरा से खेरी एवं कैथा के आधार पर कैथी नाम रक्खे गये हैं ।

-------0-------

* - "कनक" अच्छी तरह शुद्ध एवं साफ किये हुए गेहूँ के आटा को कहते हैं ।

अध्याय ३ : स्थान-नामों के नामकरण की प्रक्रिया व प्रकृति

अध्याय 3 : स्थान-नामों के नामकरण की प्रक्रिया व प्रकृति

3-1 नामकरण की सामान्य प्रकृति:- प्रत्येक वस्तु के रूप-निरूपण में एक सुनिश्चित प्रक्रिया है । कोई व्यवस्था या क्रम ही उसे रूपायित करते हैं । सृजन की यही व्यवस्था बद्धमूल होकर प्रक्रिया या प्रकृति के नाम से अभिहित की जाती है । इसी प्रकार जब किसी नाम को गौरवमयी सत्ता प्रदान की जाती है, उसमें भी कोई क्रम, व्यवस्था या सुनिश्चित - धारणा अविच्छिन्न रूप से निहित रहती है । व्यक्ति वाचक नाम की भाँति वैधर्म्य और असंगति स्थान-नामों में नहीं पायी जाती है । उनमें एक संगति होती है । वे अपने परिवेशों व सन्दर्भों से सम्बद्ध होते हैं ।[1]

स्थान-नामों के नामकरण में प्रयुक्त शब्द और उसका अर्थ अपना विशेष महत्त्व रखते हैं । नगर विन्यास की संस्कृत कालीन योजनाओं से स्पष्ट होता है कि स्थान-नामो के नाम करण का कोई निर्दिष्ट आधार होता है । संस्कृत में स्थान-नामों की रचना, योजना और व्यवस्था से सम्बन्ध रखने वाला विशाल साहित्य है । पुराणों में भी यथा-स्थान-नामों की व्युत्पत्तियाँ दी गई हैं । सम्पूर्ण विश्व सात द्वीपों में विभाजित है । इन द्वीपों के नाम प्रायः विशिष्ट वृक्षों एवं पादपों आदि के आधार पर रक्खे गये हैं ।

प्रथम वार किसी व्यक्ति ने किस प्रकार किसी स्थान-नाम का नामकरण किया होगा । इससे सम्बन्धित प्रमाण उस युग के सुदीर्घ इतिहास में छिपे हुए हैं, किन्तु मनुष्य की जिज्ञासा शब्द और अर्थ के अभेद्य सम्बन्ध की जानकारी प्राप्त करने हेतु विकल हो उठती है । इस हेतु कभी - कभी कल्पना का भी सहारा लेना पड़ता है । कभी-कभी किसी मूल घटना के आधार पर रक्खे गये नाम की घटनायें कालकवलित हो जाती हैं और उनके स्थान पर नवीन कपोल-कल्पित घटनाओं का आश्रय ले लिया जाता है। इस प्रकार स्थान-नामों से सम्बन्धित मूल घटना प्रायः विलीन हो जाती है और नामकरण का एक नया रूप हमारे सम्मुख प्रस्तुत हो जाता है । स्थान-नामों के गहन अध्येता पाश्चात्य लेखक -

---

1- डा० (श्रीमती) यामिनी - स्थान-नामों का व्युत्पत्तिगत, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन, पृष्ठ - 17 ।

जार्जस्टीवर्ट का कथन है, कि स्थान-नाम केवल साक्ष्य, प्रतीक या संकेत मात्र होते हैं । शब्दों के व्दारा वह मूल घटना का संकेत तो करते हैं, परन्तु घटना का मूल केन्द्र क्या था ? इसकी पूरी सही जानकारी नहीं प्राप्त होती है । जार्ज स्टीवर्ट ने स्थान-नामों के अति प्राचीन रूप का बड़े रोचक ढंग से वर्णन किया है । आदि कालीन प्राचीन युग में मानव कबीलों के रूप में एक स्थान से दूसरे स्थान तक अपने आवास की व्यवस्था हेतु घूमा करते थे । इन कबीलों में से कोई एक कुशल व्यक्ति आगे भेज दिया जाता था , जो पीछे आने वाले लोगों को आगे के स्थान की स्थिति से अवगत कराता था और अनजाने में ही उस स्थान की विशेषताओं का सूचक कोई स्वतः स्फूर्त शब्द उस स्थान विशेष के लिए रूढ़ हो जाता था । इस प्रकार स्थान-नामों के नामकरण का जन्म हुआ।

पाणिनि के अनुसार वैदिक साहित्य में केवल जनों का उल्लेख मिलता है, जनपदों का नहीं । वे जनों को विकास की प्रारम्भिक अवस्था मानते हैं । उस समय जन एक अविभक्त इकाई के रूप में गतिमान अवस्था में थे । जन के अन्तर्गत स्वतंत्र कुलों की संख्या बढ़ती गई और उनका जीवन भूमि से सम्बन्धित होने लगा । वे अपनी गतिमान वृत्ति को छोड़कर किसी एक स्थान पर स्थायी रूप से बसने लगे । वहीं से जनपद के विकास का प्रारम्भ हुआ । जिस प्रदेश में जन का सन्निवेश हुआ, वह प्रदेश जनपद कहलाया । पाणिनि के अनुसार जनपद के विकास की चार अवस्थायें निर्धारित की गई हैं- ॥1॥ जन ॥2॥ कुल ॥3॥ जन पदिन ॥4॥ जनपद ।[1] यूनान में "पुर" राज्यों के विकास की भी लगभग यही चार अवस्थायें थीं । सबसे पहले घुमन्तू कबीलों का युग था, वे जन कहलाते थे, परन्तु जन समय पाकर स्थान विशेष पर बस गया । वहां उसका पद या ठिकाना "जनपद" कहलाया ।

प्रायः जनपदों के नाम पर प्रकृतियों के नाम करण की प्रथा रही है । कभी-कभी नामों के आधार पर शब्दों का जन्म हो जाता है ,चाहे वह व्यक्ति वाचक नाम

1- डा० वासुदेव शरण अग्रवाल - पाणिनि कालीन भारत वर्ष , पृष्ठ -

हो या स्थान-नाम । व्यक्ति या स्थान के लिए प्रयुक्त नाम उस व्यक्ति या स्थान की विशेषताओं को अपने में समाहित कर अर्थ का विस्तार करता है । हमीरपुर जनपद में श्रीनगर , कुँजौली इत्यादि इसी प्रकार के स्थान-नाम हैं । इसके अतिरिक्त किसी स्थान विशेष के नाम पर भी शब्द उत्पन्न हो जाते हैं । जैसे :- मिश्री मिश्र देश की उपज है, सुर्ती का उत्पादन केन्द्र सूरत नगर था । चीनी सर्वप्रथम यहां चीन से आई थी, सैंधानमक मूलत: सिन्धु का बदला हुआ रूप है । इसी प्रकार विभिन्न प्रकार के वस्त्रों , जैसे:- कश्मीरी ऊनी कपड़े का नाम काश्मीर पर, कैलिको कपड़े का नाम कालीकट नगर केनाम पर तथा जीन कपड़ा जिनोवा पर आधारित है ।

विभिन्न भाषाओं पर भी स्थान-नामों का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है । जैसे :- बुन्देलखण्ड में "बुन्देली" बोली जाती है । बघेल खण्ड में "बघेली" का प्रयोग होता है । इसी प्रकार अवध में "अवधी" तथा नागपुर में "नागपुरी" बोली जाती है । विभिन्न - ग्रन्थों या महा काव्यों के नामों में भी स्थान-नामों का प्रयोग हुआ है । यथा पंचवटी स्थान के नाम पर श्री मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित "पंचवटी" तथा भारतदेश के नाम पर कवि व्यास द्वारा "भारत" ग्रन्थ लिखा गया ।

भौगोलिक परिस्थितियों का भी स्थान-नामों के नामकरण पर विशेष प्रभाव पड़ता है । हमीरपुर जनपद के विभिन्न स्थान-नामों का नामकरण अनेक नदियों, भूमि, वनस्पतियों , पहाड़, वन, सूर्य, चन्द्र इत्यादि पर आधारित है ।

यथा - रकौरा, सिमरिया, सौरा, पहाड़िया इत्यादि स्थान-नाम वहां की भौगोलिक परिस्थितियों के परिणाम हैं ।

<u>3-2 नामकरण की व्युत्पत्तिगत प्रकृति</u>:- नामकरण की व्युत्पत्तिगत प्रकृति के अन्तर्गत स्थान-नामों के उदभव व विकास का अध्ययन किया जाता है । प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति का कोई मूल श्रोत अवश्य होता है । भाषा भी पूर्णतया इसी पर आधारित है । भाषा गतिशील है, अत: उसकी गतिशीलता में विकास और ह्रास दोनों हो सकते हैं । शब्द भी

अपने मूल श्रोत से निसृत होकर अपनी मूल परम्परा को अक्षुण्य रखते हैं । व्युत्पत्तिगत प्रकृति के अन्तर्गत स्थान-नामों के रूप में प्रयुक्त होने वाले शब्दों की ऐतिहासिक परम्परा परिवर्तित क्रमों, रूपों तथा अर्थ का अध्ययन किया जाता है । कभी-कभी शब्द अपने मूल अर्थ को त्याग कर पारिभाषिक अर्थ ग्रहण कर लेते हैं, जो मूल अर्थ से भिन्न होते हैं ।[1]

स्थान-नामों के नामकरण में प्रयुक्त शब्दों में यह प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है । स्थान-नाम मुख्यतया लोक की संस्कृति है । लोक के जन समूह में ही उनका विकास और ह्रास होता है । अतः स्थान-नामों के नामकरण में तत्कालीन प्रायोगिक अर्थ का विशेष महत्त्व है ।

भर्तृहरि के अनुसार शब्दों के अर्थ विनिश्चय में धात्वर्थ आदि का तनिक भी योग नहीं रहता है । धातु की कल्पना का महत्त्व केवल मूल्यार्थ की स्वीकृति के रूप में ही है । शब्दों में किसी अर्थ का योग लोक प्रसिद्धि के कारण हो जाता है । यह लोक प्रसिद्धि ही उनकी गौणता व मुख्यता का प्रमुख कारण है, जो स्वतः कुछ कारणों पर आधारित रहती है, जिनमें प्रतिभा, प्रयोग, अभ्यास और विनियोग प्रमुख हैं ।[2] इसके लिए लिये स्थान-विशेष के बाह्य सन्दर्भों एंव परिवेशों का अध्ययन आवश्यक है ।

लोक भाषा और परिनिष्ठित साहित्यिक भाषा में अन्तर होता है। अभिजात वर्ग के लोग प्रायः भाषा के स्वरूप को सुरक्षित रखते हैं, परन्तु अशिक्षित वर्ग द्वारा भाषागत परिवर्तन की आशंका रहती है । भारतदेश एक विशाल जनपदीय क्षेत्र है,जिसमें शिष्ट,सुरुचि एंव कलापूर्ण प्रयोक्ताओं की संख्या अपेक्षाकृत अल्प है । नाम प्रायः उच्चरित अवस्था में अधिक संचरण करते हैं, अतः नाम के उच्चारण में जन व्युत्पत्ति का अधिक प्रभाव पड़ता है । जन व्युत्पत्ति के कारण ही स्थान-नामों में उल्लेखनीय -

---

1-डा0(श्रीमती)यामिनी-स्थान-नामों का व्युत्पत्तिगत,ऐतिहासिक एंव सांस्कृतिक अनुशीलन , पृष्ठ - 25 ।

2- यास्क प्रणीतम् निरुक्तम् , पृष्ठ - 160 ।

परिवर्तन हो जाते हैं, परन्तु ऐसा केवल क्लिष्ट नामों के साथ ही होता है । यथा-हमीरपुर जनपद में मुस्करा, भरौली आदि इसी प्रकार के स्थान-नाम हैं । इन स्थान-नामों के भाषा वैज्ञानिक एंव जन उच्चरित रूप में अन्तर है ।

कभी-कभी लम्बे स्थान-नामों में ऐसे ध्वनिगत परिवर्तन होते हैं, जिससे कि नाम अपने पुराने रूप को त्यागकर एक नया रूप ले लेते हैं । जैसे - पाश्चात्य देश में एक स्थान का नाम "ब्लूडी प्वाइंट" है, जब कि उस स्थान का नाम दो व्यक्तियों के साधारण झगड़े के कारण पड़ोसी व्यक्तियों द्वारा रक्खा गया और वहां रक्त की एक बूंद भी नहीं गिरी ।[1] ध्वनि साम्य के कारण अनेक स्थान-नाम अपना नवीन अस्तित्व ग्रहण करते हैं । जैसे - कुछ लोग गॉन्धार को आज कल का कन्दहार मानते हैं । यह पहिचान ध्वनि साम्य के कारण ही की गई है । गान्धार महाभारत के गन्धर्व देश का अथ पाठ है, जब कि कन्दहार "अलक्सान्द्रियां" का परिवर्तित रूप है । अलक्सांदर नामक व्यक्ति ने अलक्सांद्रिया नगरी बसाई । अलक्सांद्रियां घिसकर अलकन्द हो गया । संस्कृत में जिले को आहार कहते हैं । अलकन्द प्रदेश का अलकन्दहार कहलाया और वही नाम आगे कन्दहार हो गया ।[2] इस प्रकार गान्धार और कन्दहार दो पृथक-पृथक स्थान हैं, पर ध्वनि साम्य ने उन्हें एक बना दिया ।[3]

स्थान-नामों के लिये प्रयुक्त शब्दों के ध्वनि परिवर्तन में न केवल जनव्युत्पत्ति का हाथ रहता है, बल्कि भ्रामक व्युत्पत्ति भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। इसी कारण कभी-कभी एक ही स्थान-नाम के नामकरण में विभिन्न व्युत्पत्तियां प्रचलित हो जाती हैं । कई विद्वान खलौटी का अर्थ खाले(नीचे) स्थान से लगाते हैं। विलासपुर रिपोर्ट सन 1866 के अनुसार छत्तीसगढ़ को खुलौटी कहा जाता है । वे खुलौटी शब्द की व्युत्पत्ति

1- जार्ज स्टीवर्ट - नैम्स ऑन दी लैण्ड, पृष्ठ - 65 ।

2- नागरी प्रचारिणी पत्रिका संवत 2018, पृष्ठ - 14 ।

3- डा0(श्रीमती)यामिनी-स्थान-नामों का व्युत्पत्तिगत,ऐतिहासिक एंव सांस्कृतिक अनुशीलन , पृष्ठ - 28 ।

कूल {बहुत} से मानते है । उनका कहना है, कि यह वह देश है, जहाँ से बंजारा लोग बैलों के द्वारा अतिशय धन लाते हैं , वे इसे खुलौटी अर्थात अतिशय उपज की भूमि कहते हैं । इसके विरुद्ध हमारे विद्वान लेखकों का मत है, कि 'खलौटी' शब्द की व्युत्पत्ति रायपुर की प्राचीन राजधानी अलक वाटिका से माननी चाहिए ।[1]

स्थान-नामों की व्युत्पत्तिगत प्रकृति नामों की प्राचीनता पर भी प्रकाश डालती है । स्थान-नामों में प्रयुक्त प्रत्यय व परसर्ग स्वयं कालविशेष के द्योतक हैं । वैदिक काल में 'पुर' पद का प्रयोग बड़े-बड़े नगरों के लिए होता था, परन्तु बाद में यह छोटे - छोटे ग्रामों के लिए भी प्रयुक्त होने लगा । प्राकृतकाल में यही 'पुर' 'उर' में परिवर्तित हो गया, जिसका हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में भी पर्याप्त प्रयोग हुआ है ।

--------o--------

1-डा0 भालचन्द्र रावत तैलंग - छत्तीस गढ़ी, भतरी, हल्बी बोलियों का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन , पृष्ठ - 12 ।

अध्याय ४ : स्थान-नामों का पद, पदांश व ध्वनिपरक अध्ययन तथा आक्षरिक स्वरूप

अध्याय 4 : स्थान-नामों का पद, पदांश व ध्वनिपरक अध्ययन तथा आक्षरिक स्वरूप

4-1 स्थान-नामों में प्रयुक्त प्रत्यय:- स्थान-नामों की अध्ययन पद्धति व्यक्ति-नामों की अध्ययन पद्धति से भिन्न है । मूल शब्द के साथ निवास वाचक पद या पदांश का संश्रय नाम को स्थान-नाम की साभिप्रायता से युक्त करता है । पाणिनि के अनुसार व्याकरण की माँग है, कि निवास के विशेष अर्थ को प्रकट करने के लिए मूल शब्द में प्रत्यय लगाना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है । साथ ही उनका यह मत है, कि स्थान-नामों में प्रत्यय लगता तो अवश्य है, परन्तु कहीं-कहीं उसका लोप हो जाता है ।[1]

स्थान-नामों में प्रयुक्त प्रत्यय क्षेत्र विशेष की भाषा, काल, संस्कृति तथा धर्म आदि विशिष्टताओं को अन्तर्भूत किये हुये विविध स्थितियों का ज्ञान कराते हैं । रूप - रचना की दृष्टि से हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों को यौगिक, सामासिक, एकपदीय, द्विपदीय एंव बहुपदीय आदि प्रकरणों में सीमा बद्ध किया जा सकता है । स्थान-नामों में प्राय: पूर्व पद की अपेक्षा परपद का प्रयोग अधिक होता है । नामों की यह प्रवृत्ति हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में भी प्रतिलक्षित है । प्रारम्भिक अवस्था में हमीरपुर - जनपद के स्थान-नामों में प्रयुक्त प्रत्यय अर्थ से संयुक्त सशक्त पद थे, परन्तु शनै: शनै: घिस-घिस कर यह निवास वाचक पद या पदांश प्रत्ययवत रूढ़ हो गये । स्थान-नामों में प्रयुक्त प्रत्यय प्राय: निवास वाचक पद या पदांश के परिवर्तित रूप हैं । राहुल सांकृत्यायन के अनुसार स्थान-नामोंमें प्रयुक्त प्रत्यय का प्राय: निवास वाचक पद या पदांश से सम्बन्ध होता है । अत: स्थान-नामों के अध्ययन के क्षेत्र में प्रत्ययों का मूल निवास वाचक पद या पदांश में खोजा जा सकता है ।

1- डॉ० बासुदेव शरण अग्रवाल - पाणिनि कालीन भारतवर्ष , पृष्ठ - 37

हमीरपुर जनपद के यौगिक स्थान-नामों के अन्तर्गत कुछ स्थान-नाम प्रत्यययुक्त तथा कुछ उपसर्ग युक्त हैं । यौगिक स्थान-नामों में प्रकृति प्रत्यय का समन्वय होता है। हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में निम्न प्रत्ययों का संयोग हुआ है :-

4-1-1 आ - स्थान-नामों में प्रयुक्त यह प्रत्यय संस्कृत 'आकाय' का परिवर्तित रूप है, जिसका अर्थ है, निवास-स्थान ।[1] जनपद के विभिन्न स्थान-नामों के अन्त में "आ" प्रत्यय जुड़कर नामकरण हुआ है । यथा - अतरा

पिपरा

4-1-2 आना - यह प्रत्यय संस्कृत "आपि" का विकसित रूप है जिसका अर्थ है, किनारा हद या सीमा । इसका प्रयोग जनपद के विभिन्न स्थान-नामों में हुआ है।

यथा - बराना
छटकाना

4-1-3 आर, आरा, आरी, आई- ये प्रत्यय संस्कृत "अवार" के परिवर्तित रूप हैं, जिसका अर्थ नदी के इस ओर का किनारा होता है ।[2] आर, आरा, आरी, आई का विकास - क्रम इस प्रकार है-

सं0 अवार > वार > आर > आरा
सं0 अवार > वारी > आरी > आई

हमीरपुर जनपद में आर प्रत्यान्त स्थान-नाम पुलिंग वाची एवं आरी प्रत्यान्त स्त्रीलिंग वाची नाम हैं ।

यथा- पचारा
रिछारा
सतारी
सुकलारी

इसी प्रकार अतरार एवं उमराई क्रमशः 'आर' और 'आई' प्रत्यान्त स्थान-नाम हैं।

1- डा0 (श्रीमती) यामिनी - स्थान-नामों का व्युत्पत्तिगत, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन, पृष्ठ - 33

2- श्री मोनियर मिलयर्स - संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी, पृष्ठ - 104

4-1-4 आला- यह स्थान-नाम वाचक प्रत्यय है, जिसका सम्बन्ध संस्कृत "आलय" (घर) से होता है ।[1] जनपद में आला प्रत्यय युक्त स्थान-नाम अल्प मात्रा में प्राप्त होते हैं ।

यथा- जलाला - जल + आलय (घर)

4-1-5 इया- "इया" प्रत्यय के कर्तृवाचक संज्ञा, गुणवाचक विशेषण, देशवासी वाचक शब्द, संज्ञाओं के लघुता बोधक आदि पद निष्पन्न होते हैं।[2] इया प्रत्यय का विकास संस्कृत इय, ईय या इक से माना गया है ।[3] प्रत्यय की उत्पत्ति क्रमशः सं० इक > प्रा०अप० इअ > आ से हुई है । लघुता बोधक इया की व्युत्पत्ति सं० इका, स्त्रीलिंग प्रत्यय तथा गुणवाची विशेषण का विकास सं० इक से माना गया है ।[4]

हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में यह प्रत्यय बहुलता से मिलता है ।

यथा - उमरिया
इटैलिया
कुम्हरिया

4-1-6 ई - यह आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का सर्वाधिक प्रचलित प्रत्यय है ।[5] इस प्रत्यय से क्रिया शब्दों से भाव वाचक तथा करणवाचक संज्ञायें, संज्ञाओं से विशेषण, लघु व्यापार वाचक व भाव वाचक संज्ञायें और संख्यावाचक विशेषणों से समुदाय वाचक तथा भाव वाचक संज्ञायें निर्मित होती हैं ।[6]

1- डा० (श्रीमती) उषा चौधरी-मुरादाबाद जिले के स्थान-नाम: एक भाषा वैज्ञानिक - अध्ययन , पृष्ठ - 96 ।

2- डा० उदयनारायण तिवारी - हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, पृष्ठ-404,405

3-डा० धीरेन्द्र वर्मा-हिन्दी भाषा का इतिहास, पृष्ठ - 234

4- डा० उदयनारायण तिवारी - हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, पृष्ठ-405

5- डा० धीरेन्द्र वर्मा-अवधके स्थान-नाम, पृष्ठ - 177

6- डा० उदयनारायण तिवारी - हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, पृष्ठ - 405

संस्कृत के कई प्रत्ययों का विकास हिन्दी 'ई' रूप में होने से इसका प्रयोग क्षेत्र बहुत विस्तृत है । उदाहरण के लिए सं० इन, ईय, इक तथा स्त्रीलिंग वाची 'ई' प्रत्यय का विकास भी संस्कृत इक से हुआ है । कुछ संज्ञाओं में यह संस्कृत के तत्सम 'ई' प्रत्यय के रूप में भी प्राप्त होता है ।

हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में 'ई' प्रत्यय का प्रयोग इस प्रकार हुआ है ।
यथा - पिपरी
उमरी

4-1-7 इल -"इल" प्रत्यय संस्कृत के "इला" का परिवर्तित रूप है, जिसका अर्थ पृथ्वी होता है । हमीरपुर जनपद में इटायल तथा सरीला 'इल' प्रत्यान्त स्थान-नाम हैं ।
यथा - इटायल - इष्टू > इष्टक > इटा + इल
सरीला- सिल्लल + इला

4-1-8 उआ, उवा, औवा- उआ प्रत्यय से अनेक संज्ञा एवं विशेषण पद निष्पन्न होते हैं। इसका सम्बन्ध सं० उक > प्रा० उअ से है ।[1] जो हिन्दी में उआ दीर्घ रूप में आया है । जनपद के विभिन्न स्थान-नामों में इनका प्रयोग इस प्रकार हुआ है ।
यथा - रिरुआ
कनकुआ
किल्हौवा

4-1-9 उ - इस प्रत्यय की व्युत्पत्ति डा० धीरेन्द्र वर्मा, हार्नले के मतानुसार संस्कृत 'क' सहित 'तृक' से मानते हैं । 'तृक' प्रा० ऋ व उ में मानते हैं, जो आगे चलकर 'उ' या 'उओ' हो जाता है ।[2] इस प्रत्यय से स्वभाव व गुणवाची संज्ञायें निष्पन्न होती हैं ।

हमीरपुर जनपद में केवल एक स्थान-नाम में इस प्रत्यय का प्रयोग हुआ है ।
यथा - ककरउ - कंकड़ > ककर + उ

1- डा० उदयनारायण तिवारी - हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, पृष्ठ-405

2- डा० धीरेन्द्र वर्मा - हिन्दी भाषा का इतिहास, पृष्ठ - 228

4-1-10 ऐरा, ऐरी - ऐरा, ऐरी प्रत्यय संस्कृत "इरा" का परिवर्तित रूप है, जिसका है पृथ्वी या भूमि ।[1] हमीरपुर जनपद में इन प्रत्ययों का प्रयोग निवास सूचक अर्थ में हुआ है । यथा -

छटेरा - सं० छट्ट: > छट + इरा

बड़ेरा - " वट > वड़ + इरा

कनेरी - " कर्ण > कन + इरा

4-1-11 एछा - एछा प्रत्यय संस्कृत "कच्छक" का परिवर्तित रूप है, जिसका अर्थ "स्थान" होता है ।[2] जनपद में बहुत ही कम स्थान-नाम "एछा" प्रत्यय युक्त हैं -

यथा - बरकेछा - सं० वट बड़ + कच्छक

4-1-12 ऐड़ा, ऐड़ी - हिन्दी के ऐड़ा, ऐड़ी प्रत्यय की व्युत्पत्ति 'ऐरा' के सदृश संस्कृत से ही मानते है ।[3] अत: ऐड़ा प्रत्यय को भी हम "इरा" का रूपान्तर "आ" पुलिंगवाची तथा "ई" स्त्रीलिंग वाची प्रत्यय युक्त मान सकते हैं ।

जनपद के स्थान-नामों में ऐड़ा , ऐड़ी प्रत्यय इस प्रकार प्रयुक्त हुए हैं ।

यथा - सरसेड़ा - सं० शिरीष > सिरस + इरा

मगरेड़ी - " मर्कट > मकर > मगर + इरा

4-1-13 ऐन,ऐना,ऐनी- इन प्रत्ययों का विकास क्रमश: संस्कृत, प्राकृत व हिन्दी में अयन > अयण > ऐन के रूप में हुआ है । "अयन" का अर्थ होता है घर ।[4] यह आवास बोधक प्रत्यय है । ऐना तथा ऐनी, ऐन प्रत्यय के ही "आ" व "ई" ध्वनि युक्त रूपान्तर है, जो हमीरपुर जनपद के निम्न स्थान-नामों में प्राप्त होते हैं ।

यथा - सिंधेन

सैना

पुरैनी

1- डा० (श्रीमती) यामिनी-स्थान-नामों का व्युत्पत्तिगत, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन, पृष्ठ - 36

2- डा० वासुदेव शरण अग्रवाल - पाणिनि कालीन भारतवर्ष , पृष्ट - 79

3- डा० धीरेन्द्र वर्मा - हिन्दी भाषा का इतिहास, पृष्ट - 236

4- डा० धीरेन्द्र वर्मा - अवध के स्थान - नाम , पृष्ठ - 15

4-1-14 ऐटा,ऐठा- इन प्रत्ययों का विकास संस्कृत"आवेष्टन" से हुआ है, जिसका अर्थ होता है आवृत्त करना ।[1] इन प्रत्ययों का प्रयोग जनपद के केवल दो स्थान-नामों में हुआ है ।

यथा - लेटा
कुनैठा

4-1-15 एल,ऐला,ऐली- इन प्रत्ययों का सम्बन्ध संस्कृत प्रत्यय 'इल' प्रा० इल्ल > एल से माना गया है ।[2] सं० इला का अर्थ पृथ्वी होता है । अतः स्थान-नामों में भी यह प्रत्यय भू-खण्ड द्योतक है । ऐला व एली में क्रमशः 'आ' तथा 'ई' ध्वनियां क्रमशः पुलिंग व स्त्रीलिंग बोधक हैं । इन प्रत्ययों से युक्त कतिपय स्थान-नाम निम्न हैं ।

यथा - बरेल
बसेला
कुसमेली

4-1-16 ओखर - इस प्रत्यय की व्युत्पत्ति सं० 'पुष्कर' से मानते हैं । इसका विकास क्रम इस प्रकार है - सं० पुष्कर> पोखर > ओखर । हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में इसका प्रयोग हुआ है ।

यथा - बड़ोखर
इलोखर

4-1-17 औली,औल,औला,आली - औली प्रत्यय संस्कृत "अवली" का परिवर्तित रूप है, जिसका अर्थ होता है पंक्ति अथवा समूह ।[3] औल,औला भी 'अवली' से ही सम्बन्धित हैं । स्थान विशेष की बोली के आधार पर शब्दों का विभिन्न रूपों में विकास होता है । अतः 'औली' प्रत्यय के ही विभिन्न रूपान्तर क्रमशः औली,ओला,औल,औला आदि रूपों में प्राप्त होते हैं ; जो देशज प्रत्ययों के रूप में हिन्दी की श्रीवृद्धि करते हैं । इनमें -

---

1-डा०(श्रीमती)उषा चौधरी-मुरादाबाद जिले के स्थान-नाम:एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृष्ठ - 99

2-डा० उदयनारायण तिवारी-हिन्दी भाषा का उद्गम औरविकास, पृष्ठ - 406

3- डा०(श्रीमती)उषाचौधरी-मुरादाबादजिले के स्थान-नाम:एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृष्ठ - 95

अन्तर केवल इतना है कि "औली" तथा "ओली" प्रत्यय स्त्रीलिंग वाचक हैं, जबकि "ओला" व औला" पुल्लिंग वाचक हैं ।

"आली" भी समूहवाचक प्रत्यय है, जिसका सम्बन्ध संस्कृत "अवली" से ही माना गया है ।[1] कहीं - कहीं इसका सम्बन्ध सं० "अली" से भी जोड़ा जाता है, परन्तु हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में यह आली रूप में ही प्राप्त होता है, अली रूप में नहीं । इस वर्ग के अन्य प्रत्ययों की भाँति इसकी व्युत्पत्ति भी "अवली" से ही उचित प्रतीत होती है । हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में इन प्रत्ययों का प्रयोग इस प्रकार हुआ है ।

यथा - औली - गहरौली
छुरौली
औल - मगरौल
बागौल
औला - गिरौला
जरौला
आली - रिठाली

4-1-18 औना, औनी- औना, औनी प्रत्यय संस्कृत "अवनि" के विकसित रूप हैं, जिसका अर्थ भू-खण्ड होता है।[2] हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में इसका प्रयोग निवास बोधक के प्रत्यय के रूप में हुआ है ।

यथा- अकौना - अर्क > अक + अवनि
भिलौनी - भिल्ल > भिल + अवनि

4-1-19 और, औरा, ओरा, औरी-"और शब्द सामान्यतः संस्कृत "अपर" से विकसित एक संयोजक शब्द है, परन्तु स्थान-नामों में इसका प्रयोग "पर" प्रत्यय के रूप में किया जाता है । इस दृष्टि से इसें "पुर" का विकसित रूप मानते है।[3] "पुर" की प्र अ उ र

1- डा० उदयनारायण तिवारी-हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, पृष्ठ -403

2- डा० (श्रीमती) यामिनी-स्थान-नामों का व्युत्पत्तिगत, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक-अनुशीलन, पृष्ठ - 37

3- डा० (श्रीमती) उषा चौधरी - मुरादाबाद जिले के स्थान-नाम: एक भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन, पृष्ठ - 97

ध्वनियों में अन्तिम तीन ध्वनियों का अ उ र - 'और' रूप में विकास हुआ है । औरा औरा, औरी प्रत्ययों का विकास 'और' प्रत्यय से ही हुआ है ।

जनपद के स्थान-नामों में इनका प्रयोग इस प्रकार हुआ है ।

यथा - और - इकठौर

औरा - कैथौरा

औरा - इटौरा

औरी - बम्हौरी

4-1-20 औत - औत प्रत्यय संस्कृत " आवर्त " का परिवर्तित रूप है, जिसका अर्थ बस्ती या घनी आबादी है।[1] इसका प्रयोग हमीरपुर जनपद के केवल एक ही स्थान-नाम में हुआ है ।

यथा - खण्डौत खण्ड + आवर्त

4-1-21 औई- यह संस्कृत 'वर्ती' का परिवर्तित रूप है, जिसका अर्थ है-स्थिर रहने वाला इसका विकास क्रम इस प्रकार है ।

सं० वर्ती > आती > औती > औई

'औई' प्रत्यय जनपद के केवल एक ही स्थान-नाम में प्रयुक्त हुआ है ।

यथा - खौई

4-1-22 औंद, औंदा, औधा- औंद प्रत्यय संस्कृत "पद्र" का परिवर्तित रूप है, जिसका अर्थ गाँव होता है ।[2] बुन्देली में इसी 'औंद' का ध्वनि साम्य के कारण 'औंदा' तथा 'औधा' हो गया है ।

हमीरपुर जनपद के केवल एक एक स्थान-नाम में इन प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है-

यथा- औंद - गहलौंद

औंदा - पिपरौंदा

औधा - सिकरौधा

1- श्री रामचन्द्र वर्मा - मानक हिन्दी कोश , पृष्ठ 19

2- डा० (श्रीमती) यामिनी-स्थान-नामों का व्युत्पत्तिगत, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक - अनुशीलन, पृष्ठ - 37 ।

4-1-23 का,की - डा0 चटर्जी के अनुसार यह 'अत्' अन्त वाले क्रिया रूपों में 'कृत' के योग से बना था । प्राकृत में 'अक' रूप मिलता है, अत: इसकी व्युत्पत्ति संस्कृत "कृत" से मानी जा सकती है ।[1] 'क' और 'अक्' की व्युत्पत्ति सं0 'कृत' से तथा इस पर अ-क् का प्रभाव भी हो सकता है । यह विशेषणीय तथा स्वार्थी प्रत्यय है ।[2] हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में 'का', 'की' प्रत्यय कम मात्रा में प्रयुक्त हुए हैं । इनमें 'का' प्रत्यय पुलिंग तथा 'की' प्रत्यान्त स्त्रीलिंग शब्द है ।

यथा - बेहरका

छपकी

4-1-24 करा,करी- स्थान-नामों में प्रयुक्त करा,करी प्रत्यय सं0 "खेट" का परिवर्तित रूप है , जिसका विकास क्रम इस प्रकार है ।

सं0 खेट > खेड़ा > खेरा > खरा > करा > करी

हमीरपुर जनपद के अत्यन्त कम स्थान-नामों में ही 'करा','करी' प्रत्यय प्रयुक्त हुए हैं । यथा -

मुस्करा

सिकरी

4-1-25 खर, खरी - ये प्रत्यय भी संस्कृत "खेट" के ही परिवर्तित रूप हैं ,जिसका विकास क्रम इस प्रकार हैं ।

सं0 खेट > खेड़ा > खेरा > खरा > खरी > खर

हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में इनका प्रयोग इस प्रकार हुआ हैं -

यथा - जराखर

विदोखरी

4-1-26 गवाँ,गुवाँ,वाँ,याँ - ये समस्त प्रत्यय संस्कृत "ग्राम" के परिवर्तित रूप हैं, जो जनपद के विभिन्न स्थान-नामों में प्रयुक्त हुए हैं ।[3]

1-डा0 धीरेन्द्र वर्मा-अवध के स्थान-नाम , पृष्ठ-187 ।

2-डा0 उदयनारायण तिवारी - हिन्दी भाषा का उदगम और विकास , पृष्ठ-409

3-डा0 (श्रीमती) यामिनी - स्थान-नामों का व्युत्पत्तिगत, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक-अनुशीलन , पृष्ठ - 38

यथा - गवाँ - करगवाँ
गुवाँ - सतगुवाँ
वाँ - भिलवाँ
याँ - पुरैनियाँ

4-1-27 ना,नी - इन प्रत्ययों के सम्बन्ध में हार्नले का मत मान्य है । उनके मतानुसार ना,नी प्रत्ययों का सम्बन्ध संस्कृत "अनीय" प्रा0 'अणाअ' से जोड़ा गया है । इसी मत को डा0 धीरेन्द्र वर्मा ने भी माना है । स्त्रीलिंग बोधक बहुत सी संज्ञाओं में संस्कृत 'इन' का भी प्रभाव माना जाता है ।[1] 'ना' प्रत्यय पुलिंग तथा 'नी' प्रत्यय स्त्रीलिंग द्योतक है । हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में इनका प्रयोग इस प्रकार हुआ है ।

यथा - उरदना
सिवनी

4-1-28 ल, ला, ली - 'ल' संस्कृत का विशेषण प्रत्यय है । यह प्रत्यय स्थान-नामों में तत्सम रूप में ही अपनाया गया है । ल + ई = ली स्त्रीलिंग वाची प्रत्यय हैं । 'आ' ध्वनि युक्त प्रत्यय विशेषण वाची है । कुछ विद्वानों ने इसका सम्बन्ध इल > प्रा0 इल्ल से माना है ।[2] 'ला', 'ली' आदि प्रत्यय 'ल' के ही रूपान्तर हैं, जिनमें क्रमशः आ,ई आदि ध्वनियों का संयोग है । हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में इनका प्रयोग हुआ है ।

यथा - ल - धौहल
ला - जल्ला
ली - चिल्ली

4-1-29 वर,वरी,वरा,वारा,वारी - वर,वरी,वरा प्रत्यय संस्कृत के "पुर" का विकसित रूप है,[3] जिनका प्रयोग जनपद के स्थान-नामों में इस प्रकार हुआ है ।

यथा - वर - गिरवर
वरी - स्यावरी
वरा - भटेवरा

1- डा0धीरेन्द्र वर्मा-हिन्दी भाषा का इतिहास , पृष्ठ - 240

2- वही , पृष्ठ - 241

3- डा0{श्रीमती}यामिनी-स्थान-नामों का व्युत्पत्तिगत ,ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक-अनुशीलन , पृष्ठ - 39

इसी प्रकार वारा,वारी प्रत्ययों का सम्बन्ध हिन्दी 'वाला' प्रत्यय से है । इनकी व्युत्पत्ति संस्कृत "पाल" से मानी जाती है ।[1] हिन्दी में 'वाला' प्रत्यय कर्तृवाचक अर्थ में प्रयुक्त होता है । 'वारा' प्रत्यय योग से भाव वाचक संज्ञा पद व्युत्पन्न होते हैं ।[2] इस प्रकार 'वाला' प्रत्यय से वारा,वारी क्रमशः पुलिंग व स्त्रीलिंग वाची प्रत्यय हैं । हमीरपुर जनपद में 'ल' को 'र' बोलने की प्रवृत्ति उच्चारण में प्राप्त होती है । इन प्रत्ययों के प्रयोग इस प्रकार हैं ।

यथा - वारा - भरवारा
वारी - निबवारी

4-1-30 सेड़ा - सेड़ा प्रत्यय "खेड़ा" का पर्यायवाची है,जिसमें 'स' ध्वनि का उच्चारण 'ख' की भाँति हुआ है । हमीरपुर जनपद के केवल एक स्थान-नाम में इसका प्रयोग मिलता है । यथा - सरसेड़ा

4-1-31 हरा, हरी - हरा , हरी प्रत्यय संस्कृत "गृह" का विकसित रूप है, जिसका प्रयोग जनपद के स्थान-नामों में आवास बोधक प्रत्यय के रूप में हुआ है ।

यथा - हरा - पचहरा
हरी - गौरहरी
बिलहरी

4-1-32 हट,हटा,हटी - ये प्रत्यय संस्कृत "हट" के विकसित रूप हैं, जिसका अर्थ 'बाजार' होता है । अतः व्यापारिक स्थान-नामोंमें इनका प्रयोग हुआ है ।

यथा - हट - उमराहट
हटा- मलेहटा
हटी- मरेहटी

1- डा० धीरेन्द्र वर्मा - हिन्दी भाषा का इतिहास , पृष्ठ - 242

2- डा० मुरारीलाल उप्रेती - हिन्दी में प्रत्यय विचार , पृष्ठ - 150 ।

4-2 : स्थान-नामों में प्रयुक्त उपसर्ग:- हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में निम्न - लिखित उपसर्गों का प्रयोग हुआ है -

4-2-1 अ - यह संस्कृत का तत्सम उपसर्ग है, जो प्राय: अभाव अथवा निषेध सूचित करने के लिए संज्ञा या विशेषण पदों में प्रयुक्त होता है एवं अर्थ परिवर्तन करता है । जनपद के स्थान-नामों में इसका प्रयोग इस प्रकार हुआ है ।

यथा - अराजी धनपुरा
अराजी मुतनजिया पधरी

4-2-2- कै - यह उपसर्ग संस्कृत के "कति" से सम्बन्धित है । इसका विकास क्रम इस प्रकार है - सं० कति > प्रा० कई > हिन्दी कै ।[1] इसका हिन्दी में विशेषण 'कितना' के अर्थ में प्रयोग किया जाता है ।

यथा - कैमाहा
कैथा सदर

4-2-3 कम - कम फारसी का शब्द है, जिसका अर्थ "न्यून" होता है । इसका प्रयोग जनपद के स्थान-नामों में इस प्रकार हुआ है ।

यथा - कमाला

4-2-4 नि - इस उपसर्ग की व्युत्पत्ति हिन्दी में सं० "निर" से 'नि' के रूप में हुई है, अत: यह तद्भव उपसर्ग है । यह उपसर्ग किसी वस्तु के अभाव का द्योतक है । हमीरपुर जनपद के अत्यधिक कम स्थान-नामों में इसका प्रयोग हुआ है ।

यथा - निबवारा

4-2-5 लम - लम उपसर्ग हिन्दी "लम्बा" के रूप में यौगिक शब्दों के प्रारम्भ में प्रयुक्त होने वाला संक्षिप्त रूप है । हमीरपुर जनपद के लम्बे जलाशय वाले केवल एक स्थान-नाम में 'लम' का प्रयोग हुआ हैं ।

यथा - लमौरा

1- संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर - काशी नागरी प्रचारिणी सभा, पृष्ठ - 260

4-2-6 सु - यह संस्कृत तत्सम उपसर्ग है, जो अच्छा, श्रेष्ठता या सहज के अर्थ में प्रयोग किया जाता है ।[1] यह अधिकांश संज्ञा एंव क्रिया शब्दों के साथ प्रयुक्त होता है । हमीरपुर जनपद के सुगिरा, सकौरा, सुरहा आदि स्थान-नाम "सु" उपसर्ग युक्त हैं ।

4-3 स्थान-नामों में प्रयुक्त परपद:- हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में भिन्नार्थक शब्दों के संयोग से अनेक स्थान-नामों की सर्जना हुई है । इन स्थान-नामों में भिन्न अर्थ वाले अनेक शब्दों का परिपद एंव पूर्व पद के रूप में प्रयोग हुआ है, जिनमें संस्कृत, अरबी, फारसी आदि भाषाओं के शब्द हैं । मुख्य रूप से ये परपद निम्नलिखित हैं ।

4-3-1 पुर, पुरा, पुरी-"पुर" संस्कृत तत्सम रूप है जो नगर, कस्बा अथवा शहर के अर्थ में प्रयुक्त होता है । यह अत्यन्त प्राचीन शब्द है, जिसका प्रयोग वैदिक कालीन माना गया है ।[2] जनपद के द्विपदीय स्थान-नामों में सर्वाधिक संख्या में पुर, पुरा का परपद रूप में प्रयोग हुआ है । ये स्थान-नाम अधिकांशतया व्यक्ति परक हैं ।

यथा - पुर - जलालपुर
पुरा - कीरतपुरा
पुरी - सुदामापुरी

4-3-2 गांव, गवां - गांव संस्कृत "ग्राम" का विकसित रूप है। गांव शब्द छोटी बस्ती खेड़ा या खेतिहरों के घरों के लिए प्रयुक्त होता है ।[3] गांव का ही क्षेत्रीय परिवर्तित रूप गवां है । जनपद के स्थान-नामों में गांव तथा गवां परपद का प्रयोग इस प्रकार हुआ है ।

यथा - गांव - अमगांव
गवां - मझगवां

1- डा० (श्रीमती) उषा चौधरी - मुरादाबाद जिले के स्थान-नाम: एक भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन, पृष्ठ - 93 ।

2- डा० सरयूप्रसाद अग्रवाल - अवध के स्थान-नामों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन (डी० लिट० प्रबन्ध अप्रकाशित, पृष्ठ - 226)

3- डा० (श्रीमती) उषा चौधरी - मुरादाबाद जिले के स्थान-नाम: एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृष्ठ - 148

4-3-3 खेड़ा, खेरा, खेरी - 'खेड़ा' संस्कृत "खेट" का विकसित रूप है, जिसका अर्थ है, छोटा गांव । 'खेरी' शब्द खेड़ा का रूपान्तर है, जिसमें स्त्रीलिंग वाची ई प्रत्यय का योग है । 'खेड़ा' की अपेक्षा खेरी पद छोटी बस्तियों के लिये प्रयुक्त होता है । परपद के रूपमें जनपद के स्थान-नामों में इनका प्रयोग निम्न रूप से प्राप्त होता है -

खेड़ा - इमली खेड़ा
खेरा - बड़खेरा
खेरी - खेरा खेरी

4-3-4 नगर - 'नगर' संस्कृत तत्सम शब्द है, जिसका प्रयोग गांव या कस्बे से बड़ी बस्तियां जिनमें अनेक जाति के लोग रहते है, नगर कहलाती हैं । नगर का प्रयोग अति प्राचीन माना गया है । पाणिनि के अनुसार भारत के पूर्वी एंव पश्चिमी समस्त भागों में नगर शब्द के प्रयोग प्राप्त होते हैं । प्राचीन काल में यह पद बड़े-बड़े नगरों के लिए प्रयुक्त होता था, परन्तु अब यह छोटे-छोटे ग्रामों के लिए प्रयुक्त होने लगा है । हमीरपुर जनपद के केवल दो स्थान-नामों में इसका प्रयोग प्राप्त होता है । यथा -

बीजा नगर
श्री नगर

4-3-5 गंज - यह फारसी शब्द है, जिसका प्रयोग गल्ले की मण्डी, बाजार, झुण्ड आदि अर्थों में होता है। यह परपद कहीं संयुक्त रूप में तथा कहीं स्वतंत्र रूप में प्रयुक्त हुआ है ।

यथा- जार्डिन गंज
मिल्टेन गंज
इटौरा गंज

4-3-6 गढ़, गढ़ा, गढ़ी - 'गढ़' संस्कृत शब्द हैं, जिसका अर्थ किला, कोट या खाई होता है। पहले राजाओं के किले गढ़ कहलाते थे । कालान्तर में गढ़ नष्ट-भ्रष्ट हो गये । उन स्थान पर बस्तियां बस जाने से "गढ़" स्थान वाची परपद के रूप में प्रयुक्त होने लगे एंव गढ़ के पूर्व पद के रूप में तत्सम्बन्धित व्यक्ति, राजाओं, नवाबों आदि के नाम संयुक्त कर लिये

1-डा0 [श्रीमती] उषा चौधरी-मुरादाबाद जिले के स्थान-नाम: एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन पृष्ठ - 157 ।

गये । गढ़ा और गढ़ी क्रमशः गढ़ का ही पुलिंग एंव स्त्रीलिंग रूप है तथा क्षेत्रीय रूपान्तर है । इनका प्रयोग हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में इस प्रकार हुआ है -

यथा - गढ़ - रामगढ़

गढ़ी - पहाड़ी गढ़ी

गढ़ा - गढ़ा

4-3-7 आबाद - 'आबाद' फारसी शब्द है, जो मनुष्यों की बस्ती के अर्थ में प्रयुक्त होता है । आबाद का परपद रूप अत्यन्त प्राचीन है तथा मुस्लिम शासन की देन है।[1] अन्य स्थान बोधक शब्दों की भाँति आबाद का स्वतंत्र प्रयोग स्थान-नामों में प्राप्त नहीं होता तथा पूर्वपद रूप में भी प्रयुक्त नहीं हुआ, बल्कि हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में आबाद परपद रूप में प्रयुक्त हुआ है । यथा -

पठारी - नैाआबाद

बहादुर नवाबाद

4-3-8 बुजुर्ग - यह फारसी शब्द है, जो बृद्ध या बड़े व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है, परन्तु हमीरपुर जनपद में श्रेष्ठ , अच्छी, कमजोर एंव पुरानी भूमि के विभिन्न अर्थों में बुजुर्ग शब्द का प्रयोग हुआ है । इस प्रकार की भूमि पर बस जाने से तत्सम्बन्धित स्थान-नाम में बुजुर्ग परपद रूप में प्रयुक्त हुआ है ।

यथा - इटौरा बुजुर्ग

रगौली बुजुर्ग

4-3-9 कलाँ - यह फारसी का शब्द है, जो दीर्घाकार स्थान के लिए प्रयोग किया जाता है ।[2] हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में यह परसर्ग इस प्रकार प्रयुक्त हुआ है।

यथा - बम्हौरी कलाँ

मगरौल कलाँ

1-डा0 सरयू प्रसाद अग्रवाल - अवध के स्थान-नामों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन (डी०लिट् प्रबन्ध अप्रकाशित, पृष्ठ - 310)

2- डा0(श्रीमती)यामिनी - स्थान-नामों का व्युत्पत्तिगत, ऐतिहासिक एंव सांस्कृतिक अनुशीलन, पृष्ठ - 43 ।

4-3-10 खुर्द - यह भी फारसी शब्द है, जो "कलाँ" का विलोम है तथा जिसका अर्थ छोटा या लघु होता है । भूमि के आकार की छोटाई , बड़ाई बतलाने के लिए तुलनात्मक विवेचना में खुर्द का प्रयोग होता है । जनपद के स्थान-नामों में खुर्द का प्रयोग इस प्रकार हुआ है ।

यथा - बम्हौरी खुर्द
मगरौल खुर्द

4-3-11 खास - यह अरबी शब्द है,जोमुख्य, प्रधान आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है।[1] किसी वस्तु विशेष की प्रमुखता को प्रदर्शित करने के लिए खास शब्द का प्रयोग होता है। इसी अर्थ में यह स्थान-नामों में परपद रूप में संयुक्त होने लगा ।

यथा - गुढ़ा खास
रघवा खास

4-3-12- राजा-बाजा - हमीरपुर जनपद में राठ तहसील के अन्तर्गत इटैलिया नाम के दो गाँव हैं, जिनमें से एक के साथ राजा तथा दूसरे के साथ बाजा परपद संयुक्त रूप में प्राप्त होता है । इटैलिया राजा जिगनी रियासत के अन्तर्गत थी, इसलिए राजा की सम्पत्ति होने के कारण उसके साथ राजा शब्द जोड़ा गया । इस गाँव में रियासत के समय भाँड़ों की प्रमुखता रही है, इसीलिए इस गाँव को जन सामान्य में भँड़उ इटैलिया भी कहा जाता है ।

इटैलिया बाजा के सम्बन्ध में कहा जाता है, कि बुन्देला शासनकाल में इस गाँव को बाजा नाम के व्यक्ति ने बसाया था , इसलिए उसके साथ बाजा शब्द जोड़ दिया गया । आज भी इस गाँव में उन्हीं के वंशजों की प्रमुखता है,जो लोधी जाति के हैं ।

4-3-13 मउ - यह संस्कृत "मही" का परिवर्तित रूप है, जिसका अर्थ है पृथ्वी । आवास-बोधक परपद के रूप में हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में इसका प्रयोग हुआ है ।

यथा - टीका मउ
लोधा मउ
राजा मउ

1-डा0 [श्रीमती] उषा चौधरी-मुरादाबाद जिले के स्थान-नाम: एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृष्ठ-164 ।

4-3-14 घाट - 'घाट' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत "घट्ट" से है । घाट नदियों, जलाशयों आदि के किनारे वह स्थान होते हैं, जहां लोग नहाते हैं, पानी भरते हैं एंव नावों आदि पर चढ़ने के लिए पक्के स्थान बना लिये जाते हैं । नदियों के किनारे बसने वाली बस्तियों के नाम में घाट शब्द स्थान-बोधक परपद के रूप में जनपद में केवल एक ही स्थान-नाम में प्रयुक्त हुआ है ।

यथा - नारारा घाट

4-3-15 डाँग - 'डाँग' बुन्देली भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है-जंगली स्थान । हमीरपुर जनपद बुन्देलखण्ड का क्षेत्र है, जहां प्राचीन काल में जंगल अधिक थे । अतः स्थान-नामों के साथ भी डाँग शब्द संयुक्त हो गया ।

यथा - करहरा डाँग
नारारा डाँग

4-3-16 खालसा - यह अरबी "खालिस" का विकसित रूप है । राजा के आधिपत्य में रहने वाली भूमि भी खालसा कहलाती है । राज्य की ओर से समय-समय पर अपने भक्तों को पुरस्कार स्वरूप भूमि प्रदान करने की प्रथा रही है । इस प्रकार भूमि के एकाधिकार को व्यक्त करने के लिए खालसा शब्द प्रयोग हुआ है ।[1] इस प्रकार की भूमि पर वस्ती बस जाने से स्थान-बोधक पदों के पश्चात खालसा परपद संयुक्त हुआ ।

यथा - सलैया खालसा
बड़ेरा खालसा

4-3-17 माफ - 'माफ' शब्द "मुक्त" का पर्याय है, जिसका अर्थ छूट होना है । सन 1857 की क्रान्ति में जिन लोगों ने अंग्रेजों की सहायता की थी, उनके गांवोमें अंग्रेजों ने प्रसन्न होकर मालगुजारी माफ कर दी थी , अतः वे स्थान-नाम माफ परपद से संयुक्त हो गये । इसके अतिरिक्त कुछ भूमि बाढ़, अकाल आदि की विपत्तियों के कारण भी

1-डा० धीरेन्द्र वर्मा - अवध के स्थान-नाम, पृष्ठ - 360

समय-समय पर मुक्त कर दी जाती थी, उन स्थानों पर बस्तियां बस जाने से उनके नाम में माफ परपद संयुक्त हो गया ।

यथा - पिपरा माफ
टोला माफ
सरसेड़ा माफ

4-3-18 डाँड़ा - 'डाँड़ा' हिन्दी मूल शब्द "डाँड़" का विकसित रूप है, जिसका अर्थ होता है, कोई ऊँचा स्थान ।[1] स्थिति के अनुसार हमीरपुर जनपद के अनेक स्थान-नामों में डाँड़ा परपद प्रयुक्त हुआ है ।

यथा - चण्डौत डाँड़ा
जमोड़ी डाँड़ा
भिलवां डाँड़ा

4-3-19 दरिया - ऐसे स्थान, जो निचले होते है तथा नदियों की बाढ़ से प्रभावित हो जाते है, दरिया कहलाते हैं । हमीरपुर जनपद में इस प्रकार के परपद युक्त स्थान - नामों की अधिकता है ।

यथा - चण्डौत दरिया
जमोड़ी दरिया
जिटकिरी दरिया

4-3-20 जार - कटीले झाड़-झंखाड़ को बुन्देली में जार कहा जाता है । जो स्थान कटीले झाड़-झंखाड़ को साफ करके एकदम नये सिरे से आबाद किये गये, उनके नामों में जार परपद जुड़ा मिलता है ।

यथा - मवई जार
चन्दौली जार
कलौली जार

4-3-21 तीर - 'तीर' का अर्थ है, किनारा । जो स्थान किसी नदी के तट पर ऊँचाई पर आबाद हैं, उनके नाम के साथ तीर जुड़ा मिलता है । वस्तुतः ये शब्द दरिया

1-डा० {श्रीमती} यामिनी स्थान-नामों का व्युत्पत्तिगत, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक - अनुशीलन , पृष्ठ - 44 ।

का विलोम है, जिसका प्रयोग हमीरपुर जनपद के स्थाननामों में इस प्रकार हुआ हैं । यथा -

कलौली तीर
चन्दौली तीर
चक जमरेही तीर

4-3-22 सैना - 'सैना' संस्कृत के "शयन" शब्द का परिवर्तित रूप है, जिसका अर्थ है, विश्राम । हमीरपुर जनपद के केवल एक ही स्थान-नाम में सैना परपद स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त हुआ है ।

यथा - सैना

पूर्व स्थिति :-

4-3-23 खेरा, खेड़ा - 'खेड़ा' पद संस्कृत "खेट" का विकसित रूप है, जिसका अर्थ है, छोटा गांव । पाणिनि कालीन भारत में कुत्सित नगर खेट कहे जाते थे ।[1] हमीरपुर जनपद में बुन्देली भाषा परिवर्तन के कारण खेड़ा का खेरा हो गया ।

यथा - खेड़ा - खेड़ा सिलाजीत
खेरा - खेरा कलाँ

4-3-24 आराजी - 'आराजी' उर्दू का शब्द है, जिसका अर्थ अंग्रेजी में कृषि भूमि या भूखण्ड होता है ।[2] स्थान-बोधक पूर्व पद के रूप में इसका प्रयोग जनपद के स्थान-नामों में इस प्रकार हुआ है ।

यथा - आराजी बीबी खेरा
आराजी खडेही जार

4-3-25 चक - 'चक' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत "चक्र" से मानी गयी है, जिसका अर्थ जमीन का बड़ा टुकड़ा, पट्टी, छोटा गांव, पुरवा आदि होता है ।[3] एक ही प्रकार

1-डा० सरयूप्रसाद अग्रवाल - अवध के स्थान-नामों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, {डी॰लिट्॰ प्रबन्ध अप्रकाशित, पृष्ठ-336}

2-पं० रामचन्द्र पाठक - आदर्श हिन्दी शब्द-कोष, पृष्ठ- 722 ।

3- संक्षिप्त हिन्दी शब्द - सागर , पृष्ठ - 353 ।

की पड़ी हुई भूमि को भी चक कहा जाता था । धीरे-धीरे मनुष्य अधिकृत एक स्थान का पर जितनी भूमि होती थी, वहाँ समस्त चक शब्द से सम्बोधित होने लगें ।[1]कालान्तर ग में नई भूमि के साथ अन्य पद संयुक्त कर चक पूर्वपद भेद्य रूप में अपनाया गया तथा भेदक तत्वों के साथ मिलकर स्थान-नामों की रचना होने लगी ।

यथा - चक अमरपुरा
चक बाँधुर

4-3-26 मवई - 'मवई' शब्द "मवासी" का परिवर्तित रूप है, जिसका अर्थ है, गढ़ । वह स्थान, जहाँ गढ़ या किला निर्मित किये गये , उन स्थान-नामों के साथ पूर्वपद रूप में मवई शब्द का प्रयोग हुआ । जनपद के स्थान-नामों में कहीं-कहीं इसका प्रयोग स्वतंत्र रूप में तथा कहीं-कहीं संयुक्त रूप में देखने को मिलता है ।

यथा - मवई
मवई खुर्द
मवई जार

4-3-27 छानी - 'छानी' बुन्देली शब्द है, जिसका अर्थ होता है, छप्पर । मवेशियों के चारागाह के स्थान के रूप में छानी पूर्वपद स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त हुआ है । इसके अतिरिक्त बन्दोबस्त के विवर्णानुसार जहाँ राजाओं की छावनी थी, उन स्थानों के लिये भी छानी पूर्वपद रूप में प्रयुक्त हुआ है ।

यथा - छानी बुजुर्ग
छानी कलाँ
छानी खुर्द

4-3-28 मजरा - 'मजरा' देशज शब्द है, जिसका अर्थ है, छोटा गाँव । किसी भी गाँव से कुछ दूरी पर झोपड़ियाँ बना ली जाती हैं, जिन्हें मढ़ैयां कहते हैं । ये मढ़ैयाँ बस्ती

1- डा० सरयू प्रसाद अग्रवाल - अवध के स्थान-नामों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन
(डी० लिट्० प्रबन्ध अप्रकाशित, पृष्ठ - 286)

के रूप में परिवर्तित हो जाने पर मजरा कही जाती है ।[1] हमीरपुर के केवल दो स्थान-नामों में मजरा पूर्वपद प्रयुक्त हुआ है ।

यथा - मजरा कुण्डौरा डाँड़ा
मजरा कुण्डौरा दरिया

4-3-29 चमर - चमर शब्द चमार का ही रूपान्तर है । चमार जाति चमड़े का काम करती है । मशकें,जूतें,चप्पल आदि बनाने का व्यवसाय इन्हीं के हाथों में है । जिन स्थानों पर चमार जाति के लोगों की अधिकता रही या जिन गाँवों को चमार जाति के लोगों ने बसाया , उन स्थान-नामों के नामकरण में चमर शब्द पूर्वपद रूप में संयुक्त हुआ है ।

यथा - चमर बड़ैरा
चमर खाना

4-3-30 कुँआ - कुआँ संस्कृत "कूप" का विकसित रूप है,जिसका अर्थ है पानी निकालने के लिए पृथ्वी में खोदा गया गहरा गड्ढा । प्राचीन समय से ही सिंचाई तथा दैनिक जीवन के लिए पानी की व्यवस्था हेतु कुआँ बनवाने का महत्त्व रहा है । कुँओं के समीप बस्ती बस जाने पर पूर्वपद रूप में कुआँ शब्द को स्थान-नाम के नामकरण में प्रयुक्त किया गया । हमीरपुर जनपद के केवल एक ही स्थान-नाम में कुआँ पूर्वपद का प्रयोग मिलता है ।

यथा - कुआँ खेरा

4-3-31 सिरसी - संस्कृत "शिरीष" का विकसित रूप है "सिरस" । शिरीष एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष होता है । सिरस में 'ई' प्रत्यय युक्त शब्द सिरसी हो गया । शिरीष वृक्ष के कारण ही स्थान - नामों में सिरसी पूर्वपद रूप में प्रयुक्त हुआ है ।

यथा - सिरसी कलाँ
सिरसी खुर्द

1- डा० (श्रीमती) उषा चौधरी - मुरादाबाद जिले के स्थान-नाम: एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन , पृष्ठ - 126 ।

4-3-32 संख्या बोधक - हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में संख्या बोधक विशेषणों का प्रयोग भी पूर्वपद रूप में प्राप्त होता है । विभिन्न संज्ञा शब्दों के साथ इनका प्रयोग होकर स्थान-नामों का नामकरण हुआ है ।

यथा - अठाँव
नौहाई
पचपहरा

-----o-----

4-4 : स्थान-नामोंका ध्वनि परक अध्ययन

4-4-1 हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में प्रयुक्त स्वरध्वनियाँ- हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में आदि, मध्य व अन्त्य स्थितियों में दस स्वरध्वनियाँ प्रयुक्त हुई हैं ।
यथा - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
दस स्वरों की अनुनासिक स्थितियां भी विभिन्न स्थान-नामों में प्राप्त होती हैं।

यथा -
अं - पंचमपुरा, शंकरपुर, बंजिनी
आं - कुआंखेरा, इटवां , दांदौ
इं - सिंगरावन, सिंचौरा, इंदौरा
ईं - झींईं, लींगा
उं - टुंगरवारा, कुंडौर, कुंजौली
ऊं - टूंका
एं - सेंधा, भेंडी डाँड़ा, बरेंड़ा बुजुर्ग
ऐं - बैंदा डाँड़ा, भैंसाय, बैंदौ
ओं - स्योंढ़ी , ग्योंड़ी
औं - औंता , औंडेरा, औंरा खेरा ।

4-4-2 हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में प्रयुक्त व्यंजन ध्वनियां- हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में आदि, मध्य व अन्त्य स्थितियों में 28 व्यंजन ध्वनियां प्रयुक्त हुई हैं ।

यथा -

क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, स, ह ।

क - अकठौंहा
ख - खण्डौत
ग - गिवारा कलां
घ - अनघौरा
च - पचपहरा
छ - कुछेछा
ज - जलालपुर
झ - मझगवां
ट - गुटकवारा
ठ - अठगांव
ड - डहर्रा
ढ - ढिकवाहा
त - पतखुरी
थ - पथनौड़ी
द - बदनपुरा
ध - धगवां
न - पनवाड़ी
प - कुपरा
फ - बफरेता
ब - कबरई
भ - भरवारा
म - मवई
य - सलैया खालसा
र - कुड़ार
ल - बागौल
व - भटेवरा
स - मसगवां
ह - हरदुआ

—

4-4-3 हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों की संयुक्त ध्वनियां एंव ध्वनि संयोग -

दो मूल ध्वनियों के योग से बनी ध्वनि संयुक्त ध्वनि कहलाती है ।

संयुक्त स्वर - संयुक्त स्वर दो स्वरों का ऐसा मिश्रित रूप है, जिसमें दोनों अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व खोकर एकाकार हो जाते है और साँस के एक झटके में उच्चरित होते हैं ।[1]

यथा - ऐ (अ + इ)

औ (अ + उ)

हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में स्वर ध्वनियों की स्थितियोंमें स्वर संयोग स्पष्ट रूप से देखने को मिलते हैं । जब दो स्वर पास - पास होते हैं , तो उन्हें स्वर संयोग कहते हैं । हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में स्वर संयोग के उदाहरण निम्नलिखित हैं -

अ + उ	चौका	च + अ + उ + क + आ
आ + ई	नौहाई	न + उ + ह + आ+ ई
इ + आ	तेइया	त + ए + इ + आ
उ + ई	मारकुई	म + आ+ र + क + उ + ई
ए + उ	देवगांव	द + ए + उ + गाँव
ओ + ई	खोई	ख + ओ + ई

जहां अन्त्य ध्वनियां या, व प्रयुक्त हुई हैं, उच्चारण में कहीं कहीं 'आ' तथा 'उ' में परिवर्तित हो गई हैं ।

यथा - तेइआ , देवगाउ आदि

संयुक्त व्यंजन - ऐसे संयोग, जो एक से अधिक व्यंजनों के मिलने से बने हों, संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं । हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में इनका प्रयोग इस प्रकार हुआ है ।

1- डा० (श्रीमती) यामिनी - स्थान-नामों का व्युत्पत्तिगत, ऐतिहासिक एंव सांस्कृतिक अनुशीलन , पृष्ठ - 50 ।

यथा -

ड़ + र	कुर्री
ल + ह	गल्हिया
न + न	झिन्ना बीरा
न + द	नन्द पुरा
न + ज	बन्जिनी
म + म	मुहम्मदपुर
स + क	मुस्करा खुर्द
स + य	स्यावरी
ल + ह	किल्हौवा
द + व	द्वासी
म + ह	बम्हौरी कलाँ
ल + ट	मिल्टेन गंज
ख + य	ख्योरइया
ग + य	ग्योंड़ी
म + ह	कुम्हरिया
न + य	न्योरिया
ल + ल	हल्लापुर
त + य	पत्योरा डाँड़ा
स + व	स्वासा बुजुर्ग

उपर्युक्त संयुक्त व्यंजनों में 'ङ' और 'ण' आदि अनुनासिक ध्वनियों के स्थान पर तद्भव शब्दों में अनुनासिक ध्वनि "न" रूप प्राप्त होता है ।

यथा -

कंधौली - कन्धौली

पिण्डारी - पिन्डारी

4-5 : हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों का आक्षरिक स्वरूप:- हमीरपुर जनपद के स्थान - नामों में आक्षरिक स्वरूप के अन्तर्गत द्विअक्षरीय , तीन अक्षरीय , चार अक्षरीय एंव पाँच अक्षरीय नामों का ही बाहुल्य है । एक , छह एंव आठ अक्षरीय स्थान-नाम अपेक्षाकृत कम संख्या में उपलब्ध हुए हैं ।

4-6 : आक्षरिक स्वरूप (संख्या निर्धारण):- सम्पूर्ण जनपद में कुल 1079 स्थान-नाम हैं, जिनका आक्षरिक स्वरूप निम्नवत है -

एक अक्षरीय स्थान-नाम	7
द्वि अक्षरीय "	251
तीन अक्षरीय "	447
चार अक्षरीय "	175
पाँच अक्षरीय "	124
छह अक्षरीय "	45
सात अक्षरीय "	17
आठ अक्षरीय "	13
कुलयोग-	1079

--- 0 ---

अध्याय ५ : स्थान-नाम व स्थानीय भाषा

अध्याय 5 : स्थान-नाम व स्थानीय भाषा

" भाषा उच्चारण अवयवों से ,उच्चारण के योग्य यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा एक समाज के लोग आपस में विचारों और भावों का आदान-प्रदान करते हैं।" इस परिभाषा से भाषा और समाज का अविच्छेद सम्बन्ध है । ध्वनिसंकेतों के रूप में स्थान-नाम , जहां भाषा की एक सशक्त इकाई है, वहीं अपने चतुर्दिक परिवेशों से प्रभावित स्थान-नाम समाज की भी एक अक्षय सम्पत्ति है । इस प्रकार स्थानीय भाषा से प्रभावित होना स्थान-नाम की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है ।[1]

हमीरपुर जनपद बुन्देलखण्ड का एक भाग है । बुन्देले राजपूतों की प्रधानता के कारण ही इस प्रदेश का नाम बुन्देलखण्ड तथा इसकी भाषा का नाम बुन्देली या बुन्देलखण्डी पड़ा । इस प्रकार हमीरपुर जनपद की भाषा बुन्देली है । इण्डिया गजेटियर के अनुसार बुन्देलखण्ड की सीमा उत्तर में यमुना नदी , उत्तर पश्चिम में चम्बल नदी, दक्षिण में मध्य-प्रदेश के जबलपुर तथा सागर जिले तथा दक्षिण पूरब में रीबा अथवा बघेलखण्ड और मिर्जापुर के पहाड़ हैं ।[2]

बास्तव में बुन्देली के प्रवाह की कुछ धारायें इस सीमा को पार करती हुई इधर-उधर बिखर गई हैं । जैसे बांदा इस सीमा के भीतर है, किन्तु यहां की बोली बुन्देली न होकर पूर्वी हिन्दी की बघेली है । उत्तर मे आगरा , मैनपुरी और इटावा जिलों के दक्षिणी भागों तक उक्त सीमाओं को पार करती हुई पहुँच गयी है । उत्तर पश्चिम में - ग्वालियर के भीतर यह ठीक चम्बल के तट तक नहीं पहुँच पायी है, क्यों कि यहां ब्रज तथा राजस्थानी भाषायें बोली जाती हैं । दक्षिण में इसकी सीमा बुन्देलखण्ड की सीमा से बहुत दूर तक आगे चली जाती है । इधर यह केवल सागर, दमोह तथा भोपाल के पूर्वी भाग में ही नहीं बोली जाती , अपितु मध्य प्रदेश के नरसिंहपुर, होसंगाबाद तथा सिवनी तक पहुँच जाती हैं ।[3]

1-डा0(श्रीमती)यामिनी-स्थान-नामों का व्युत्पत्तिगत,ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन , पृष्ठ - 61 ।

2- डॉ0 उदयनारायण तिवारी-भोजपुरीभाषा और साहित्य , पृष्ठ-13।

3- डा0 श्यामसुन्दर बादल - बुन्देली का फाग साहित्य, पृष्ठ -415

इस प्रकार हमीरपुर जनपद की स्थानीय भाषा बुन्देली या बुन्देलखण्डी है, जो सम्पूर्ण जनपद में बोली जाती है । स्थान-नामों पर इसका स्पष्ट प्रभाव पड़ा है ।

हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में बुन्देली भाषा की कुछ विशिष्ट प्रवृत्तियां इस प्रकार हैं —

बुन्देली भाषा की व्यंजन ध्वनियों के अन्तर्गत महाप्राण ध्वनियों के लिये अल्प-प्राण होने की विशेषता पाई जाती है । प्रमुखतया शब्दान्त में प्रयुक्त महाप्राण ध्वनि महाप्राणत्व होकर अल्प प्राण हो जाती है ।

यथा - लोधीपुरा > लोदीपुरा

इसी प्रकार सघोष दन्त्य महाप्राण ध्वनि 'ध' का अल्प प्राणीकरण उच्चरित रूप में पाया जाता है ।

यथा - लिधौरा > लिदौरा

कँधौली > कँदौली

बुन्देली में 'जरिया' झरबेरी की झाड़ी को कहते हैं । अतः जिस स्थान पर झरबेरी अधिक मात्रा में पायी जाती है, उस स्थान का नाम जरिया पड़ा । हमीरपुर जनपद में राठ तहसील के अन्तर्गत जरिया नामक स्थान-नाम इसी प्रकार का उदाहरण है ।

स्थान-नामों में बुन्देली की यह विशेषता भी पाई जाती है, कि ल्ह, न्ह, एंव म्ह व्यंजन गुच्छों का प्रयोग बहुलता से हुआ है ।

यथा - किल्हौवा , कन्हरपुरा, कुम्हरिया, एंव बम्हौरी इत्यादि ।

उत्क्षिप्त ध्वनि 'ड़' बुन्देली भाषा में 'र' में परिवर्तित हो जाती है, जो हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में स्पष्टतया लक्षित होती है ।

यथा - टिकड़िया > टिकरिया

ऐतिहासिक दृष्टि से बुन्देली भाषा की विशिष्ट प्रवृत्ति है कि 'क' ध्वनि का उच्चारण 'ग' में परिवर्तित हो जाता है, जो स्थान-नामों में इस प्रकार देखने को मिलता है -

यथा - मकरौठ > मारौठ

बुन्देली की विशिष्ट प्रवृत्ति स्वर मध्यवर्ती 'ह' का लोप स्थान-नामों में भी लक्षित है ।

यथा - खोही > खोई

रिछहरा > रिछारा

बुन्देली की एक प्रमुख विशेषता यह भी है कि जब 'ए' ध्वनि ह्रस्व रूप में उच्चरित होती है, तो वह क्रमशः 'इ' तथा 'उ' में परिवर्तित हो जाती है ।

यथा - सेमरिया > सिमरिया

खेरिया > खिरिया

रेरूआ > रिरूआ

इसी प्रकार बुन्देली की 'ऐ' ध्वनि उच्चारण में 'ए' के रूप में परिणित हो जाती है ।

यथा - नैकपुरा > नेकपुरा

पहरैता > पहरेता

डाँग बुन्देली भाषा का एक विशिष्ट शब्द है, जो जंगल या बीहड़ के लिए प्रयुक्त किया जाता है । डाँग विशुद्ध बुन्देली शब्द है । हमीरपुर जनपद के स्थान - नामों में भी जंगल या बीहड़ के लिए प्रयुक्त किया जाता है । डाँग शब्द का प्रयोग हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में इस प्रकार है ।

यथा - नगारा डाँग, करहरा डाँग ।

5-। स्थान-नामों में प्राप्त विविध भाषाओं के शब्दों का प्रयोग:- हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में विविध भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हुआ है । इनमें प्राचीन भारतीय भाषा परम्परा से आगत शब्द -तत्सम , अर्द्धतत्सम , तद्भव, देशज एंव विदेशी भाषाओं से ग्रहीत शब्द - अरबी, फारसी, अंग्रेजी तथा संकर शब्द इत्यादि का प्रयोग स्पष्ट रूप से हुआ है, जिनका संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार है ---

5-2 भारतीय (प्राचीन) भाषा परम्परा से आगत शब्द :-

(क) तत्सम शब्द - हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में हिन्दी के तत्सम शब्द स्पष्ट रूप से प्रयुक्त हुए हैं, जो रूप व उच्चारण की दृष्टि से सरल तथा बोधगम्य हैं, और इनमें विशेष परिवर्तन या विकृति के लिये स्थान नहीं है ।

यथा - काशीपुरा, रामपुरा ।

(ख) अर्द्ध तत्सम शब्द - अर्द्ध तत्सम से तात्पर्य उन शब्दों से है, जो तद्भव नहीं हैं तथा तत्सम के अति निकट हैं । ये शब्द परिवर्तन की ऐसी अवस्था में हैं,जो न तो पूर्ण तत्सम ही हैं और न पूर्ण तद भव ही । अत: ऐसे शब्दों को अर्द्ध तत्सम कहा जाता है । वास्तव में तत्सम और अर्द्ध तत्सम का भेद बहुत कुछ उच्चारण भेद ही है । हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में अर्द्ध तत्सम शब्दों का प्रयोग इस प्रकार हुआ है ।

यथा - चन्दपुरा , किशुनपुरा ।

(ग) तद्भव शब्द - जनपदीय क्षेत्र में व्यवहृत होने के कारण स्थान-नामों में गवाँरू समझे जाने वाले शब्द ही वस्तुत: हिन्दी भाषा की अपनी सम्पत्ति है । हमीरपुर जनपद एक अत्यन्त प्राचीन जनपद है, जो पूर्वकाल से ही उपेक्षित एवं पिछड़ा हुआ रहा है । अत: यहां के स्थान-नामों की शब्दावली में विकृत एवं भ्रमात्मक शब्दों की संख्या प्रभूत है ।

यथा - सतौरा , चमरूआ ।

(घ) देशज शब्द :- हिन्दी शब्दों का प्रयोग लगभग समस्त हिन्दी प्रदेश में होता है, परन्तु देशज शब्द सीमित क्षेत्र में ही व्यवहृत होते हैं । अधिकांश देशज शब्द स्थानीय प्रयोग में आते हैं । ये देशज शब्द प्राय: अनुकरणात्मक ध्वनि के आधार पर निर्मित होते हैं । देशज शब्दों की व्युत्पत्ति ज्ञात न होने के कारण इन्हें अज्ञात व्युत्पत्तिक माना है हमीरपुर जनपद के स्थान - नामों में प्रयुक्त देशज शब्द जिले की भाषा को अधिक समृद्ध

1-डा० भोलानाथ तिवारी- हिन्दी भाषा (शब्द), पृष्ठ - 275 ।

व सशक्त बनाने में सहायक होते हैं । इनका प्रयोग स्थान-नामों में इस प्रकार हुआ है- यथा - मजरा कुण्डौरा दरिया, मजरा कुण्डौरा डाँड़ा एंव टिकरिया इत्यादि ।

5-3 विदेशी भाषाओं से गृहीत शब्द:- प्राचीन काल में हमीरपुर जनपद विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं का केन्द्र रहा है । अनेक सत्ताओं का आदि और अन्त इस जनपद ने देखा है । इन विदेशी सत्ताओं के कारण विभिन्न विदेशी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग स्वाभाविक है । जनपद में मुगलों, मराठों व अंग्रेजों के अधिपत्य के कारण मराठी फारसी, अंग्रेजी एंव बंगला इत्यादि के शब्दों का प्रयोग स्थान-नामों में हुआ है । यथा - मिल्टेन गंज, गुलाब गंज, मुहम्मदपुर, सलइया खालसा, कछवा कलाँ, मुस्करा खुर्द इत्यादि ।

5-4 संकर शब्द :- जिन शब्दों में दो विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग होता है, उन्हें संकर शब्द कहते हैं । संकर शब्दों का प्रयोग हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों में पर्याप्त रूप में हुआ है ।

यथा -

संस्कृत		फारसी	हिन्दी		फारसी
नव	+	आबाद	धौहल	+	बुजुर्ग
नौ	+	आबाद	कछवा	+	कलाँ
रगौली	+	बुजुर्ग	खेरा	+	कलाँ
पचखुरा	+	बुजुर्ग			

संस्कृत		अरबी	अंग्रेजी		फारसी
सलइया	+	खालसा	जार्डिन	+	गंज
पिपरा	+	माफ	मिल्टेन	+	गंज
सरसेड़ा	+	माफ			

अरबी		संस्कृत
इस्लाम	+	पुर
मुहम्मद	+	पुर
नूर	+	पुर

-------o-------

अध्याय ६ : हमीरपुर जनपद की विभिन्न तहसीलों में भाषा-वितरण

जनपद हमीरपुर
(तहसीलवार भाषा-वितरण)
15
जालौन
जनपद
जनपद कानपुर
जनपद फतेहपुर
हमीरपुर
मौदहा
राठ
चरखारी
महोबा
कुलपहाड़
झाँसी
बाँदा
जनपद
प्रदेश
मध्य
संकेत तालिका:—
जनपद सीमा
तहसील मुख्यालय
नदी
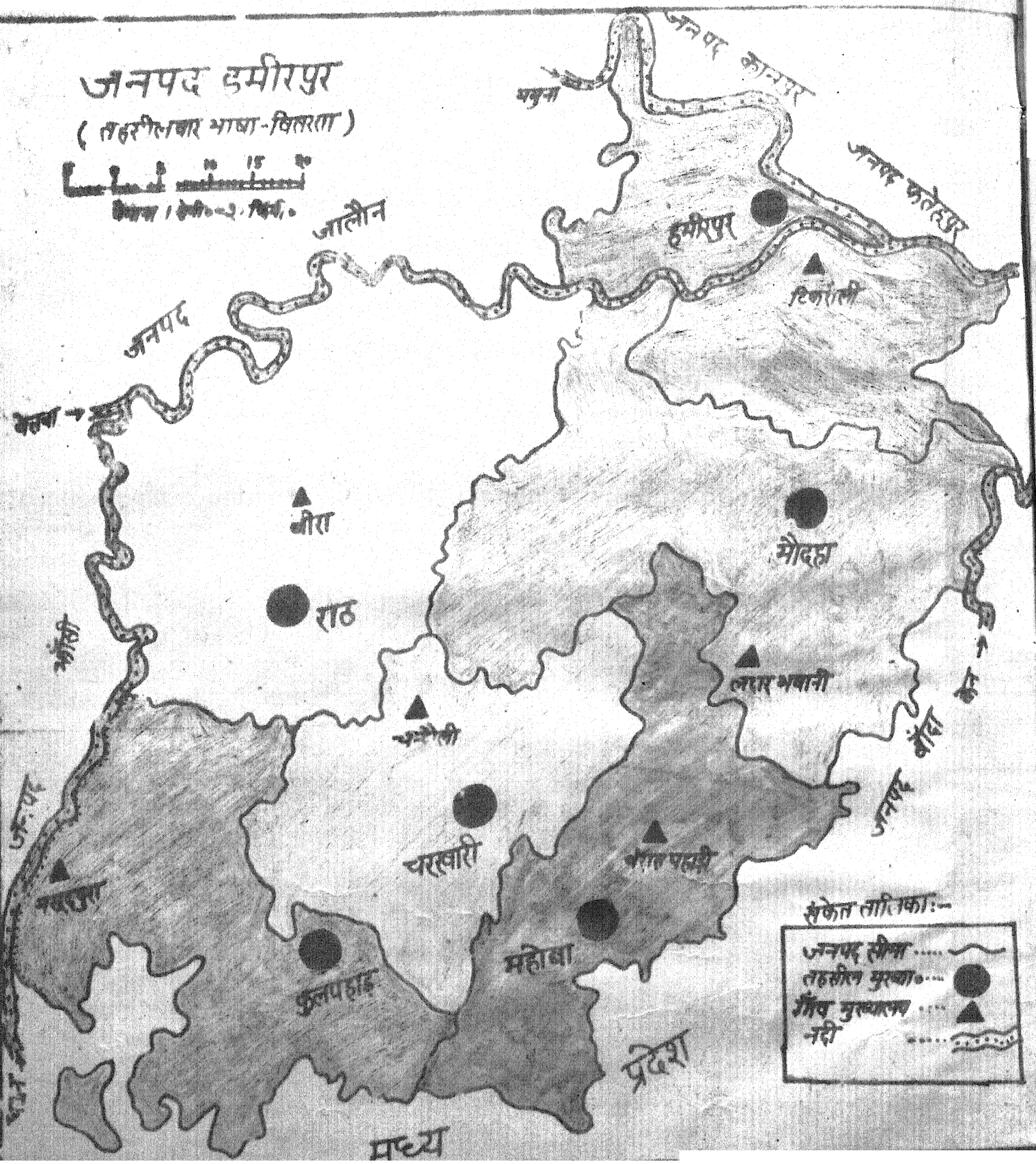
अध्याय 6 : हमीरपुर जनपद की विभिन्न तहसीलों में भाषा-वितरण

हमीरपुर जनपद बुन्देलखण्ड का अति प्राचीन ऐतिहासिक जनपद है, जिसकी अपनी एक विशिष्ट संस्कृति, परम्परायें एंव रीति-रिवाज हैं । बुन्देलखण्ड का एक प्रमुख भू-भाग होने के कारण यहां की बोली बुन्देली है, जिसमें कहीं-कहीं दक्षिणी पूर्वी भाग पर बघेली एंव बनाफरी का सम्मिश्रण मिलता है । कहीं-कहीं तिरहारी अथवा तीर की बोली, जो बुन्देली का ही एक रूप है, की झलक देखने को मिलती है ।

विद्वानों द्वारा कही गई बुन्देली कहावत-"कोस-कोस पै पानी बदलै, चार कोस पै बानी" अपने आप में पूर्णतया सही सिद्ध होती है, क्योंकि किसी भी क्षेत्र की बोली में स्थान परिवर्तन के फलस्वरूप कुछ न कुछ भिन्नता अवश्य देखने को मिलती है । ठीक यही स्थिति हमीरपुर जनपद की विभिन्न तहसीलों में भाषा-वितरण की है । जनपद में कुल छह तहसीलें- राठ, कुलपहाड़, चरखारी, महोबा, मौदहा एंव हमीरपुर हैं, जिनकीबोली में न्यूनाधिक अन्तर सूक्ष्म रूप में दृष्टिगत है । इस भिन्नता के प्रमुख कारण वहां की क्षेत्रीय विशेषतायें, भौगोलिक परिस्थितियां एंव उच्चारण सौकर्य इत्यादि हैं । उदाहरण के लिए राठ तहसील में लोधी राजपूतों की अधिकता होने के कारण यहां की बोली लुधियाँती कही जाती है । इसके अतिरिक्त जहां पँवारों का आधिपत्य रहा, वहां की बोली पँवारी कहलाती है । कुछ भी हो, हमीरपुर जनपद की प्रमुख भाषा बुन्देली है, जिसका हिन्दी के क्षेत्र में महत्त्व पूर्ण स्थान है ।

हमीरपुर जनपद में तहसीलवार भाषा-वितरण को स्पष्ट करने हेतु कुछ खड़ी बोली के वाक्य लिये गये हैं, जिनका अनुवाद जनपद की प्रत्येक तहसील के एक गांव की मूल बोली में किया गया है, जिससे प्रत्येक तहसील की स्थानीय बोली का अध्ययन सुगमतापूर्वक किया जा सकता है -

मानक हिन्दी वाक्य

1- चोरों ने आधी रात को तुम्हारे सन्दूक का ताला तोड़ डाला ।

2- उसकी तरह मैं भी गंगा जी में नहाने जाऊँगा ।

3- जो चमारिन कल पीसने आई थी, वह बड़ी चोर निकली ।

4- छोटे भाई के विवाह में सब थालियां चोरी चली गईं ।

5- इस गांव में तेरी जाति के लोग बहुत हैं ।

6- मैं ख़ूब जानता हूँ, कि तुमसे यह कार्य न होगा ।

7- वे बकरियां जंगल में फिर रही होंगी ।

8- उसकी पैार में कल सब लोग इक्ट्ठे हुये थे ।

9- झांसी तरफ यह फल ख़ूब मिलता है ।

10- खिला पिलाकर बड़ा कर देना हमारा कर्तव्य था ।

11- इस ओर ब्राम्हणों की बस्तियां ख़ूब हैं ।

12- मेरे लिए थोड़ी सी काली मिट्टी लेते आना ।

13- यह लड़कियों के कहने में आ गयी ।

14- या तो तुम आना, या फिर भाभी को भेज देना ।

15- जिसकी अटकी होगी , वह मेरे यहां आयेगा ।

6-1 तहसील राठ में भाषा-वितरण   गाँव - बीरा

1- भँडैहन नें आधी रात खें तोये सिन्दूक को तारो टोड़-डारो ।

2- ओखी नाहीं महूँ गंगाजू में सपरन जैहों ।

3- जौन चमरिया काल पीसन आई ती, वा बहुत भँड़हउ कढ़ी ।

4- हल्के भइया के ब्याव में सबरी टाठीं चुर गईं ।

5- ई गांव में तोई जात के आदमी बहुत हैं ।

6- मयें खीब जानत हों, कै तोसें यो काम ना होहै ।

7- वें क छिरियाँ हार में फिरत होहैं ।

8- ओखी पौंर में काल सब जने जुरे ते ।

9- झाँसी कुधाईं यो फल खीब मिलत है ।

10- खबा-पिबा खें बड़ो कर देबो हमाओ फर्ज हतो ।

11- ई कुधाईं बाम्हनन की बसीकत खीब है ।

12- मोय लानें तनक सी कारी मट्टी लेन्तात ।

13- या मौड़िन के कहे में आ गई ।

14- या तो तयें आत, नहिंतर भौजी खें पठै देत ।

15- जेखे अटकी होहै, उ मोय इतै आहै ।

6-2 तहसील कुलपहाड़ में भाषा-वितरण गाँव - मसूदपुरा

1- भँड़यन नें आदी रात कें तुमाय सिन्दूक कौ तारौ टड़ारो ।

2- उकी नाई मेंई गंगाजुये सपरन जैंऔं ।

3- जौन चमारन काल पीसन आईती, बा भौत भँड़उ कड़ी ।

4- हल्के भइया के ब्याव में सबरीं टाठीं चुर गईं ।

5- ई गांव में तुमाई बिरादरी के आदमी भौत हैं ।

6- मैं खीब जानत कै तौसें जौ काम न हुये ।

7- बे छिरियाँ डाँग में फिरत हुयें ।

8- उकी पौंर में काल सब जने जुरे ते ।

9- झाँसी कुदाईं जौ फल खीब मिलत ।

10- खबा-पिवा कें बड़ौ करबो हमाऔ काम तो ।

11- ई कुदाईं बामनन के गाँव भौत हैं ।

12- मौय लानें तनक कारी माटी लेताइये ।

13- जा मौड़िन के कये में आ गई ।

14- कै तौ तें आइये, नईंतर भौजी हाँ पौंचा दइये ।

15- जी की अटकी हुये, उ मोय काँय आय ।

6-3 तहसील चरखारी में भाषा-वितरण गाँव - चँदौली

1- भड़ैयन नें आधी रात कें तुम्हाई सिन्दूक कौ तारो टोड़डारो ।

2- ओखी नाईं महूँ गंगाजुए सपरन जैहों ।

3- जौन चमरिया कालपीस्न आई ती, वा बड़ी भँड़उ कढ़ी ।

4- हल्के भइया के बियाव में स्बरी टाठीं भँड़याईं चली गईं ।

5- ई गाँव में तुम्हाई जात के आदमी बहुत हैं ।

6- मैं खूब जानत हों, कै यौ काम तो सें न होहै ।

7- वें छिरियां हार में फिरत होहैं ।

8- ओखी पौंर में काल सब आदमी इक्ट्ठे भये ते ।

9- झाँसी कोद यौ फल खूब मिलत है ।

10- खबा पिबा कें बड़ौ कर देबो हमाओ काम आय तो ।

11- ई कँनाई बाम्हनन के घर बिलात हैं ।

12- मोय लानें थोरी सी कारी माटी लेआयत ।

13- या मौड़िन केकहे में लग गई ।

14- या तौ तें आइये, नहिंतर फिन भौजी खें पठै देत ।

15- जेखें अटकी होहै, सो उ मोय इतै आहै ।

6-4 तहसील महोबा में भाषा-वितरण गाँव-बरात पहाड़ी

1- भड़ैयन नें आधी रात कें तुम्हाये सिन्दूक कौ तारौ टड़ारो ।

2- ओई धाँई महूँ गंगाजू में सपरन जैंहों ।

3- जौन चमारन काल पीसन आई ती, बा बहुत चौर निकरी ।

4- हल्के भइया के ब्याव में सबरी टाठीं चुर गईं ।

5- ई गाँव में तोई जात के आदमी बहुत हैं ।

6- मैं खूब जानत कै तोसें यौ काम ना हूहै ।

7- बे छिरियाँ हार में फिरत हूहें ।

8- औंधी पौर में काल सब आदमी बैठे हते ।

9- झाँसी कोद जौ फल खूब मिलत है ।

10- खबा-पिबा कें बड़ौ करबो हमावौ काम आय हतो ।

11- ई कोद ब्राम्हनन के गाँव बहुत है ।

12- मोय लानें थोड़ी कारी माटी लेताइये ।

13- या मौंड़िन के कहे में आ गई ।

14- या तौ तें आइये, नईंतर भौजी खाँ पहुँचा दइये ।

15- जेंखी अटकी हूहै, सो ऊ मोय इते चलो आहै ।

6-5 तहसील मौदहा में भाषा वितरण — गाँव - लदार भवानी

1- चोरिन नें आधी रात के तुम्हार बक्सा के तारा टोर डारिन ।

2- औखी साहीं महूँ गंगा नहाँय जइहौं ।

3- जौन चमारिन काल पीसन आई रहय,वा बड़ी चोर रहये ।

4- छोटे भइया के ब्याहे माँ सब टाठीं चौरिन चली गईं ।

5- या गाँव माँ तोरी जात के मढई बहुत हैं ।

6- मयँ खूब जानत हों कि तोसे या काम न हुई ।

7- वें छिरियाँ हार माँ फिरत हुइहैं ।

8- वाकी चहुँपार माँ काल सब मढई इक्ट्ठा हुई रहयें ।

9- झाँसी कनयँ ईं फल खूब मिलत हैं ।

10- बबा - पिया के बड़ा कर दीन हमार काम रहय ।

11- या कनयँ बम्हनन के बस्तीं बहुत हैं ।

12- मोरे लाने थोरी सी कारी माटी लेत आयस ।

13- या बिटियन के कहये माँ आयो ।

14- या तौ तयें आयस नहिंता फिर भउजी का भेज देत ।

15- जाके गर्ज हुई , वा मोरे पास आई ।

6-6 तहसील हमीरपुर में भाषा-वितरण

गाँव-टिकरौली

1- चोरवन नै आधी रात के तोरी सन्दूक का तारा टोर डारेन ।

2- ओखी नईं महूँ गंगा जी माँ नहाँय जइहौं ।

3- जैान चमारिन काल पीसैं आइती वा बड़ी चोर रहय ।

4- छोटे भइया के बिआहे माँ सब टाठीं चोरी हुई गईं ।

5-या गाँव माँ तोरी जात के मढ़ई बहुत हयँ ।

6- मयँ खूब जानत हौं की तोसे या काम न हुई ।

7- उई छेरीं बनका माँ फिरती हुइहैं ।

8- ओखे बरोठे माँ काल सब जने इकट्ठा भेते ।

9- झांसी कइती या फल खूब मित्थै ।

10- खबाय - पियाय के बड़ा कर देब हमार करतब्ब रहय ।

11- या कइती बम्हनन के बसतीं तमाम ही ।

12- मौरे खातिर थोरी सी कारी माटी लेत अएस ।

13- या बिटियाक्न के कहे माँ आय गे ।

14- या तौ तयँ अयस नहीं तौ भौजी का पठै दएस ।

15- ज्याखे अटकी हुई वा मोरी खईं अयी ।

उपर्युक्त भाषा- वितरण से स्पष्ट है कि जनपद की विभिन्न तहसीलों में प्रयुक्त बोलियों में सूक्ष्म रूप से अन्तर है , जो " कोस-कोस पै पानी बदलै, चार कोस पै बानी" वाली बुन्देली कहावत की सार्थकता सिद्ध करता है ।

हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों पर वहाँ की स्थानीय भाषा का स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता है, जिसके कारण स्थान-नामों के नामकरण के मूल रूप में परिवर्तन हुआ है । जैसे - जनपद में बुन्देली "डाँग" शब्द जंगल या बीहड़ के लिये प्रयुक्त होता है, अतः जो स्थान जंगलों में बसाये गये, उन स्थान-नामों के साथ डाँग शब्द जोड़कर स्थान-नामों की रचना हुई है ।
यथा - नगारा डाँग, करहरा डाँग, कुरौरा डाँग इत्यादि ।

इसी प्रकार हमीरपुर जनपद में 'जरिया' झरबेरी की झाड़ी को कहा जाता है, अतः जिन स्थानों पर झरबेरी अधिक पाई जाती थी, उस स्थान का नाम जरिया पड़ गया । यथा - जरिया ।

-------o-------

अध्याय ७ : उपसंहार

अध्याय 7 : उपसंहार

स्थान-नामों के भाषा-शास्त्रीय अध्ययन की सर्व प्रमुख महत्ता किसी स्थान विशेष की भाषागत विशेषताओं से सम्बन्धित है और इससे क्षेत्रीय बोली प्रवृत्ति का परिचय मिलता है । जैसे किसी क्षेत्र विशेष के स्थान-नामों में नगर, पुर, गांव आदि स्थान बोधक शब्द युक्त नामों की प्रमुखता पाई जाती है, अन्यत्र इन्हीं के क्षेत्रीय रूपान्तर नाला, नगली पुरा, पुरवा, गवां, गुवाँ आदि शब्द पूर्वपद एवं परपद रूप में प्रयोग किये जाते हैं । इसके अतिरिक्त स्थान-नामों में जहाँ अवली आदि संस्कृत के तत्सम रूपों की प्रमुखता रहती है, वहीं दूसरे स्थान पर औल, पल्ली, औली, औला, औली आदि तद्भव प्रत्यय युक्त शब्द प्रयुक्त होते हैं ।

भाषा-विज्ञान में स्थान-नामों का अध्ययन नामों की व्युत्पत्ति एवं विश्लेषण तथा ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है । स्थानीय बोली एवं भाषागत विशेषताओं के ज्ञान के साथ ही शब्दों के विकास एवं भाषा संरचना का बोध होता है । हमीरपुर जनपद - बुन्देलखण्ड का एक प्रमुख भू-भाग है, जहाँ की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं । अतः स्थान की महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए ही शोधकार्य हेतु प्रस्तुत - विषय का चयन किया गया हैं । जनपद की सभी छह तहसीलों - राठ , कुलपहाड़,चरखारी, महोबा, मौदहा एवं हमीरपुर को शोध का क्षेत्र माना है, जिनसे जनपद की विविध प्रवृत्तियों का परिचय प्राप्त होता है ।

स्थान-नामों पर किसी क्षेत्र विशेष की सामाजिक,आर्थिक,धार्मिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का भी प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता हैं। अतः स्थान-नामों के अध्ययन के निष्कर्ष समाजशास्त्र ,अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, इतिहास, भूगोल इत्यादि से सम्बन्धित

हैं। स्थान-नामों के अध्ययन के क्षेत्र में भाषा विज्ञान उपर्युक्त विषयों से सम्बन्धित हैं। इसी उद्देश्य से शोध-प्रबन्ध में सबसे पहले हमीरपुर जनपद का सामान्य परिचय दिया गया है ।

समाज में महान व्यक्तियों की प्रमुखता रहती है तथा महान व्यक्तियों के नाम पर स्थान-नामों के नामकरण की प्रथा प्राचीन काल से ही चली आ रही है । विभिन्न राजनीतिक सत्ता प्राप्त व्यक्तियों के नाम पर स्थान-नामों का नामकरण समाज में शासन की प्रमुखता का द्योतक है । यथा-कीरतपुरा, जगतपुर, टिकरी परमाल आदि । इसके अतिरिक्त राजा, रानी इत्यादि उपाधियों के नाम भी अपनाये जाने की प्रवृत्ति से स्पष्ट है कि स्थान-नामों के नामकरण में सत्तावान व्यक्तियों की ही नहीं , वरन् उपाधियों की भी महत्ता है । राम, जनक, भोज आदि नामों को अपनाने से मनुष्य के सद्गुणों का सम्मान करने वाली प्रवृत्ति का परिचय मिलता है । जनपद में रामपुरा, भुजपुरा आदि इसी प्रकार के स्थान-नाम हैं ।

हर व्यक्ति अपने धर्म को सर्वाधिक महत्व देता है । अतः स्थान-नामों में धर्म सम्बन्धी अनेक शब्दों का प्रयोग किया गया है । जनपद के स्थान-नामों में हिन्दू, मुसलमान आदि के धर्मों से सम्बन्धित अनेक शब्दों का प्रयोग हुआ हैं ।इनके विभिन्न रीति-रिवाज व संस्कारों के नाम भी स्थान-नामों में प्रयुक्त हुए हैं । विभिन्न देवी देवता, नवी, पैगम्बर, रसूल इत्यादि के नाम जनपद के स्थान-नामों में स्पष्ट रूप से देखने को मिलते हैं । यथा-मनियाँपुर, देवीगंज, अलीपुर, कादीपुर, मुहम्मदपुर आदि स्थान-नाम इसी प्रवृत्ति के परिचायक हैं ।

भौगोलिक परिस्थितियों का भी जनपद के स्थान-नामों पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है। जनपद के विभिन्न स्थान-नामों का नामकरण अनेक नदियों , वनस्पतियों, पहाड़, वन, सागर, सूर्य, चन्द्र एवं नक्षत्र इत्यादि प्राकृतिक तथा भौगोलिक वस्तुओं के नाम पर आधारित है । रकौरा, खंदरा, सिमरिया, सौरा, पहाड़िया इत्यादि ऐसे ही स्थान-नाम हैं । कहीं - कहीं स्थान-नामों में उपज विशेष एवं पालतू पशु पक्षियों से सम्बन्धित शब्दों का प्रयोग हुआ है । जैसे - भैंसाय, बघौरा, सिठारा, रगौली इत्यादि ।

विभिन्न उद्योग-धन्धों का स्थान-नामों पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है । हर व्यक्ति अपने धन्धे और उन्नति के लिए अपने व्यावसायिक समूह में रहना चाहता है । इस प्रकार के व्यावसायिक समूह कालान्तर में बस्ती का रूप धारण कर लेते हैं तथा समूह के व्यवसाय अथवा जाति का नाम स्थान-नाम में संयुक्त हो जाता है । गौरहरी और लोधीपुरा आदि स्थान-नाम इसी प्रवृत्ति के परिचायक हैं ।

जनपद के स्थान-नामों में विभिन्न ऋषि-मुनियों एवं तपस्वियों की भूमिका भी अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है । ऋषि या तपस्वी लोग साधारणतया लोक से दूर अपना तपोवन अथवा आश्रम बनाते थे और वहीं एकान्तवास करते हुए साधना में लीन रहते थे । इन स्थानों के नाम ऋषि या तपस्वी के नाम पर रक्खे गये । बुन्देलखण्ड विशेषकर ऋषियों की तपोभूमि रही है । जनपद के चण्डौत , पराशन, रिरुआ और बसरिया गाँवों के इतिहास यह सूचित करते हैं कि इन स्थानों पर च्यवन ऋषि, पराशर ऋषि, ऋषभदेव एवं मुनि वशिष्ठ जैसी महान विभूतियों के आश्रम रहे हैं, जिनके आज भी इन स्थानों पर ध्वंशावशेष देखने को मिलते हैं ।

विभिन्न संस्कृतियों के सम्मिलन की झलक स्थान-नामों में प्राप्त होती है ।

संस्कृत के तत्सम शब्दों-पुर, नगर आदि के साथ अरबी, फारसी, शब्दों का प्रयोग इस प्रवृत्ति का परिचय देता है । यथा-इस्लामपुर, मुहम्मदपुर, नूरपुर इत्यादि । साथ ही ऐसे स्थान-नामों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सैकड़ों वर्षों तक विदेशी शासन रहने के बाद भी स्थानीय भाषा व संस्कृति यहाँ के व्यक्तियों से पृथक नहीं हुई। स्थान-नामों में विदेशी शब्दों का देशी शब्दों की अपेक्षा न्यून प्रयोग इस प्रवृत्ति का परिचायक है ।

रूप-रचना एवं शब्दावली की दृष्टि से जनपद के स्थान-नामों में विभिन्न विशेषतायें प्राप्त होती हैं । सम्पूर्ण जनपद के 1079 स्थान-नामों में अधिकांश एक पदीय द्विपदीय एवं बहुपदीय स्थान-नाम प्राप्त होते हैं । एकपदीय स्थान-नामों में विभिन्न व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ बोधक शब्दों का प्रयोग हुआ है । द्विपदीय स्थान-नामों में अधिकांश स्थान बोधक शब्दों का प्रयोग हुआ है, जिनमे पुर परपद रूप में सर्वाधिक संख्या में प्रयुक्त हुआ है । आबाद , गंज जैसे विदेशी शब्दों का प्रयोग भी स्थान-नामों में मिलता है,परन्तु कम मात्रा में । कहीं-कहीं अरबी, फारसी, अंग्रेजी, उर्दू आदि - भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हुआ है । द्विपदीय स्थान-नामों में पर्याप्त संख्या में संकर रचनायें प्राप्त होती है, जिनमें एक पद देशी तथा दूसरा पद विदेशी भाषा का प्रयोग में आया है । जनपद के स्थान-नामों में तीसरी श्रेणी बहुपदीय स्थान-नामों की है । इसके अतिरिक्त एक श्रेणी ऐसे शब्दों की प्राप्त होती है, जिनकी व्युत्पत्ति शब्द-कोषों में प्राप्त नहीं होती, उन्हें अज्ञात-व्युत्पत्तिक शब्दों की संज्ञा दी गई है । ये देशज शब्द हैं, जिसकी रचना क्षेत्रीय शैली में की जाती है । इस प्रकार के शब्दों से क्षेत्रीय भाषा की संरचनात्मक प्रवृत्ति का ज्ञान होता है, साथ ही ये शब्द भाषा-कोष को समृद्ध बनाते हैं।

जनपद के स्थान-नामों में प्राप्त भाषा एंव ध्वनि सम्बन्धी परिवर्तन भाषाविकास की ओर संकेत करते हैं । एक ही प्रकार की ध्वनियों का विविध क्षेत्रों में विभिन्न रूपों में विकास हुआ है । तवली तत्सम प्रत्यय के औली,ओली,औल,ओल,औला, ओला आदि - विविध रूपों का विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग स्थानीय भाषायी विविधता की ओर इंगित करता है ।

जनपद का समस्त तहसीलों-राठ, कुलपहाड़, चरखारी, महोबा, मौदहा एंव हमीरपुर के भाषागत वितरण के अन्तर्गत प्रत्येक तहसील के एक-एक गांव की मूल बोली के अध्ययन से जनपद के विभिन्न भागों की उपयोगी भाषाओं का परिचय मिला है, जिनका स्थान-नामों के नामकरण एंव रूप-रचना पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है । साथ ही क्षेत्र विशेष की ऐतिहासिक एंव सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि की जानकारी प्राप्त होती है ।

निष्कर्षतः "हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों के भाषा-शास्त्रीय अध्ययन" से स्पष्ट होता है कि स्थान-नामों में व्यक्ति-नामों एंव स्थान-बोधक शब्दों को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है । इसके अतिरिक्त स्थान-नामों में उन शब्दों का प्रयोग अधिक किया गया है, जो जीवन की आवश्यक अथवा क्षेत्र विशेष में अधिकता से पाई जाने वाली वस्तु अथवा वनस्पति से सम्बन्धित है । प्रकृति सम्बन्धी शब्द मनुष्य के प्रकृति - प्रेम एंव जीवन में प्रकृति की प्रमुखता को व्यक्त करते हैं । स्थानीय भाषा एंव बोली की विशेषताओं के आकलन से लिखित एंव उच्चरित रूपों का अन्तर स्पष्ट होता है । साथ ही क्षेत्रीय भाषा विकास की दिशाओं का ज्ञान होता है । औल, औला, औली आदि प्रत्यय युक्त स्थान-नाम सम्भवतः प्राचीन हिन्दू शासन में बसाये गये हैं, परन्तु मिल्टेनगंज, जार्डिनगंज जैसे स्थान-नाम हमीरपुर जनपद में अंग्रेजी शासन में बसाये गये मालूम पड़ते हैं । अतः वे नवीन-

तम स्थान-नाम हैं । मुहम्मदपुर, नूरपुर, कादीपुरा इत्यादि अरबी शब्दों युक्त स्थान-नाम मुगलशासन में बसाये गये प्रतीत होते हैं । अतः स्थान-नामों के अध्ययन से जनपद में स्थान-नामों के रूप में छिपी हुई महत्त्वपूर्ण सामाजिक , सांस्कृतिक , ऐतिहासिक एवं भाषायी निधि प्रकाश में आती है एवं जनपदीय संस्कृति, बुन्देली भाषा की क्षेत्रीय विशेषताओं, भाषा के सीमा निर्धारण, भौगोलिक वितरण तथा भाषा काल-क्रम और भाषा-विकास की दिशाओं का ज्ञान प्राप्त होता है, जिनका जनपद के बहुमुखी विकास हेतु - महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी योगदान होगा ।

---- 0 ----

परिशिष्ट

परिशिष्ट :-

(क) सन्दर्भ एवं सहायक ग्रन्थ - सूची :

1- डिस्ट्रिक्ट गजेटियर जनपद हमीरपुर

2- मानचित्र-जनपद हमीरपुर

3- सैन्सस हैण्ड-बुक जनपद हमीरपुर (1971)

4- डा० (श्रीमती) उषा चौधरी-मुरादाबाद जिले के स्थान-नाम: एक भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन

5- डा० (श्रीमती) यामिनी-स्थान-नामों का व्युत्पत्तिगत, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन

6- डा० बासुदेव शरण अग्रवाल - पाणिनि कालीन भारतवर्ष

7- डा० सरयूप्रसाद अग्रवाल - अवध के स्थान-नामों का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन

8- डा० उदयनारायण तिवारी - हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास

9- डा० रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल - बुन्देली का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन

10-डा० भोलानाथ तिवारी - हिन्दी भाषा

11-डा० धीरेन्द्र वर्मा - हिन्दी भाषा का इतिहास

12-डा० श्यामसुन्दर बादल - बुन्देली का फाग साहित्य

13-डा० मुरारीलाल उप्रेती - हिन्दी में प्रत्यय विचार

14-डा० भालचन्द्र तैलंग - छत्तीसगढ़ी, भतरी, हलवी बोलियों का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन

15- संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर - काशी नागरी प्रचारिणी सभा

16- पं० रामचन्द्र पाठक - आदर्श हिन्दी शब्द कोष

17- श्री रामचन्द्र वर्मा - हिन्दी मानक कोष

18- श्री मोनियर मिलियर्स - संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी

19- जार्ज स्टीवर्ट - नेम्स आन दी लैण्ड

20- यास्क प्रणीतम् निरुक्तम् (प्रथम संस्करण 1966)

21- नागरी प्रचारिणी पत्रिका (संवत 2018)

22- जनमत पत्रिका (बुन्देलखण्ड अंक वर्ष 1960)

23- मामुलिया पत्रिका (त्रैमासिकी-प्रकाशक, बुन्देलखण्ड साहित्य अकादमी, छतरपुर)

—— 0 ——

‹ख› स्थान-नामों के अध्ययन में सहायक प्रश्नावली :

तहसील - विकास खण्ड - गांव का नाम -

1- गांव की जनसंख्या लिखिये ?

2- गांव में किस जाति के लोग अधिक रहते हैं ?

3- गांव के बड़े जमीदार का नाम तथा जाति लिखें ।

4- क्या गांव के जमींदार गांव में रहते हैं ? यदि नहीं, तो कहां रहते हैं ?

5- क्या गांव में कोई मेला लगता है ? यदि हाँ, तो क्यों, कहां और कब तथा मेले का नाम लिखें ?

6- गांव किस कस्बे के पास है ? तथा दूरी लिखें एवं दिशा भी लिखें ?

7- क्या गांव में कोई पुराना मन्दिर/किला/इमारत है । यदि हाँ तो देवता/मूर्ति/व्यक्ति का नाम लिखें ?

8- क्या गांव में कोई पुराना कुआं/पोखर है ? यदि हाँ,तो नाम लिखें ?

9- क्या गांव में विद्यालय/डाकखाना है ? यदि हाँ, तो नाम लिखें ?

10-क्या गांव में कोई सुप्रसिद्ध पुरूष हुए हैं ? यदि हाँ, तो उनके बारे में जो कुछ जानते हों,लिखें

11-गांव के बारे में यदि कोई अन्य खास बात जानते हों, तो लिखें ?

12-गांव का नाम पड़ने का कारण लिखें ?

13-गांव में कौन-कौनसी मिट्टी पाई जाती हैं ? कृषक अधिकांश कौन सी फसल पैदा करते हैं ? अन्य उपजों के नाम लिखें ?

14- गांव में पाये जाने वाली मुख्य वनस्पति,वृक्ष एवं झाड़ी आदि के नाम लिखें ?

15- क्या गांव रियासत में था ? यदि हाँ, तो नाम लिखें ?

16- क्या गांव गहराई में हैं ? क्या गांव में पानी भर जाता है ?

17-क्या गांव के पास पहाड़ी या टीला है ? अथवा समतल मैदान में स्थित है ?

18- क्या गांव का उद्योग-धन्धा अथवा कोई वस्तु विशेष प्रसिद्ध हैं अथवा रही है ?

19- क्या गांव किसी अन्य स्थान से हुमस कर बसा है ?

20- क्या गांव को किसी अन्य गांव के व्यक्ति/व्यक्तियों ने बसाया है ?

हस्ताक्षर-ग्राम प्रधान / मुखिया

पता -

सेवा में,

श्री फूलसिंह

शोध छात्र {बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय}

द्वारा- कार्यालय, भूमि संरक्षण अधिकारी,
राठ {हमीरपुर}

------ 0 ------

(म) हमीरपुर जनपद के स्थान-नामों की तहसीलवार सूची :

हमीरपुर जनपद में कुल छह तहसीलें हैं - राठ, कुलपहाड़, चरखारी, महोबा, मौदहा एंव हमीरपुर । इन विभिन्न तहसीलों में स्थान-नामों की संख्या भिन्न-भिन्न पाई जाती है । तहसील राठ के अन्तर्गत 253, कुलपहाड़ में 248, चरखारी में 95, महोबा में 101, मौदहा में 196 तथा हमीरपुर में 186 स्थान-नाम हैं ।

सम्पूर्ण जनपद के स्थान-नामों की तहसीलवार सूची इस प्रकार है :-

तहसील राठ के स्थान - नाम

1- अकौना	2- अकौनी	3- अलीपुरा
4- अलक्छवाँ	5- अमरपुरा	6- अमगाँव
7- अमूँद	8- अटगाँव	9- अतरा
10- अतरौली	11- अतरौली राठ	12- आलमपुरा
13- आराजी बीबी खेरा	14- इकठौर	15 - इकठौरा
16- इछौरा	17- इन्दरपुरा	18- इँगुई
19- इस्लामपुर	20- इटैलिया बाजा	21- इटैलिया राजा
22- इटायल	23- इटौरा गंज	24- इटौरा राठ
25- उजनेह	26- उमन्नियाँ	27- उमरिया
28- उपरहकां	29- औड़ेरा	30- औंरा खेरा
31- औंता	32- अंगीठ	33- कस्वा खेरा
34- कोठा	35- कछवा कँलाँ	36 - कदौरा
37- कनैरा	38- करौंदी	39- करगवाँ
40- करहई	41- करपुरा	42- करियारी
43- कटेहरी	44- कादीपुरा	45 - कैमोखेर

46- कैथा
47- कैथी
48- केसर गंज
49- कुपरा
50- कुछेछा
51- कुल्हैंडा
52- कुल्हरिया
53- कुम्हरिया
54- कुआं खेरा
55- कुर्रा
56- कुसमा
57- खंदर्रा
58- खजुरी
59- खण्डौत
60- खेरा खेरी
61- खरेहटा बुजुर्ग
62- खरका
63- खेड़ाशिलाजीत
64- खिरिया
65- गहुली
66- गल्हिया
67- गढहर
68- गिरवर
69- गिरौला
70- गोहाण्ड
71- गोहानी पनवाड़ी
72- गोहानी राठ
73- गोविन्दपुरा
74- गुगरवारा
75- गुरसरा
76- गुड़क्वारा
77- घुरौली
78- घूघसी
79- चक अमरपुरा
80- चक बेहगांव
81- चण्डौत डाँडा
82- चण्डौत दरिया
83- चँदवारी डाँडा
84- चँदवारी दरिया
85- चिकासी
86- चिल्ली
87- चुल्ला
88 - चुरहा
89- चिरवा
90- छपकी
91- छिबौली
92- छिरावल
93- छेड़ी बैनी
94- जखेड़ी
95- जलालपुर
96- जमनगांव
97- जमखुरी
98- जमोड़ी डाँडा
99- जमोड़ी दरिया
100- जमरा
101- जराखर
102- जरिया
103- जिगनी
104- जिटकिरी डाँडा
105- जिटकिरी दरिया
106- झिन्नाबीरा
107- झिरमोली
108- टिकरिया
109- टिकरी परमाल
110- टीकुर
111- टौला खंगारन

112- टौला राठ
113- टौला रावत
114- टौरी
115- टुगॅरवारा
116- टूँका
117- डाँडा
118- डीहा
119- डिक्टौरा
120- तुलसीपुरा
121- तुरना
122- दादरी
123- देवखरी
124 - देवरा
125- दाँदौं
126- धमवां
127- धमना
128- धनौरी
129- धनौरा
130- धरऊपुर
131- धौहल बुजुर्ग
132- धौहल खुर्द
133- नदना
134- नन्दपुरा
135- नहदौरा
136- नौरंगा
137- निवलीबाँसा
138- निबौली
139- नौहाई
140- पचखुरा
141- पहाड़ी बीर
142- पहाड़ी गढ़ी
143- पहरा
144- पड़रा
145- परा
146- परछा
147- पतखुरी
148- पथनोड़ी
149- पवई
150- पुरैनी
151- बदनपुरा
152- बागीपुरा
153- बहपुर
154- बकरई
155- बण्डवां
156- बॅन्धौली
157- बॅगारा
158- बंजनी
159- बरा
160- बड़खेरा
161- बरुआ
162- बरदा
163- बरेल
164- बड़ेरा खालसा
165- बड़ेरा माफ (चमरबड़ेरा)
166- बरगदा
167- बरगवां
168- बरहरा
169- बड़ौरा खुर्द
170- बरौली खरका
171- बरौली राठ
172- बसरिया
173- बसेला
174- बौखर
175- बहगांव
176- बिलगांव
177- बैंदा डाँडा

178- बैंदा दरिया 179- बिगवाँ 180- बिहार
181- बीलगाँव 182- बीलपुर 183- बिलरख
184- बीरा 185- बिरहट 186- बिरवाही
187- बोहरा 188- बुढ़ी 189- भंदरखारा
190- भैसायें 191- भकरौली 192- भेड़ी डाँडा
193- भेड़ी दरिया 194- भीकमपुर 195- मचहरी
196- मारौल 197- मारौठ 198- महाराजपुर
199- महजौली 200- मझगवाँ 201- मलेहटा डाँडा
202- मलेहटा दरिया 203 - मलौहा माफ 204- ममना
205- मनकहरी 206- मनियांपुर 207- मढ़ा
208- मस्गवाँ 209- मवई 210- मुहम्मदपुर
211- मुसाई 212- मुस्करा खुर्द 213- रहँक
214- रहरका 215- राजा मऊ 216- रजमई
217- रकौरा 218- रामगढ़ 219- ररखेरा
220- रतौली 221- राठ दक्खिन 222- राठ पूरब
223- राठ उत्तर 224- रौरों 225- रावतपुर
226- रतुवा 227- रेहुटा 228- रिगवारा कलाँ
229- रिगवारा खुर्द 230- रिरूआबुर्जुग दरिया 231- रिरूवाबुर्जुग डाँडा
232- लीगाँ 233- लोधीपुरा 234- लुधौरा
235- सैदपुर 236- सैना 237- स्यावरी
238- सरसई 239- सरसेड़ा माफ 240- सदर

241- सरगांव
242- सरीला {रूरल}
243- सरीला
244- सिकरौधा
245- सिकरौधा खरका
246- सिकरौधा राठ
247- सिंगरावन
248- सिरसा
249- सजगुवाँ
250- सुकलारी
251- हरदुवा
252- हरसुण्डी
253- हसनपुर सेला ।

तहसील कुलपहाड़ के स्थान - नाम

1- अड़वारा
2- अतरपठा
3- अमानपुरा
4- अलीपुरा
5- अलीपुरा खुर्द
6- अहरौरा
7- अजनर
8- अकौना
9- अकौनी
10- अमरपुरा
11- अरघट मउ
12- आरी
13- इमिलिया
14- इन्दौरा
15- इटौरा बुजुर्ग
16- इटवां
17- इन्द्रहटा
18- उदयपुरा
19- उल्लदन
20- उमरई
21- कमालपुरा
22- कनैरा
23- कनकुआ
24- कारा
25- करहरा डाँग
26- करहरा खुर्द
27- कसारी
28- काशीपुरा
29- कर्रपहारिया
30- कुलपहाड़
31- कर्रीजदीद
32- कैथौरा
33- कौहारी
34- कोटरा
35- किल्हौवा
36- कोहनियां
37- कुनाटा
38- खँगर्रा
39- खेरा ननकारी
40- खेरा कलाँ
41- खिरिया खुर्द
42- खोनरिया
43- खेररिया
44- खमा
45- खिरिया जदीद
46- खिरिया कलाँ
47- खोई
48- गहलोंद

49- गड़ौरा	50- गाड़ौ	51- गरौंली
52- गौन गुढ़ा	53- गोबिन्दपुरा	54- गगौरा
55- गहरा	56- गंज	57- गुन्ड
58- गुढ़ा खास	59- घटेरा	60- घुड़वास मऊ
61- घिसलनी	62- चमर्रा	63- चन्दनहास
64- चपका	65- चारूआ	66- चौंका
67- चुरारी	68- चमौरा	69- छतरवारा
70- छाछरी	71- छतेसर	72- जगपुरा बुर्जुर्ग
73- जखा	74- जमाला	75- जगतपुर उर्फ गढ़िया
76- जगपुरा खुर्द	77- जैलवारा	78- जैतपुर
79- जटेवरा	80- टगरिया	81- टिकरिया
82- टिंगरा	83- टौला पाँतर	84- टुडर
85- टिकरिया जैतपुर	86- टिकरिया पनवाड़ी	87- ठठेवरा
88- तेईया	89- तैली पहाड़ी	90- तुर्रा मुहार
91- थबौरा	92- थुरट	93- दादरी
94- देवानपुरा	95- देवगाँव	96- दिदवारा
97- दिनई	98- दुलारा	99- धासी
100- धरवार	101- धवार	102- धवर्रा
103- नगारा घाट	104- नकरा	105- नटर्रा
106- नौगांव	107- नौका	108- नेकपुरा
109- नैपुरा	110- निबोरा	111- नगाराडाँग
112- ननौरा	113- नबवारा	114- पहाड़िया

184- मगरौल खुर्द
185- महुवा बाँध
186- मझगवां कला
187- मझगवां खुर्द
188- मवैया
189- मोहनपुरा
190- मुढारी
191- रैपुरा
192- रावतपुर कलां
193- रावतपुर खुर्द
194- रिवई
195- रिछा
196- रिछारा
197- रूपनौल
198- रूरीकलां
199- रूरी खुर्द
200- रगौली बुजुर्ग
201- रगौली खुर्द
202- रैपुरा कलां
203- रजपुरा
204- रामपुर नौआबाद
205- रामपुरा
206- रामपुरा
207- रावतपुर खालसा
208- रिखवाहो
209- लेटा
210- लखनियां
211- लाड़पुर
212- लौलारी
213- लिधौरा खुर्द
214- लिधौरा सोइम
215- लिलवां
216- लोधीपुरा
217- लौहारी
218- लड़पुरा
219- लखौरा
220- ललोनी
221- लमौरा
222- लेबा
223- शेरगढ़
224- सहर्रा
225- सिंगरपुरा
226- सलैया खालसा
227- साँथर
228- सन्तोषपुरा
229- सरगपुरा
230- सतारी
231- सतौरा
232- सौरा
233- सेला खालसा
234 - स्यौढी
235- स्योहार
236- सिकन्दरपुरा
237- सिलारपुरा
238- सिमरिया
239- सिरमौर
240- सौनकपुरा
241- सुंगारा
242- सगुनिया माफ
243- साँरगपुरा
244- सीगौन
245- स्यावन
246- सैंथवारा
247- सलइयांमाफ
248- विजयपुर ।

तहसील चरखारी के स्थान - नाम

1- अनघौरा 2- अथौन 3- अतरौली

4- अकठौहां 5- इमिलिया 6- इमली खेड़ा

7- ईटवां 8- उजनेड़ी 9- ऐंचाना

10- ककरा 11- कमाला 12- कमलखेड़ा

13- कनेरी 14- काकुन 15- कीरतपुरा

16- कोटरा 17- कुड़ार 18- कुम्हराई

19- कुरौरा बाजपेई 20- कुरौरा डाँग 21- कुसमरा

22- कुटिया 23- खिरिया बुजुर्ग 24- गढ़हारी

25-गरौठा 26- गौरहरी 27- गोपालपुरा

28- गोरखा 29- गुप्तामऊ 30- गुढ़ा

31- घुटई 32- घुटवई 33- चन्दौली

34- चरखारी 35- छानी खुर्द 36- छेदी मऊ

37- जाखी 38- जरौली 39- जरौला

40- जसवारी 41- जटौरा 42- जार्डिनगंज

43- टगरिया 44- टौला चहर्रुम 45- टौला सोइम

46- तिसौनी 47- दयालपुरा 48- दमदमा

49- नौसारा 50- निबवारी 51- निस्वारा

52- पड़रिया 53- पड़ौरा 54- पहरैथी

55- पंचमपुरा 56- पुछी 57- पुपवारा

58- फतेहपुर 59- बफरेथा 60- बेहारी

61- बलचौर 62- बम्हौरी बेलदारान 63- बमनैथा

64- बमरारा
65- बड़ेन
66- बारी
67- बरकैछा
68- बेरी खेरा
69- बिजलपुरा
70- भदवास
71- भटेवरा कलां
72- महाराजपुर
73- मझौल
74- मलखानपुर
75- मारकुई
76- मिल्टैनगंज
77- रगौल
78- रहुनियां
79- रैनपुर
80- रजौरा
81- रमपुरा कदीम
82- रौशनपुरा
83- लटौरा
84- लुहीपुरा
85- सबुआ
86- साल्ट
87- सलुआ
88- स्योहार
89- सिजौरा
90- सिंघन
91- सुदामापुरी
92- सुहजना
93- सखौरा
94- सूपा
95- स्वासा माफ ।

तहसील महोबा के स्थान - नाम

1- अमलाई
2- अतरार माफ
3- इमिलिया
4- उरवारा
5- उटिया
6- कबरई
7- कैमाहा
8- काली पहाड़ी
9- करहरा कलां
10- कुम्हड़ौरा माफ
11- खरका
12- खयोरइयां
13- गौहारी
14- ग्योंड़ी
15- गोपालपुर
16- गुगौरा
17- घुटवई
18- चक मरेला
19- चाँदो
20- चन्दपुरा
21- चितैइया
22- छानी कलां
23- छिकहरा
24- जुझार
25- झीर सहेवा
26- टीका मऊ
27- डहर्रा
28- झिगरिया
29- ढिकवाहा
30- तिन्दौली
31- थाना
32- दमौरा
33- दरहटमाफ

34- धुरइया	35- धारौन	36- नहदौरा माफ
37- नैगवाँ	38- नरवारा	39- नथपुरा
40- पचारा	41- पचपहरा	42- पहरा
43- पलका	44- परसहा	45- पसवारा
46- पवा	47- पिण्डारी	48- पिपरा माफ
49- पुरा	50- बरातोतियाँ	51- बबेरी
52-बधवा	53 - बल्कौरा	54- बम्हौरी गुसाइन
55- बम्हौरी काजी	56- बनियातलामोहन पुरा	57- बरा
58- बरात पहाड़ी	59- बारी	60- बरीपुरा
61- बसोरा	62- बीला दक्खिन	63- बीला उत्तर
64- बीजा नगर	65- बिलवई	66- बिलगी
67- बिलरही	68- भोज का पुरवा	69- भैंसता माफ
70- भण्डरा	71- भटेवरा	72- भटीपुरा
73- मकरवई	74- महोबा	75- मामना
76- मँझलवारा	77- मरेहटी	78- मवई
79- मिरतला	80- मोचीपुरा	81- मुडेहरा
82- मुरैनी	83- रहेलिया	84- रैवाड़ा
85- रजौनी	86- रतौली	87- लिलवाही
88- लोहरी	89- शाहपहाड़ी	90- शमशेरा फतेरा
91- सलारपुर	92- सेलामाफ	93- सिंचौरा
94- सिजरिया	95- सिजहरी	96- सिजवाहा
97- सिंधनपुर बधारी	98- श्रीनगर	99- सुकौरा
100- सुरहा	101- हरदुआ ।	

तहसील मौदहा के स्थान - नाम

1- अछरेला	2- अउईपुर	3- अकौना
4- अलरा	5- अरतरा	6- असुई
7- अतर्धर	8- इचौली	9- इमिलिया
10- इटवां	11- उमरी	12- उपरी
13- उरदना	14- ऐंझी	15- ओरा
16- कहरा	17- कपसा	18- कम्हरिया
19- करहिया	20- करगाँव	21- कैमाहा
22- कैमाहा बुजुर्ग	23- कन्धौली	24- किशुनपुर
25- किसवाही	26- कल्कुवाँ	27- कुनैठा
28- कुसमेला	29- खम्हरिया	30- खण्डेह
31- खड़ेही	32- खड़ेही लोधन	33- खन्ना
34- खरेला	35- खैर	36- खेरा
37- खेरी	38- खिरूही	39- गड़रिया खेरा
40- गहबरा	41- गहरौली	42- गलिहामउ
43- गढ़ा	44- गिधरास	45- गौरा
46- गुन्देला	47- गुरदहा	48- गुढ़ा
49- गसारी	50- घन्दुआ	51- छटकाना
52- चकबाँधुर	53- चकदहा	54- चकसौना
55- चमरखाना	56- चन्दौली अहीर	57- चाँदी कलां
58- चाँदी खुर्द	59- चन्दौरा	60- चिलेहटा जलालपुर
61- चिलहटा राठ	62- चिचारा	63- चिल्ली
64- छानी	65- छेदीबसाइक	66- छिमौली

67- छिरका
68- जल्ला
69- जिगनौड़ा
70- टगारी
71- टिकरी बुजुर्ग
72- टिकरी खुर्द
73- टोला खालसा
74- टोला माफ
75- डीहा
76- डिक्टौरा
77- तिलसारस
78- तिन्दोही किशनचन्द
79- तिन्दोहीकिशनलाल
80- तिन्दुवा
81- तमौरा
82- टीहर
83- दामूपुर
84- देवकली
85- दोहरी
86- धमना जलाल
87- धवारी
88- धनगवां
89- नेकपुरवा
90- नराइच
91- नौगवां
92- नौरंगा
93- न्यौरिया
94- नवादा
95- नूरपुर
96- पचपहरा
97- पधारी
98- पहाड़ी भिटारी
99- पारा
100- परछा
101- परछछ
102- पहरेवा
103- परखेरा
104- पसून
105- पाटनपुर
106- पिपरौंदा
107- पुन्नियां
108- पराजहान
109- फतेहपुर
110- बघरका
111- बहदीना अछपुर डाँडा
112- बहदीना अछपुर दरिया
113- बहिंगा
114- बहरेला
115- बैजामऊ
116- बजेहटा डाँडा
117- बजेहटा दरिया
118- बकचा
119- बम्हरौली
120- बाँधुर बुजुर्ग
121- बाँधुर खुर्द फारूखहुसैन
122- बाँधुरखुर्द महादेव
123- बन्नी
124- बिरवई
125- बरदा
126- बरैंडा
127- बरेठी
128- बरमौली
129- बसौठ
130- बसवारी
131- बेगहना
132- बेहरका
133- बिहूनी कलाँ
134- बिहूनी खुर्द
135- बीलपुर तरफ बिवांर

136- बीलपुर तरफ उमरी 137- बिंवार 138- बुढ़ारी

139- भुलसी 140- भदरवारा 141- भँवई

142- भदैन 143- भमैनी 144- भभौरा

145- भरवारी 146- भरसवां 147- भटरा

148- भटरी 149- भैंसमरी 150- भैंसा

151- भोचा 152- भुजपुर 153- भुलसी

154- मदारपुर 155- मिहारा 156- मकरांव

157- माँचा 158- मस्गांव 159- मौदहा (टाउनएरिया)

160- मस्गवाँ 161- मवइया 162- मवई खुर्द

163- मिहुना 164- मुस्करा 165- मुटनी

166- रगौल 167- रतौली 168- रतुवा

169- रनहारी 170- रैवन 171- रिवई सुनेचा

172- रूरी परा 173- लक्ष्मनपुर 174- लदार भवानी

175- लरौंद 176- लेबा 177- लोधामउ

178- लोधीपुर जलालपुर 179- लोधीपुर राठ 180- शाहपुरा

181- सैंधा 182- सतगवाँ 183- सायर

184- सेवनी 185- सिजनौड़ा 186- सिजवाही

187- सिलौली 188- सिंचौली 189- सिरसी कलां

190- सिरसी खुर्द 191- सिसोलर 192- सोहेला

183- सोरिया 194- हल्लापुर 195- हिमौली

196- हुसैना ।

तहसील हमीरपुर के स्थान - नाम

1- अब्दुल्लापुर	2- अमिरता	3- आराजी धनपुरा
4- आराजी खड़ेही जार	5- आराजी मुतनजियापथरी	6- आराजी सागर
7-आराजी सेनी धनपुरा	8- अतरइया	9- अतरार
10- इन्द्र पुरी	11- इंगौठा	12- इसौली
13- इटरा	14- उजनेड़ी	15- उमराहट
16- ककरउ	17- कलौली जार	18- कलौली तीर डाँडा
19- कलौलीतीर दरिया	20- कल्ला	21- कण्डौर दरिया
22- कण्डौर डाँडा	23- कुन्जौली	24- कनौटा डाँडा
25- कनौटा दरिया	26- करियापुर	27- कैथी
28- कीरतपुर	29- कुरारा	30- कोटपुर
31- कुछेछा डाँडा	32- कुछेछा दरिया	33- कुम्हरौपुर
34- कण्डौरा	35- कुआं खेरा	36- कुसौली
37- कुसमरा	38- कुतुबपुर	39- खड़ेही जार
40- खरेहटा	41- खरौंज	42- गहतौली
43- गौरी	44- गिमुहाँ डाँडा	45- गिमुहाँ दरिया
46- गुजरौड़ा	47- गुलाब गंज	48- चक अटौही
49- चक जमरेही तीर	50- चन्दौखी	51- चन्दौली जार
52- चन्दौली तीर	53- चन्दपुरवा बुजुर्ग	54- चन्दूपुर डाँडा
55- चन्दूपुर दरिया	56- छानी बुजुर्ग	57- छानी खुर्द
58- जखेला	59- जलाला	60- जमरेही तीर डांडा
61- जमरेही तीर दरिया	62- जल्ला	63- जमरेही अपर

64- झलोखर 65- टेढ़ा 66- टोडिनपुर
67- तिकोना हार 68- दमारी 69- दरियापुर
70- देवगांव 71- देवीगंज 72- धनपुरा
73- धुन्धपुर 74- नचौट 75- नदेहरा
76- नैथी डाँडा 77- नैथीदरिया 78- नारायनपुर
79- नरसरा 80- नजरपुर 81- निरही
82- पचखुरा बुजुर्ग 83- पचखुरा खुर्द 84- पधौली
85- पलरा 86- पन्धरी 87- पुरा
88- परौझी डाँडा 89- परौझी दरिया 90- परा रजपुरा
91- परसैनी 92- पतारा डाँडा 93- पतारा दरिया
94- पत्योरा डाँडा 95- पत्योरा दरिया 96- पौथिया बुजुर्ग
97- पौथिया खुर्द 98- बचरौली 99- बदनपुर
100- बबीना 101- बहरौली डाँडा 102- बहरौली दरिया
103- बैजे इस्लामपुर 104- बम्हनपुर 105- बण्डा
106- बाँक 107- बाँकी 108- बड़ा गांव
109- बरदहा सहजनाडाँडा 110- बरदहा सहजनादरिया 111- बरुआ
112- बैंदपुरी 113- बेरी 114- बिदोखरी मेदिनी
{विदोखर थौक मेदिनी} 115- विदोखरी पुरई {विदोखर थौक पुरा}
116- बिलहरी {बिलाड़ी} 117- बिलौटा 118- बिरखेरा
119- भैंसा पाली 120- भकौल 121- भमौरा
122- भटपुरा डाँडा 123- भटपुरा दरिया 124- भौली डाँडा
125- भौली दरिया 126- भौनिया {भंवौरिनियां} 127- भौरा डाँडा
128- भौरा दरिया 129- भिलवाँ डाँडा 130- भिलवाँ दरिया
131- भितरी 132- भारेड़ी 133- महमूदपुर

134- ममरेजपुर डाँडा
135- ममरेजपुर दरिया
136- मॉझूपुर डाँडा
137- मॉझूपुर दरिया
138- मनकी कलाँ
139- मनकी खुर्द
140- मौहार
141- मवई जार
142- मजरा कुण्डौरा डाँडा
143-मजरा कुण्डौरादरिया
144- मीरापुर डाँडा
145- मीरापुर दरिया
146- मिहुना
147- मिसरीपुर
148- मुड़ेरा
149- रगुवा
150- रघुवाघास
151- रमेड़ी डाँडा
152- रमेड़ी दरिया
153- रानीगंज
154- रिगना
155- रिठाली
156- रिठौरा ऊ डाँडा
157- रिठौरा दरिया
158- [illegible]
159- [illegible]
160- शादीपुर
161- शंकरपुर
162- शेखूपुर
163- सहूरापुर डाँडा
164- सहूरापुर दरिया
165- सौखर
166- सेवनी
167- सरसई
168- सिकरी
169- सिकरौढी डाँडा
170- सिकरोढी दरिया
171- सिमनौरी
172- सिमरा
173- सिन्दूरा डाँडा
174- सिन्दूरा दरिया
175- सुमेरपुर (रूरल)
176- सुमेरपुर (टाउनऐरिया)
177- सूरजपुर डाँडा
178- सूरजपुर दरिया
179- सुरौली बुजुर्ग डाँडा
180- सुरौली बुजुर्ग दरिया
181- सुरौली खुर्द डाँडा
182- सुरौली खुर्द दरिया
183- स्वासा बुजुर्ग
184- स्वासा खुर्द
185- हरौली
186- हमीरपुर ।

——— 0 ———